न
भय
बना
नेता
वा
विर

से र
के घ
देवा
वह
हो

लक्ष
णि
बा
दि
वि

आधी रात से सुबह तक

आधी रात से सुबह तक

[तानाशाही से लोकतान्त्रिक चेतना की ओर]

लक्ष्मीनारायण लाल

स्वीकार

राजनीति म कभी मेरी कोई दिलचस्पी नही थी। मैं तब हमेशा यह मानता रहा कि राजनीति की बुनियाद किसी न किसी रूप में हिंसा पर आधारित होती है। राजनीति का लक्ष्य ही है सत्ता प्राप्त करना। जहा सत्ता की भूख है वहा हिंसा अनिवार्य है। इसीलिए दाव-पेच राजनीति का एक अस्त्र है क्योंकि यह विरोधी को परास्त करने के लिए आवश्यक है।

पर दवमयोग से मेरे जीवन मे अचानक एक घटना घटी।

सन सत्तर की बात है। बिहार सर्वोदयी जयप्रकाश से नक्सलवादी युवको की रात के अधेरे म एक भेंट होती है। एक ओर अहिंसा का मूल्य दूसरी ओर हिंसा का। प्रश्न था— प्रश्न क्या चुनौती थी जन्म मरण की। बेतरह युद्ध, हत्या की राजनीति के लिए कृतसकल्प नक्सलवादी युवका से जयप्रकाश की यह शत थी कि यदि तुम लोग मुझे यह साबित कर दो कि शक्ति मनुष्य की नतिक शक्ति स नही बदूक की गोली से निकलती है तो मैं ही तुम्हे अपने-आपको भेंट चढा दूगा। पर हुआ उल्टा। हत्या की राजनीति पर नतिक शक्ति की विजय होती है। वे नक्सलवादी युवक जे० पी० के भक्त हो जात हैं। उस दिन मुझे पहली बार एक अद्भुत चीज मिली—राजनीति स आगे लोकनीति, जिसकी बुनियाद सत्ता नही आत्म समपण है। पहले स्वय को समर्पित फिर दूसरों के, लोक से प्राप्ति। यहा देकर ही पाया जाता है।

उस क्षण स मैं जयप्रकाश स आकृष्ट हुआ।

उनकी जीवनी लिखी।

पर २५ जून १९७५ की रात जिस तरह स हमारे देश—समाज पर आपात् स्थिति लागू की गई और जिस तरह एक प्रजातत्र, मेरी आखों के सामने तानाशाही के अधकार म कद कर लिया गया, मेरी आखें फटी की फटी रह गइ। जिस क्षण लोकनायक जयप्रकाश को गिरफ्तार कर जेल म

डाला गया मैं उसी क्षण राजनीति से न जाने क्या कैसे सहज ही जुड़ गया।

राजनीति यह है ?

राजनीति म से ही एक और लोकनीति निकलती है प्रजातत्र का सर्वोदय होना है और राजनीति म से ही ऐसी तानाशाही निकल सकती है। अचानक काली रात घिर सकती है। कसी भयकर है यह राजनीति ? कसी शक्ति है यह ?

इसमे जो जसा चाहेगा वसा नही लेकिन इसमे मिलकर जो जसी कीमत चुकाएगा वसा ही उसी अनुरूप यह फल देगा। यह पहली बार मुझे अनुभूत हुआ और इसे समझने म मेरे मित्र श्री नमिशरण मित्तल न मेरी मदद की।

आपात स्थिति म हम कई घटा बठ राजनीति की ही बातें करत वही जीते वहा मरत।

यह भी तो राजनीति है कि सज्जन लोग इससे दूर रह।

यह भी ता राजनीति है कि हम राज्य म रहत है पर राजनीति बुरी चीज है यही भाव हम दिया जाता है।

यह भी तो राजनीति है कि हम राजतत्र के सहारे जो चाह वही सत्य नही है मानव मूल्य नही है, कवल भय है आतक है। इसलिए मनुष्य को सुरक्षा चाहिए। सुरक्षा के लिए एक विश्वास चाहिए। विश्वास पदा ही होता है भय म।—मैं दूगा वह विश्वास ?

जो चाहूगा साबित कर दूगा।

—नही।

—तुम कहत रहो। प्रचार-प्रसार के इतने साधन है मर पास कि जो चाहूगा साबित कर दूगा कि यही है सत्य।

—नही।

—सत्य होता नही सत्य बनाया जाता है।

—नही।

य सवाद मेरे भीतर से उन्ही अधेरी रातो म तब फूटे थे।

पता नही कब मैं राजनीति से जुड गया। पता नही कब मैं राजनीति से टूट गया।

इसीका फल है यह— आधी रात से सुबह तक।

यह मैंने देखा है। यह मैंने नही लिखा, किन्ही अज्ञात हाथो ने मुझसे लिखवाया। यह मैंने भोगा है। यह मैंने कल्पना से नही केवल सच्चाइयो मे लिखा है। केवल सच्चाइयो मे सच्चाई का लिखना कितना विकट काम है, पहली बार अनुभूत हुआ।

छप हुए शब्द इतने खतरनाक हो सकते हैं। प्रचार प्रसार से निकले हुए शब्द कितने भयकर हो सकते है शब्दो की अनुपस्थिति इतनी बचैन कर सकती है—इतनी बडी यातना दे सकती है इसी दारुण अनुभूति ने मुझसे यह काम लिया।

सारा भूमिगत साहित्य हम कहा कैसे तैयार करते थे। कमे बाटते थे और छिपाकर रखते थे, वही तो थोडा कुछ साक्ष्य है उस महान संघर्ष का जो पूरे देश मे विशेषकर मध्यदेश (हिन्दी क्षेत्र और पजाब) मे लडा गया।

भूमिगत सामग्री जुटाने मे संबधी दीनानाथ मिश्र डा० हरदेव शर्मा अनुपम मिश्र ने मेरी मदद की।

श्री दीनानाथ जी से अनेक बातें समझने मे मुझे मदद मिली है।

तरुण क्रांति के संपादक और युवा मित्र कुमार प्रशात का कृतज्ञ हू जिनसे जेल और जेल के बाहर की दुनिया का जे० पी० और बिहार का एक गहरा एहसास मुझे उस अधकार मे मिलता रहा है।

मुख्यत बिहार के युवा छात्र-नेताओ उत्तरप्रदेश मध्यप्रदेश के युवा दोस्तो से मुझे अनेक सामग्रिया मिली हैं। अब तक मिलती जा रही हैं जिनका उपयोग मैं उत्तरोत्तर करता रहूगा।

पाडुलिपि के टकन मे पुराने सहयोगी श्री भीमसिंह नगी ने और इसके पाठन मे साथी प्रमोद शुक्ल ने सहायता की है। पत्नी आरती के सहयोग बिना यह काम कठिन था।

यह पुस्तक लिखने के पीछे मुख्य प्रेरणा यही थी कि भारतीय जीवन मे ऐसी काली रात फिर न आने पाए। पर यह कहना मात्र पर्याप्त नही है। यह भूलना नही है कि महात्मा गाधी ने कुर्बानी दी तो हमें स्वतत्रता

मिली। जयप्रकाश ने इतनी बडी शहादत दी तो हम प्रजातत्र मिला। कोई चीज बिना कीमत चुकाए नही मिलता। और प्रजातत्र ता एक ऐसी चीज है जिसके लिए हमे हर क्षण कुर्बानी देनी पड़ेगी। जिस क्षण जितना यह जहा रुका जहा टूटा वहा उतनी ही उसकी क्षति हुई।

जो काली रात आई थी वह रात बीत गई पर सुबह हो गई मुझे अभी ऐसा नही दिखाई देता। रात छिप गइ है और उसका अधकार रोग के कीटाणुओ की तरह हमारे घरो स्कूलो सडको इमारतो और हमारे व्यवहारो मे कही गहरे गरदन छुपाकर दुबककर बैठा है। हम उसे देखे। सुबह होती नही सुबह ले आनी पड़ती है। प्रकाश है जैसेकि अधकार है। आग जलानी पडती है अधकार के लिए कोई प्रयत्न नही करना पडता। अभाव का ही नाम अधकार है। पर जो है वही प्रकाश है।

चलो देखे।

नई दिल्ली
१८ ६ ७७

लक्ष्मीनारायण लाल

क्रम

आपात स्थिति के कारागार मे
डा० सत्यव्रत सिनहा
और सभी शहीदों के नाम

एक लम्बी शाम

—जे० पी० ।

बम्बई के जसलोक अस्पताल में जयप्रकाश ने मेरी ओर देखा। हम एक-दूसरे को एक क्षण देखते रह गए।

—जे० पी० !

—हां।

—कुछ पूछना चाहता हूं।

—क्या ?

—२५ जून '७५ रात को जब आप अचानक गांधी शांति प्रतिष्ठान नई दिल्ली के उस कमरे में गिरफ्तार किए गए तो आपको कैसा लगा ?

—मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। इसकी मुझे तनिक भी आशंका न थी। मैं इस तरह गिरफ्तार किया जाऊं इसकी कोई वजह न थी। ऐसा मैंने कुछ भी नहीं किया था। यद्यपि मैं कहा जरूर करता था, पिछले कितने दिनों से, कि श्रीमती इंदिरा गांधी डिक्टेटर हो सकती हैं, पर वह इस कदर आगे बढ़ सकती हैं ऐसी मुझे आशा न थी।

—यहां से बनाकर आप कहां ले जाए गए ?

—रात के लगभग तीन बजे अपने कमरे से कार में बिठाकर मुझे हरियाणा प्रदेश के सोहना नामक स्थान पर ले जाया गया। वहां मुझे एक बंगले (रेस्ट हाउस) में रखा गया।

—वहां पहुंचकर आपने क्या देखा ?

—सोहना पहुंचते ही मैंने देखा कि श्री मोरारजी भाई देसाई भी गिरफ्तार करके ले आए गए हैं। हम दोनों उसी बंगले में अलग-अलग कमरों में थे। उनसे मेरी मुलाकात नहीं होने दी गई। मैंने

पुलिस अधिकारी से, जिनके सरंक्षण में हम थे अनुरोध भी किया कि कम से कम भोजन के समय तो हम दोनों का मिलन दें परन्तु मेरी यह छोटी सी प्रार्थना भी अनसुनी कर दी गई।

—फिर क्या हुआ ?

—सोहना के बंगले में केवल तीन दिन मैं रहा। इसी बीच मेरा हृदय रोग कुछ उभर आया था। यह रोग मुझे पहले से था। परन्तु गिरफ्तारी के पहले तक मैं सामान्यतः स्वस्थ था। जब सोहना में सरकारी डाक्टरों ने मेरे स्वास्थ्य की परीक्षा की तो उन्हें मेरे हृदय में कुछ गड़बड़ी मालूम हुई। उनकी समझ में नहीं आया कि क्या करें। इसलिए २६ जून को दिल्ली स्थित आल इण्डिया इन्स्टीटयूट आफ मेडिकल साइंसेज में आवश्यक जांच और चिकित्सा के लिए वे मुझे ले गए। वहां मेरे कुछ पूर्व परिचित डाक्टर थे जैसे डा० सुजय बी० राय (अब स्वर्गीय) डा० एम० एल० भाटिया आदि, जिन्होंने पहले भी मेरी चिकित्सा की थी। उनकी देख रेख में दो दिन मुझे रखा गया और १ जुलाई की शाम को एयर फोर्स के विमान से मुझे चंडीगढ़ पहुंचा दिया गया। वहां मुझे पी० जी० आई० (पोस्ट-ग्रेजुएट इन्स्टीटयूट आफ मेडिकल एजुकेशन एण्ड रिसर्च) के अस्पताल में रखा गया। तब से रिहाई के दिन (१२ नवम्बर ७५) तक वहीं चंडीगढ़ में मैं नजरबंद रहा।

—कैसा था वह एकाकी कारावास ?

—चंडीगढ़ में बंदी जीवन की एक लम्बी कहानी है। अभी इतना ही कहना चाहता हूं कि नजरबंदी के साढ़े चार महीनों के दौरान मैं बिल्कुल अकेला ही रहा। यह अकेलापन ही मेरे लिए सबसे ज्यादा अखरने वाली बात थी। चंडीगढ़ के जिलाधिकारी अस्पताल के डाक्टर नर्स आदि अवश्य मुझसे मिलते थे परन्तु वे केवल मेरे स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ कर चले जाते थे। वहां कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जिससे मैं अपने मन की बात कह सकता। साथी का यह अभाव मुझे अंत तक खलता रहा। मैंने सरकार से अनुरोध भी किया कि मेरे साथ ऐसे किसी व्यक्ति को रहने दिया जाए जिससे मैं दो बातें कर सकूं अपने विचारों और भावनाओं का आदान प्रदान कर सकूं। देश की विभिन्न जेलों में हमारे आंदोलन के

हजारो साथी बद पडे थे। उनम से ही किसी एक को चडीगढ म मेरे साथ रखा जा सकता था। परन्तु सरकार ने एसा करना उचित नही समझा। इस दृष्टि स मेरे साथ इन्दिराजी की सरकार का व्यवहार विदेशी अंग्रेज़ी सरकार के व्यवहार से भी बुरा था। क्योकि सन' ४२ के आदोलन के सिलसिले म जब मैं (१९४३ म) गिरफ्तार होकर लाहौर म दाखिल हुआ तो पहल वहा भी कुछ महीनो तक मुझे बिल्कुल अकला ही रखा गया और मैं सरकार स साथी की माग करता रहा। अत म उस विदेशी सरकार न मेरी प्रार्थना सुनी और जब डा० राममनोहर लोहिया लाहौर किले म लाए गए तो हर दिन एक घटे तक उनम मिलने और बातचीत करने की इजाज़त मुझे मिली। लेकिन इस स्वदेशी सरकार का रवया तो अजीब रहा। हा कुछ दिनो के बाद वह इसके लिए तैयार हुई कि मैं चाहू तो अपने निजी सेवक गुलाब यादव को साथ रख सकता हू। परन्तु मुझे तो सेवक स अधिक साथी की ज़रूरत थी। इसके अलावा गुलाब भी कैदी बनकर ही मेरे साथ रह सकता था। यानी एक बार मेरे साथ रहने पर उसको फिर बाहर जाने की इजाज़त नही मिलती। यह मुझे मजूर नही था कि वह मेरे साथ बिना कसूर कैदी बनकर रहे। इस प्रकार आखिर तक मुझे अकेला ही रहना पडा और यही मेरे लिए सबसे बडी सज़ा थी।

—कैसी थी वह जगह जहा आप नज़रबद थे?

चडीगढ अस्पताल के जिस कमरे म मुझे नज़रबद रखा गया था वहा घूमने के लिए तग गलियारा (कारीडोर) था जिसके दोनो तरफ के कमरो म मर सशस्त्र पहरदार थे। हृदय का रोगी होन के कारण मैं खुली हवा म घूमना फिरना चाहता था। बहुत आग्रह करने पर करीब ढाई महीने के बाद १८ सितम्बर को मुख्य अस्पताल के ही अहाते म स्थित उसके अतिथि भवन म ले जाकर रखा गया जिसके सामने के मदान म मैं थोडा टहल फिर सकता था। परन्तु वहा मैं कुछ ही दिन रह पाया क्योकि अचानक एक दिन (२७ सितम्बर को) मेरे पेट म भयानक दद शुरु हुआ। वैसे दद का अनुभव मुझे जीवन मे पहले कभी नही हुआ था। डाक्टरो ने दवाए दी जिससे दद कम हो गया। परन्तु ८ अक्तूबर को और फिर अक्तूबर के ही आखिरी दिनों म वैसा ही दद शुरू हुआ। उसके कारणो की जाच

चिकित्सा के लिए मुझे ३१ अक्तूबर को फिर अस्पताल के उसी कमरे म ले जाया गया जहा मैं पहले था और रिहाइ के दिन तक वही रखा गया। १२ नवम्बर '७५ को उसी कमरे स अधमरा होकर मैं बाहर निकला।

—मोरारजी भाई

—जी।

—जब आप २५ जून की रात गिरफ्तार हुए तो आपको कसा लगा ?

—मुझे आश्चय नही हुआ। मुझे सन् चौहत्तर से ही यह आशका थी कि ऐसी कोई दुघटना जरूर होगी। इसीके नाते मैंने इस बीच दो बार अनशन किए थ ताकि यहा की जनता का नतिक बल और साहस मिले जिसके *आधार पर वह भविष्य म सघष और त्याग कर सके।*

—नानाजी देशमुख आपको कसे गिरफ्तार किया गया ?

—*क्यों ?*

—*क्याकि आप तो ऐसे पकड म आने वाल नही !*

—बिल्कुल। पच्चीस की रात मुझे किसीने फान पर कहा आप आज रात यहा (*दीनदयाल स्मारक भवन*) मत रहिए। गिरफ्तारिया हो रही है। मैं सीधे भागा पालम एयरपोट—श्री जयप्रकाश नारायण छब्बीस की सुबह हवाई जहाज से पटना जान को थे मैं उन्ह गिरफ्तार होने से बचा लू पर यहा पहुचते ही मुझे पता चला कि जे० पी० तो गिरफ्तार हो चुके। फिर तो चुपचाप मैं एयरपोट के बाथरूम म चला गया। वहा अपनी डायरी लोगो के पत खतरनाक कागजात सबको फाडकर फ्लश म डाल दिया और भेष बदलकर बाहर निकला।

—फिर कहा गए ?

—अडर ग्राउड (भूमिगत) हो गया। और डटकर काम करने लगा।

—पुलिस से कैसे बचते रहे ?

—वह कहानी लम्बी है और खतरनाक भी ।

—पकड़े कैसे गए ?

—सफदरजंग इंकलेव के एक घर में दिन के वक्त पुलिस से घिरकर पकड़ा गया। वह घर भी ऐसा था कि वहां से न कहीं कूदा जा सकता था न छलांग मारी जा सकती थी न भागा ही जा सकता था।

—पुलिस आपको आसानी से पहचान गई ?

—बिल्कुल नहीं। मेरी फोटो से मेरी शक्ल मेरा पहनावा, बिल्कुल भिन्न था।

—चन्द्रशेखर आप जेल में क्या करते रहे ?

—मेरा कारावास कठोर तनहाई का था मैं ही ऐसा अकेला कैदी था जिसे पत्र लिखने तक की इजाजत नहीं थी।

—फिर क्या करते थे एकाकी कारावास में ?

—अधिकतर बागबानी करता था, कुछ पन्ना लिखता भी था

तमाम चेहरे मेरे सामने एक-एक कर आते रहे और एक क्षण ऐसा लगा जैसे मेरा ही चेहरा मेरे सामने आकर मुझसे पूछने लगा

ऐसा क्यों ?

कैसे ?

वह शाम कैसी थी?

आजादी मिलते ही महात्मा गाधी ने कहा था—सत्ता और सत्याग्रह म विरोध है। सत्याग्रह से सत्ता नही ली जाती।

पर सत्याग्रही काग्रेस सत्ताधारी बनी। काग्रस आन्दोलनात्मक सगठन था। और आन्दोलनकारी तत्त्व सत्ता और सत्याग्रही तत्त्व इन दोना म जो काग्रेस शासन तत्र सत्ता स्वरूप विकसित हुआ उसीका लेखा जोखा है भारत का वतमान इतिहास। एक अजब करुण चित्र है उस माहौल का।

दिन है पर आसमान पर बादल छाए हुए हैं। आधी चलती है तो बादल फट जात है। पर मौसम का पता नही चलता।

सन सत्तर इकहत्तर तक आत-आते भारतीय स्वराज्य की दशा बिल्कुल बिगड गई और वह अपनी दुगति क साथ किसी अधेरी दिशा की ओर जाने लगी। जनता ने जिस उत्साह और विश्वास स इदिरा गाधी को अपना नेता चुना उसी काग्रेसी राज म जनता की उतनी ही दुर्गति शुरू हुई। जनता दु ख से कराहने लगी भूख महगाई भ्रष्टाचार ! जनता का कोई काम नही निकल सकता था बगर रिश्वत दिए। वह हर तरह के अन्याय के नीचे दबती चली जा रही थी। शिक्षा-सस्थाए भ्रष्ट हो रही थी। सारी युवा पीढी का भविष्य अधरे मे था। उसका जीवन नष्ट हो रहा था। जो शिक्षा युवको को मिल रही थी वह थी गुलामी की शिक्षा अपमानित जीवन बिताने की शिक्षा कलम घिसने की शिक्षा घुटन टेककर जीने की शिक्षा। और वसी शिक्षा पाकर भी नौकरी के लिए दर दर ठोकरें खाने की विवशता।

दिन पर दिन बेरोजगारी बढ रही थी। एक सवग्राही नतिक पतन की हवा चल पडी थी। जितने ही जोर से गरीबी हटाओ के नारे लगते उतनी ही गरीबी बढती जा रही थी। नीचे जितनी गरीबी बढ रही थी ऊपर उतनी ही अमीरी फूल फल रही थी। जिस कदर अमीरी नतिक पतन

की ओर जा रही थी उसी तरह गरीबी उदासी, निराशा और कायरता म डूबन लगी थी। सत्ता के मन म शासन-तत्र जितना ही निरकुश, अनुत्तर दायी और शक्तिलोलुप हो रहा था जनतत्र, लोक-चेतना की बुनियाद उतनी ही ढह रही थी।

बिहार राज्य के किसी दूर-दराज पिछड़े गाव के अचल म सर्वोदयी कायकर्ताओं की टोली के साथ एक सत्तर साल का क्रान्तिदर्शी जयप्रकाश, पैदल घूम रहा था और चारो ओर आख उठाकर देख रहा था

देश की परिस्थिति दिन पर दिन बिगडती जा रही है। आश्चय होता है कि लोग यह कसे सहन कर रहे हैं कैसे लोग अपना पट भर रहे हैं। जनता के दिलो म जो असन्तोष की जो विद्रोह की भावना है जो रोष है वह विस्फोट बनेगा। क्या जनता चुप रहेगी ? अब इस लोकतत्र के दायरे म जो सवधानिक तरीका है उसम जनता की समस्याओ का कोई उत्तर मिलता नही है। क्या करेगी जनता ? सरकार के वादे हैं लकिन वे वादे कस पूरे होगे ? कोल्हू के बल की तरह यही जो तत्र है यही जो व्यवस्था है लोकतत्र की इसीम हम घूमते रहेग तो जनता को भाग भी नही मिलेगी। अत इन बीमारियो की जड म जाना है।

बहुत सोचने-विचारने पर मैं इस नतीजे पर पहुचा हू कि कोई नेता कोई दल कोई व्यक्ति या समूह कही से आकर जनता का उद्धार नही कर सकता। जनता को अपनी लडाई स्वय लडनी होती है। जिस हद तक जनता स्वय अपनी सगठित शक्ति का निर्माण कर सकेगी उसी हद तक राज्य की दमन शक्ति को निरथक बनाकर शातिमय सघष द्वारा अपनी नियति बदल सकेगी। देश की कोटि-कोटि जनता को सकल्प लेना होगा कि रावी के तट पर जिस पूण स्वराज्य का सकल्प हमने लिया था उसकी पूर्ति के लिए अपनी पूरी शक्ति से काम करेंगे।

जिनके हाथ म इस समय देश की सत्ता है व्यवस्था और नीतियो के परिवतन की अनिवाय आवश्यकता के बारे मे उनका दृष्टिकोण और आच रण सवथा अनुचित और अविवेकी रहा है। व्यापार म, उद्योग मे और हर जगह भ्रष्टाचार अवश्य है, लकिन यह दूर नहीं हो सकता जब तक कि राजनीति म, शासन म और सत्ता म जो भ्रष्टाचार है उस पर

पाया जाए। अन्य शोषकों व भ्रष्टाचारियों को पोषण मिलता है—सत्ता के द्वारा, राजनीति के द्वारा। आज यह भ्रष्टाचार सीमा को पार कर गया है। जवाहरलालजी के जमाने में भ्रष्टाचार नहीं था क्या? जरूर था। लेकिन इन्दिराजी के जमाने में जितना यह रोग बढ़ा है उतना 'इमिने' यह कभी नहीं था। जनता की रोटी इस भ्रष्टाचार के सवाल से जुड़ी हुई है। अरबों रुपया देश का न जाने कहाँ गया, किसके खीसे में चला गया? जनता के पास नहीं पहुँचा।

केन्द्र सरकार जन भावनाओं को सुनती ही नहीं। आज यह संघर्ष भारत की जनता और प्रधानमंत्री के बीच है और यह तब तक चालू रहेगा जब तक जनता के हाथ में सत्ता की लगाम न आ जाए। जनता को पावर को कंट्रोल करना होगा, टेम' करना होगा। पावर के ऊपर सत्ता के ऊपर शक्ति के ऊपर चाहे वह धन की शक्ति हो चाहे राज्य की शक्ति हो, उस शक्ति के ऊपर काबू रहे अंकुश रहे जनता का, जयप्रकाश नारायण का नहीं, जनता का रहे छात्रों का रहे युवकों का रहे।

इसके लिए लाखों-लाखों लोगों को दिल्ली आकर संसद का घेराव करना होगा। संसद से कहना होगा कि देश की हाइएस्ट कमाण्ड दिल्ली में बैठी सरकार नहीं जनता है। जिसको जनता चाहती नहीं है वह कुर्सी पर नहीं रहेगा। तन्त्र के ऊपर लोक की लगाम रहे, तभी सच्चा लोकतन्त्र बनेगा।

हवा चली

सत्ता किसे प्राप्त की जा सकती है और यह किस शक्ति से चलाई जा सकती है इसे तब गांधी ने इतने खुले शब्दों में नहीं बताया था। अब जे० पी० ने कहा—क्रांति लोकशक्ति द्वारा होती है उसे पूर्णतः अहिंसक होना पड़ेगा। क्रांति घटना नहीं एक प्रक्रिया है। क्रांति की प्रक्रिया में भी परिवर्तन लाना होगा। उसमें पुराने समाज को बदलना और नये का बनना—दोनों साथ-साथ और कदम ब कदम होते हैं।

यही है बिहार आंदोलन की भावनात्मक पृष्ठभूमि।

और उन गांवों में घूमते घूमते सच्चाई की परतें एक के बाद एक

उतरती चली जा रही थी। मुसहरी या मिथिला के नक्सलवाद की जड म माओवाद नहीं था। यहा के नक्सलवाद की जड मे भ्रष्ट चुनाव क जहर, जात-पात स पनपी प्रतिहिसाए सरकारी तन्त्र के झूठ, अत्याचार, सामाजिक अन्याय, शोषण और मुकदमबाजिया थी। इस अचल म दजनों जवान फरारी जीवन बिता रहे हैं। अनगिनत युवक वर्षों से जेल म सड रह हैं और न जाने कितने लोग पुलिस और सरकारी व्यवस्था के झूठे मुकदमा म फसे है।

जे० पी० के आसपास वे सारे युवक आ रह थे जिन्ह अब तक हिंसा मे विश्वास था। दूर खडे व युवक अपलक देखने लग ये जिन्ह राजनीतिक दलो और नताओ से अब तक घणा हो चुकी थी। उनके मानस म कोई सपना उभरन लगा। सी० पी० एम० जनसघ, समाजवादी पार्टिया, शोषित दल क लाग पुरानी काग्रेस के सदस्य, खादी ग्रामोद्योग और सर्वोदय के कायकर्ता जो लोकधारा स हटकर केवल अपन-अपन दल क हितो और सन्दर्भो म ही सोचने के लिए विवश थे वे एक नयी सच्चाई क आमने-सामन खडे थे। सभी क्रातियों म केन्द्रीय प्रश्न सत्ता का ही होता है और सभी क्रातियो का आयोजन जनता के लिए लोक क लिए सत्ता प्राप्त करन के नाम पर किया जाता है तथापि हमेशा क्राति करने वाला म स एक मुट्ठीभर लोगो द्वारा सत्ता हडप ली जाती ह, जो सबसे ज्यादा निमम होत हैं। और एसा होना अनिवाय है क्योकि उनका मान्यतानुसार सत्ता बदूक की नली स निकलती है। प्रजातन्त्र के नाम पर भ्रष्ट चुनाव पद्धति भी वही बदूक है जो चुनाव से पहले ही काले पसा और गुडा द्वारा लुटवाकर हथिया ली जाती है। और यह बदूक जन या लोक के हाथ म नहीं बल्कि हिंसा के उस सगठित तन्त्र के हाथ म रहती है जो हर सफल क्राति और अब केवल चुनाव क्राति म से उसकी पार्टी, सेना या उसक दल के रूप मे पदा होती है।

तो हिंसा और तन्त्र से भी ऊपर हर मनुष्य की अपनी एक अस्मिता है। खाली हाथ भी मनुष्य अन्याय और झूठ का विरोध कर सकता है। इस नय विश्वास की अभिव्यक्ति, मिथिला की भूमि से चलकर छोटा नागपुर का पठार पार कर गगा की तराई से होकर बिहार के

पहुची जो १८ मार्च १९७४ को सुबह दस बजे पटना की असेम्बली को घेर लेते हैं—शुद्ध सत्याग्रही भाव से। सारे युवक छात्र स्वयं अपने नेता थे। बारह मागें थीं आठ शिक्षा सबधी और चार सार्वजनिक—भ्रष्टाचार महगाई, बेकारी और शिक्षा में आमूल परिवर्तन से सम्बन्धित। राज्यपाल विधानसभा में तब तक भाषण न करें जब तक ये मागें पूरी न हों। उधर दिन के ठीक साढे ग्यारह बजे पटना शहर में आग लगा दी जाती है। सचलाइट और सुजाता जलने लगते हैं दूकानें लूटी जाती हैं। शासन जैसे खत्म हो जाता है। यह सब किया गया छात्र और युवक आन्दोलन को बदनाम करने और उसे हिंसक रूप देने के लिए। तीन बजे के बाद पुलिस की फायरिंग शुरू होती है और शाम होते होते पटना शहर में कर्फ्यू लग जाता है।

८ अप्रल को ज० पी० के नेतृत्व में पटना में हजारों सत्याग्रहियों का मौन जुलूस निकलता है। सभी के मुह पर केसरिया पट्टियां सभी के दोनों हाथ कमर के पीछे पूरा जुलूस मौन। जो कुछ कहना है वह हवा में खिंच गया है—हमारे हृदय क्षुब्ध है और जबान पर ताला लगा हुआ है। हमला चाहे जैसा हो हाथ हमारा नहीं उठेगा। महगाई बेकारी भ्रष्टाचार सत्ता ही है जिम्मेदार। लाठी गोली हिंसा, लूट किसीको इसकी मिल न छूट।

पटना अग्निकाड से गया गोलीकाड उसके बाद तीन चार पाच अक्तूबर का सपूर्ण बिहार बद होता है। इस बीच सारा जेलें सत्याग्रहियों से भर दी जाती है।

लोकनायक जयप्रकाश। जयप्रकाश जो बिहार की धरती पर हल जोतते रहे हैं। वह तो अभी कल तक सर्वोदयी जयप्रकाश थे यह लोकनायक का विशेषण किसने कब दे दिया? छात्र सघर्ष और युवा विद्रोह से जो लोक-चेतना फूटी उसका नायकत्व बरबस जयप्रकाश को मिला।

क्यो? जयप्रकाश को ही क्या?

मिथिला में उस अकालग्रस्त सूखी धरती पर जनक को ही क्यों हल चलाने के लिए दिया गया? क्योंकि राजा जनक राजा जनक थे पर वह विदेह भी थे। वह सब कुछ थे पर कुछ भी नहीं थे।

एक मनारजक कथा है। शायद ऋषि का नाम याज्ञवल्क्य था। वह सपूण चिताओं मे मुक्ति का रहस्य तलाश रह थे। किसीने कहा—भाइ राजा जनक क पास जाआ। जरूर कोई न कोई उपाय बता देंगे। सा ऋषि गए राजा जनक के पास। बाल—ह विदेह मैं चितामुक्त होना चाहता हू। इसका काई उपाय बताइए। विदह न कहा—इसम क्या बात है आइए मर साथ। दोनो चल पडे। रास्त म एक सूखा पड मिला। विदह न कहा—महाराज दोना हाथो स इस पड को मजबूती स बाध लो। पकड ला। ऋषि न उस अपनी बाहो म भर लिया। तब राजा जनक ने कहा—ऋषि, अब आना दो कि यह पड आपका छोड दे। ऋषि बाल—महाराज यह ठूठा पड किसीको कैसे आना मान सकता है? तो? फिर आप कस इस पड स अलग होगे? ऋषि न कहा—इसम क्या है मैं खुद इस छोड देता हू। तो छोड दो। ऋषि न छोड दिया।

विदह चुप खडे थे। ऋषि अवाक देखते रह गए। इतनी सरल सीधी बात! पड ने मुझे नही पकडा था मैंने पड को पकड रखा था।

कुछ ऐसे ही थ जयप्रकाश। विदह जस। सब कुछ कर देना, करत रहना पर कुछ नही बाधना लना। चाह साम्यवादी, मार्क्सिस्ट जे० पी० हा चाहे काग्रेस सोशलिस्ट क सचालक जयप्रकाश हा चाहे समाजवादी फिर सर्वोदयी जयप्रकाश नारायण हा देना, केवल दना, बाधना लेना कुछ नहा। तभी बिहार के उन छात्रा और युवका न बहत्तर वष क जिस वद्ध का अपना नायक ही नहा लाकनायक बनाया, उसम कोई न कोइ बात तो थी।

यह बात वही थी—अपार हिम्मत त्याग निमल सच्चाई इमानदारी और अकलुष चरित्र की बात जा आसानी से समझ म नही आती। अक्सर जा खीझ तक उत्पन्न कर जाती है। यह कसा विचित्र आदमी है! कभी लोकप्रिय व्यवहार नहा करता चाह वह कभी शेख अब्दुल्ला की रिहाइ या नागालैड की स्वतत्रता की बात हा या चीन का आक्रमण, पाकिस्तान और बगला दश का प्रश्न हा। दुनिया क किसी भी कान म जहा भी मानव मुक्ति और न्याय का सवाल पैदा हुआ वहा जयप्रकाश की मौजूद।

दिल्ली मार्च

सम्पूर्ण बिहार बंद के बाद घटनाएं बहुत तेजी से घटने लगीं। दिल्ली में ६ मार्च का वह अभूतपूर्व जुलूस, वह लांग मार्च और बोट क्लब मैदान में जे० पी० का वह विशालतम जन समूह के सामने भाषण—यह पूरी एक घटना ऐतिहासिक थी। दिल्ली ने शायद ही पहले इतना बड़ा जन समूह देखा हो। इतनी बाधाओं के बावजूद जबकि बसों के परमिट रद्द कर दिए गए, लोग दिल्ली की सीमाओं पर रोक लिए गए। इस जन समुदाय को देखकर सत्ताधारियों को अपनी आंखें खोल लेनी चाहिए। जनता ने तय किया है कि सत्ताधारी अगर उनकी बात पर ध्यान नहीं देंगे तो उनको सुनने के लिए मजबूर किया जाएगा। हम यह काम शांति से करेंगे और गांधीजी के रास्ते से नहीं हटेंगे। लगभग एक साल से चल रहे इस शांति पूर्ण आंदोलन को इसलिए हिंसक बताया जा रहा है ताकि उसके बहाने तानाशाही थोपी जा सके। सरकार खुद हिंसा भड़काना चाहती है। हिंसा से ही मांगें पूरी की जाती हैं। यह परंपरा नेहरूजी ने चलाई थी। आंध्र के नागा की अलग प्रदेश की मांग तभी मानी गई जब रामलु उपवास करके मर गए और लगभग एक करोड़ की रेल सम्पत्ति नष्ट हुई। बिहार में लोग सभी शांतिपूर्ण तरीकों से बता चुके हैं कि उन्हें यह सरकार और विधानसभा नहीं चाहिए लेकिन उनकी सुनवाई नहीं होती। प्रधानमंत्री को अगर बिहार की जन मांगों के बारे में कोई भी शक हो तो वे जनमत संग्रह करवा लें। हमारी चुनौती है कि ६० ६५ प्रतिशत मत विधानसभा को भंग करने के पक्ष में पड़ेंगे। लोग शांति को नहीं छोड़ें। अगर केन्द्रीय सरकार बिहार की भ्रष्ट सरकार को बचाती रहेगी तो हम केन्द्रीय सरकार का भी त्यागपत्र मांगना पड़ेगा। १८ मार्च को फिर पटना में प्रदर्शन होगा और सरकार और विधायकों से इस्तीफे मांगे जाएंगे। १६ से २६ मार्च तक बिहार के सभी चुनाव क्षेत्रों में सभाएं और प्रदर्शन होंगे। इसके अतिरिक्त आप अपने-अपने राज्यों में लौटकर ७ अप्रैल तक संकटकालीन स्थिति, जो पहले से चली आ रही है उसे हटाने की मांग को लेकर प्रदर्शन करें। लोकतंत्र की रक्षा के लिए संकटकालीन स्थिति हटाना जरूरी है। जे० पी०

न कहा—मुझ पर पुलिस और सेना को भडकाने का आरोप लगाया जा रहा है। अगर यह सही है तो वे मुझे कोर्ट म क्यो नही ले जाते ? आज जो सघर्ष चल रहा है वह सेना और पुलिस के लोगो का भी सघर्ष है। उनके भी बच्चो का भविष्य इस सघर्ष से जुडा हुआ है।

हम आज घोषणा करते हैं कि अब जो लोक कहेगा वही होगा। लोकतन्त्र के विरुद्ध मैं नही प्रधान मन्त्री हैं। पर हम सब यह नही चलने देंगे हमने कसम खाई हैं। इस प्रदर्शन के बाद यह आन्दोलन सारे देश म फैलने वाला है।

बिहार बद भारतीय प्रजातन्त्र का ही नही, ससार की प्रजातान्त्रिक परम्परा का द्वितीय प्रदर्शन था। एक प्रदेश की सम्पूर्ण जनता ने एक स्वर और सकल्प स बिहार की सरकार (आज उस सरकार कहना अपने आपम विडम्बना है) और के द्र सरकार की बिहार नीति के प्रति अविश्वास और विरोध प्रकट किया। परन्तु इतने बडे जन प्रदर्शन का असर वतमान शासको पर नही पडा। शासक दल ने अपने ससदीय बहुमत के आधार पर एक ओर जनता की भावनाओ को ठुकरा दिया दूसरी ओर तानाशाही तरीको से जनान्दोलन को कुचलने का रास्ता अपनाया। ऐसी स्थिति म आदोलन के सूत्रधार जयप्रकाशजी के सामने दो ही विकल्प थे। या तो इस आन्दोलन को अधिक तीव्र किया जाता या जन सघर्ष समितियो के माध्यम से समानान्तर सरकार का कार्यक्रम चलाया जाता। परन्तु शासक दल इस बात के लिए तुला हुआ था कि आदोलन को हिंसक तरीको से कुचला जाए और हर कोशिश म आदोलन को हिंसक बनाया जाए जिससे दमन चक्र को क्रूरता के साथ चलाने का मौका मिल सके। इसके दो ही परिणाम हो सकते थे कि हिंसक दमन के सामने जनता टूट जाती अथवा लगभग गृहयुद्ध की स्थिति आ जाती। ये दोनो स्थितिया देश और समाज के व्यापक हित के विरुद्ध थी।

दूसरा विकल्प वही था जो जे० पी० ने स्वीकार किया है। उन्होंने जनान्दोलन को व्यापक और गहरे स्तर पर फैलाने के लिए लम्बे समय की योजना बनाई और साथ ही इन्दिरा गांधी की इस चुनौती को भी उन्होंने स्वीकार किया कि आन्दोलन के पक्ष म जनता है इसका निर्णय चुनाव में

ही होगा। अब बिहार सरकार मात्र का सवाल नही रह गया कद्र की सरकार शासक दल और उसकी नता इन्दिरा गाधी का एकसाथ चुनौती देना अनिवाय हो गया। सिद्धात रूप म जे० पी० का स्पष्ट दृष्टिकोण है कि उनका आन्दोलन भ्रष्टाचार महगाई, बेरोजगारी और निकम्मी शिक्षा के विरुद्ध है। *यदि शासक दल भी उनके आदोलन म साथ हो जाता है तो* उसका भी सहयोग वाछित है। अगर यह दृष्टि शासक दल का मिल सकती तो देश म सामाजिक क्रांति का चक्र-प्रवतन बिना सघष के हो सकता था। पर सिद्धात रूप म यह ठीक होकर भी व्यवहार म ऐसा सभव नही है। शासक दल ही नही प्रतिपक्ष के व सभी दल और नेता जो राजनीति क नाता और गद्दी परिवतन के खेल म रुचि रखते है, कभी सम्पूण सामाजिक *क्रांति के पक्षधर नही हो सकते उसके औज़ार नहा बन सकते।* शासक दल ने तो पिछले चार पाच वर्षों म शक्ति *को अपने तक केद्रित रखने के* तरह-तरह के दाव पच खेले है। इन्दिरा गाधी के व्यक्तित्व को इसी क्रम म इतना शक्तिशाली बना लिया गया है कि वह मनमाने ढग क मुख्य मत्रियो के कान पकडकर उठाती-बैठाती है। और यह उनका और उनके दल का प्रजातत्र है।

अत इस स्थिति *म शासक दल को ज० पी० के आदोलन के प्रति वही* प्रतिक्रिया हुई है जो होनी चाहिए। अत जे० पी० को स्वत शासक दल और उसके नेताओ ने विवश कर दिया है कि व भ्रष्टचार तस्कर व्यापार चोरबाजारी आदि की सरक्षक सरकार से सीधे टक्कर म आ जाए। अत ज० पी० ने चुनाव की चुनौती क साथ अपने आदोलन का केन्द्र दिल्ली को बनाया। यह स्वाभाविक है क्योकि यदि इदिरा की सरकार से टक्कर लना *है तो आदोलन का केन्द्र दिल्ली ही होगा। उन्होने ६ माच को दिल्ली जाने* का आह्वान इसी दृष्टि स किया था। और इधर इसी दृष्टि स जे० पी० न सक्डो जन सभाए सम्बोधित की।

६ माच के दिल्ली माच को पुन अभूतपूव सफलता मिली। इस बात को उन अखबारो न भी दबी जबान से स्वीकार किया है जो अपनी सरकार-भक्ति के लिए प्रसिद्ध है। झूठ बोलकर गलत और मनगढन्त आरोपल गा-कर मन बहलाया जा सकता है। पर *शासक दल इस सत्य को छिपा नही*

सकता। यह अवश्य है कि ज्या ज्या शासक दल न जे० पी० स सघप लन की स्पष्ट नाति अपनाई है जे० पी० के आदोलन के साथ प्रतिपक्ष जुडता गया है। जब कहा जाता है कि प्रतिपक्ष क दन जे० पी० का इस्तमाल करना चाहत ह और इस प्रकार जनमत का समथन पाकर शक्ति म आना चाहत ह। एक तो जे० पी० तथा उनके साथ वे सार लाग जा इस आदोलन के साथ राजनीतिक दला स अलग रहकर जुडे हुए हैं और शक्ति की राजनीति के विरुद्ध लोकशक्ति पर विश्वास रखने वाले है इन (जो भी हो) क शासन को भी जन शक्ति के विरद्ध नही चलन देंगे। और यह तथा इन दला और उनके नताआ का साफ दिखाई दना चाहिए कि गद्दिया की राजनीति अब जन शक्ति क सामन चलने वाली नही है, और यदि लोकशक्ति को खत्म करक यह चलने वाला है तो इस दश म तानाशाही को कोई रोक नही सकता।

बारह जून से पच्चीस जून तक

इस व्यापक सघप और उस बडे आदोलन क बीच कही एक किनार एक नन्हा सी घटना हो रही थी। इलाहाबाद हाइकाट म प्रधान मत्री इन्दिरा गाधी जो रायबरली चुनाव-क्षेत्र म चुनी गई थी, क खिलाफ राजनारायण द्वारा चुनाव याचिका लडी जा रही थी।

यू ता इस लडाई का सिलसिला काफी पुराना था। काग्रेस बनाम सोशलिस्ट नहरू बनाम डा० लाहिया, पश्चिम बनाम पूरब गार बनाम काल वगरह-वगैरह। पर यह इन्दिरा राजनारायण याचिका प्रसग धीरे धीरे महाभारत का रूप धारण कर लगा और अन्त म इतना विस्फोटक हो जाएगा भला किसका पता था? दाढी बढाए सिर पर हरा कपडा बाधे हाथ म छडी घुमाते हुए बिल्कुल बनारसी अदाज म राजनारायण का चाह किया और न यह गाते हुए—सिर बाधे कफनिया हो शहीदो की टोली निकली—न सुना हो पर बनारस की गलियों म और दिल्ली के चौराहा पर राजनारायण का यह बनारसी अन्दाज बहुता का सुनाई पडा—राजा, काट द सहासी गुरु अब की मामिला गजब्बा हुई गजब्बा।

सो सचमुच गजब। १२ जून, १९७५ को इलाहाबाद

न्यायाधीश जगमोहनलाल सिन्हा ने श्रीमती इन्दिरा गांधी के चुनाव को अवैध घोषित कर दिया।

इलाहाबाद के इस फैसले ने एक ओर राष्ट्रीय राजनीतिक जीवन की कमज़ोरियों, खामियों और विरोधाभासों को उजागर किया तो दूसरी ओर गैर साम्यवादी प्रतिपक्ष को एक-दूसरे से और नज़दीक आने और चुनौतियों को कमर कसकर सामना करने की अतिरिक्त प्रेरणा दी। इसका प्रमाण नई दिल्ली में २१ से २५ जून के बीच मिला जब जनता मोर्चा के घटकों और अकाली दल की कार्यकारिणी की मिली-जुली बैठक हुई।

यह बैठक अभूतपूर्व थी।

इतने विभिन्न दलों की कार्यकारिणी के सदस्य एक मंच पर बैठकर विचार विमर्श करें, एक समान रणनीति की, एक कार्यक्रम की बात करें, ऐसा पहले कभी नहीं हुआ।

पर यह अचानक नहीं हुआ। प्रतिपक्षियों को एक दूसरे के नज़दीक आने की जरूरत १९७१ के आसपास ही महसूस होने लगी थी। गुजरात में १९७५ के शुरू में जनता मोर्चा के निर्माण से इसकी शक्ति और क्षमता का भी परीक्षण हो चुका था।

एक नेतृत्व, एक कार्यक्रम और अनुशासन, ये शब्द थे गुजरात के जनता मोर्चा के मुख्य मंत्री बाबूभाई पटेल के।

२३ जून को आखिरकार जब जे० पी० पटना से दिल्ली पहुंचे और गांधी शांति प्रतिष्ठान की अतिथिशाला में ठहरे, तो लगा कहीं भूल हो रही है। मामला कुछ आगे पीछे हो रहा है।

२२ जून को दिल्ली के रामलीला मैदान में एक विशाल सभा हुई जिसे जे० पी० संबोधित करने वाले थे। मगर जिस विमान में वह दोपहर में कलकत्ता से दिल्ली पहुंचने वाले थे, उसकी उड़ान 'तकनीकी' कारणों से रद्द कर दी गई। इसलिए जनता मोर्चे के नेताओं ने ही उसे संबोधित किया। सभा में मोरारजी भाई ने एलान किया कि पांच दलीय मोर्चा श्रीमती गांधी से इलाहाबाद का फैसला मनवाने के लिए शांतिपूर्ण सत्याग्रह का आयोजन करेगा।

मोरारजी भाई ने कहा— करो या मरो मौजूदा सरकार से देश का खतरा है।'

राजनारायण बोले— अदालत के फसले के आधार को 'तकनीकी' बताना जनता की आखो मे धूल झोकना है।'

लालकृष्ण आडवानी का कहना था— गुजरात म जनता न काग्रेस को ठुकरा दिया और अदालत न श्रीमती गाधी को भ्रष्टाचार का दोषी करार दिया।

मधु लिमय ने पूछा— इदिराजी के बिना किसका काम नहीं चलेगा? मुनाफाखोरो और देश का शोषण करने वालो का काम नही चलेगा।

इस सभा के बारे म एक घटना और भी याद रखनी होगी। प्रतिपक्षियो ने पहले २२ जून को विराट प्रदशन का एलान किया था जिसके जवाब म काग्रस ने २० जून को ही एक विराट सभा आयोजित कर डाली। इधर जयप्रकाशजी न, जो तब तक अपने-आपको मुख्यत बिहार तक ही सीमित रखन की घोषणा कर चुके थे व्यस्तता के कारण दिल्ली म २२ जून की सभा सबोधित करने से इनकार कर दिया था, पर बाद म वह काफी आग्रह के बाद दिल्ली आने को राजी हुए।

सहसा उत्प्रेरक का प्रवेश

भारतीय मच पर जिस महाभारत नाटक का पदा १२ जून को इलाहाबाद म उठा १३ जून को उसी नाटक का दूसरा पदा नई दिल्ली मे उठा। यद्यपि इलाहाबाद हाईकोट ने श्रीमती गाधी को सुप्रीम कोट म अपील करने की सुविधा प्रदान की थी पर प्रतिपक्ष को सुप्रीम कोट के फमन के इतजार तक का सब्र नही था। उन्होने एकसाथ प्रधान मत्री के त्यागपत्र की माग को लेकर १३ जून को राष्ट्रपति भवन के बाहर धरना दिया। १५ जून को प्रधान मत्री के समथन म काग्रेस-कम्युनिस्ट दलो के प्रदशन हुए। उन दिनो दिल्ली की हवा एसी थी कि जस कोई अराजक शक्ति हागी। दोनों तरफ स एस भयानक दबाव कि अचानक कुछ भी टट सकता था। चारो ओर आधी का शोर था। हर तरफ तूफान आने स पहले का सन्नाटा था।

२० जून को ही देशभर के सारे मुख्य मंत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी के पास आ चुके थे। सारा कांग्रेस हाई कमान इन्दिराजी के निवास स्थान १ सफदरजग रोड पर आ घिरा था।

वह २१ जून की सुबह थी। दिन के दस बजे से ही तेज गर्म हवा चलने लगी थी। पर १ सफदरजग रोड का वगला विशेषकर वह कमरा जिसमे श्रीमती गाधी अपने सहयोगियो के साथ बैठी थी पूर्णत वातानुकूलित था। वह गभीर और शान्त था। सफेद खादी सिल्क की साड़ी मे वह कुछ थकी थकी-सी लग रही थी। शायद पिछली रात वह सो नही सकी थी। प्रधान मंत्री के पद से उन्हे स्वय इस्तीफा दे देना था। इस्तीफा उन्होंने अपने हाथ से लिख लिया था। वस सोच रही थी कि इसे राष्ट्रपति के पास भेजा कैसे जाए? कमरे मे बिल्कुल सन्नाटा घिरा था। अचानक दरवाज़े पर तेज कदमो से किसी के आने की आवाज हुई। एक झटके से दरवाज़ा खुला—दृश्य मे जिस उत्प्रेरक (कैटलिक एजेण्ट) चरित्र—सजय गाधी का अचानक प्रवेश हुआ उससे उसी क्षण दृश्य मे एक आमूल परिवर्तन हो गया।

श्री सजय ने पूर्ण विश्वास से कहा—अब तक आप लोगो को जो कुछ करना था वह कर लिया। मैं सब कुछ चुपचाप देख रहा था। अब आप लोग यहा से जा सकते हैं। यह हैं मेरी मा मैं हू इनका पुत्र—सजय गाधी

यह कहते हुए पुत्र ने मा के त्यागपत्र को फाडते हुए कहा—अब मैं अपनी मा की देखभाल खुद करूगा। धन्यवाद! अब तक मैं दर्शक था, अब लोग मुझे देखेगे। लोग सोचते थे मेरी मा अकेली है। मैं हू अपनी मा के साथ।

अचानक इस चरित्र के प्रवेश कार्य और सवाद का जो गहरा प्रभाव उस कमरे मे बैठे हुए लोगो पर पडा, उसकी एक सीधी प्रतिक्रिया यह हुई कि लोग नग पर वहा से भागने को विवश हुए।

बाहर हवा मे एक नया स्वर गूजा—सजय गाधी, जिंदाबाद!

यह स्वर, यह शब्द इतना नया था इतनी तेजी से अचानक यह शब्द बोला गया कि लोग एक दूसरे का मुह देखते रह गए।

फैसला

उसी रात को सिर्फ तीन आदमियों के बीच एक फैसला किया गया। और उस फैसले को अपने साथ लिए हुए सारे मुख्य मंत्री २३ जून को अपने अपने राज्य की राजधानी पहुंच गए। उस गुप्त फैसले के अनुसार पूरे देश में गुप्त कार्यवाही शुरू हो गई।

सुप्रीम कोर्ट के अवकाशकालीन न्यायमूर्ति वी० आर० कृष्णअय्यर ने श्रीमती गांधी के प्रतिवेदन पर २४ जून को जो सशर्त स्थगन आदेश दिया उसके अनुसार वह मुकदमे का फैसला होने तक लोकसभा में मत दान के अपने अधिकार से वंचित रहेंगी। लेकिन प्रधान मंत्री के रूप में काम करने का उनका अधिकार बना रहेगा। उन्होंने श्रीमती गांधी के वकील एन० ए० पालकीवाला की यह दलील स्वीकार नहीं की कि दुर्बल आधार पर किए गए इलाहाबाद हाई कोर्ट के फैसले के खिलाफ उन्हें बेशर्त स्थगन आदेश प्राप्त करने का हक है। श्रीमती गांधी और राजनारायण दोनों को यह स्वतंत्रता होगी कि यदि वे चाहें तो १४ जुलाई को न्यायालय खुलने पर उस निर्णय के विरुद्ध दावा दायर कर सकते हैं।

यह निर्णय सुनाए जाने के तत्काल बाद दिल्ली में, राजनीतिक क्षेत्रों में सरगर्मियां तेज हो गई। कांग्रेसी और प्रतिपक्षी दोनों खेमों ने अपने-अपने ढंग से राहत की सांस ली क्योंकि दोनों ने अपने-अपने ढंग से उसे अनुकूल पाया।

शाम को कांग्रेस संसदीय दल की एक विशेष बैठक में श्रीमती गांधी के नेतृत्व में विश्वास प्रकट किया गया। कुछ असंतुष्ट कांग्रेसियों और मग र —चन्द्रशेखर, मोहन धारिया रामधन कृष्णकांत की भी अलग बैठक हुई और उसमें श्रीमती गांधी के त्यागपत्र पर बल दिया गया।

गैर-कम्युनिस्ट पांच प्रतिपक्षी दलों ने श्रीमती गांधी के त्यागपत्र के लिए देशव्यापी सत्याग्रह आंदोलन की घोषणा की।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने श्रीमती गांधी का समर्थन करते हुए उनसे आग्रह किया कि वह दक्षिणपंथी प्रतिक्रियावादी शक्तियों के दबाव के कारण त्यागपत्र न दें।

राजनारायण के वकील शांतिभूषण ने कहा कि यदि श्रीमती गांधी ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया होता तो उनकी प्रतिष्ठा में काफी वृद्धि हुई होती और उससे एक स्वस्थ मिसाल और परंपरा बनी होती।

न्यायमूर्ति कृष्णअय्यर ने पूछा—स्वस्थ राजनीतिक परंपरा?

भूषण ने उत्तर दिया—स्वस्थ राजनीतिक नहीं बल्कि नैतिक परंपरा।

इसपर न्यायमूर्ति ने कहा—नैतिक और राजनीतिक परंपराओं को कानूनी परंपराओं से कुछ लेना-देना नहीं है।

किसे पता था इससे बहुत बड़ा फैसला उससे पहले ही ले लिया जा चुका है। उसके आगे कानून के फैसले दलों के विचार समाचारपत्रों की सुर्खियां कोई मान नहीं रखती।

२४ जून की रात तक पूरी तैयारियां हो चुकी थीं। इतने विस्तार और दूर तक तैयारियां हो चुकी थीं कि किस प्रदेश की पुलिस किस दूसरी जगह किस रास्ते अचानक आकर किस नेता को कैसे कहां कितने बजकर कितने मिनट पर गिरफ्तार करेगी। जयप्रकाश किस गाड़ी में किस कार में मोरारजी भाई—और किस बड़ी गाड़ी में चन्द्रशेखर सहित दिल्ली के अन्य नेता कैसे कहां ले जाए जाएंगे सबकी तैयारी मुकम्मिल थी। यहां तक तैयारी थी कि सोहना के डाकबंगले मे दोपहर के भोजन में क्या चीज जयप्रकाश को खिलाई जाएगी और क्या चीज मोरारजी भाई को?

पूरे भारतवर्ष में यही तैयारी थी। इसका श्रेय श्रीमती गांधी की गुप्त संस्था रॉ को दिया जाता है।

मजेदार बात यह है कि देशव्यापी गिरफ्तारियां २५ जून की आधी रात को और आपातस्थिति लागू २६ जून की सुबह—यानी साढ़े तीन बजे रात और आपात स्थिति की घोषणा सुबह साढ़े आठ बजे।

बिल्कुल घबड़ाई हुई श्रीमती गांधी टूटते बिखरते शब्दों वाक्यों में कांपती आवाज से रेडियो पर राष्ट्र के नाम अपना संदेश दे रही थीं

प्रजातंत्र के नाम पर प्रजातंत्र के काम को ही नकारने की कोशिश की जा रही है। विधिवत रूप से निर्वाचित सरकारों को काम नहीं करने दिया गया है और कुछ मामलों में वैध रूप से निर्वाचित विधानसभाओं

को विघटित करने के उद्देश्य से सदस्यों को इस्तीफा देने के लिए बाध्य किया गया है। आदोलनों से वातावरण भर गया है जिनमें हिंसात्मक वारदातें हुई हैं। कुछ लोग तो हमारे सशस्त्र सैनिकों तथा पुलिस को विद्रोह करने के लिए उकसाने लगे हैं। हमारे सैनिक और पुलिस अनुशासित और महान देशभक्त हैं और वे उनकी चालबाजी में नहीं आएंगे फिर भी इसकी गभीरता को नजरअदाज नहीं किया जा सकता। विघटनकारी तत्त्व पूर्ण रूप से सक्रिय हैं और साम्प्रदायिक भावना उभारी जा रही है जिससे हमारी एकता को खतरा है।

'मुझ पर सभी प्रकार के झूठे आरोप लगाए जा रहे हैं। भारतीय जनता मुझे बचपन से जानती है। मेरा सारा जीवन जनता की सेवा में बीता है। यह एक निजी मामला नहीं है। यह महत्त्वपूर्ण नहीं है कि मैं प्रधान मत्री रहती हू या नहीं, लेकिन प्रधान मत्री का पद महत्त्वपूर्ण है और इसे जान बूझकर बदनाम करने का राजनीतिक प्रयास न तो प्रजातत्र के हित में है न राष्ट्र के।

अब हमें इनके नये कार्यक्रमों का पता चला है जिनसे सारे देश में सामान्य कार्य में बाधा डालने के उद्देश्य से कानून और व्यवस्था को चुनौती दी गई है। क्या कोई भी सरकार जो सरकार है, देश के स्थायित्व को ऐसे खतरे में पड़ने दे सकती है? कुछ के कार्यों से अधिकाश लोगों के अधिकार खतरे में पड रहे हैं। कोई भी ऐसी स्थिति जिससे देश के भीतर निर्णायक रूप से कार्य करने की राष्ट्रीय सरकार की क्षमता कमजोर होती है वह बाहरी खतरे को निश्चय ही प्रोत्साहन देगी। यह हमारा परम कर्तव्य है कि हम एकता और स्थायित्व की रक्षा करें।

' आतरिक स्थायित्व के खतरे से उत्पादन और आर्थिक उन्नति की सभावनाओं पर भी असर पड़ता है। पिछले कुछ महीनों में निश्चित कार्रवाई से हम कीमतों को बढ़ने से रोकने में व्यापक रूप से सफलता मिली है। हम अर्थ व्यवस्था को मजबूत करने तथा विभिन्न वर्गों विशेष रूप से गरीब और असुरक्षित वर्गों तथा उन लोगों की जिनकी आय निर्धारित है कठिनाइयों को दूर करने के और उपायों पर सक्रिय रूप से [illegible] रहे हैं।"

हिन्दी भाषा म श्रीमती गाधी का वह राष्ट्र-सन्देश बहुत खराब था, शायद इसके पूर्वाभ्यास का समय न था। पर अग्रजी म सदेश इतना खराब नहीं था। शायद अग्रेजी भाषा म ऐसे सन्देशा की अपनी परपरा थी पर हिन्दी भाषा म वसा पहला ही राष्ट्र सदश था।

पर जो भी हो २६ जून के उस राष्ट्र सन्देश से सारा भारत सन्न रह गया। लोग चुपचाप एक दूसर का मुह दखते रह गए। एक अजीब खौफनाक चुप्पी उस काली सुबह न जान किस क्षितिज स आई थी और सबके माथे पर कोई अदश्य भार रखकर पूरे परिवश म डोलने लगी थी। चुप्पी के उस भार से आदमी तिल तिल कर दबन लगा था उसी घडी म। और हर दिन वह लगातार छोटा और छोटा होन लगा था।

जो कल तक पवत की तरह ऊचा था आज अचानक मिट्टी का लौंदा जसा दिखन लगा। जा कल तक मस्तक ऊचा किए कुछ कह रह थे आज शम से उनका माथा झुक गया। जो कल तक शेर थे आज चूहे हो गए। अधिकाश पढा लिखा आदमी विशेषकर बुद्धिजीवी अपने छिपने क लिए बिल तलाशन लगा। बडी तेजी से, सुविधाभोगी समाज उस बिल म जा छिपा।

अब तक उस चुप्पी क नीचे दबकर लोगा की कराह बाहर निकल भी नहीं पाई थी कि २७ जून को आपात्कालीन घोषणा क्यो ? एक दूसरा सदेश आकाशवाणी से राष्ट्र के नाम प्रसारित किया गया।

इस प्रसारण म श्रीमती इन्दिरा गाधी की आवाज बिलकुल सभली हुई थी। लगा कि इन चौबीस घटा म उन्ह आत्मविश्वास हासिल हो गया। सदश प्रसारण का पूर्वाभ्यास अब होता है या उसकी अब कोई जरूरत नहा रह गई। सदश दिया— आपातकालीन घोषणा क्या करनी पडी। जो हिंसा का वातावरण देश म फला था उससे हमारे एक मिनिस्टर की हत्या हुई और चीफ जस्टिस की जान पर हमला हुआ। विरोधी दलो ने एक कायक्रम बनाया सारे दश म ब्रन्द घेराव आदोलन और मजदूरा तथा पुलिस और फौजिया को भटकान का। इस विशेष कोशिश म कि केन्द्र सरकार का काम बिलकुल रुक जाए। कार्यक्रम इस महीने की उनतीस तारीख से शुरु होन वाला था। हम जरा भी सदेह नही

कि एमा कायक्रम शाति और आर्थिक स्थिति के लिए गभीर खतरा पदा कर सकता है। इस तरह का कायत्रम जो कुछ विरोधी दलो न सोचा था वह लाकतन्त्र क अनुकूल नही है और किसी भी मापदण्ड से राष्ट्रहित के विरुद्ध है। इसको रोकना जरूरी है।

जब से आपातकालीन घोषणा हुई देश म सामान्य स्थिति है। इस शाति को हम बनाए रखना है। हमको यह समझना है कि लोकतन्त्र म भी हद होती है जिसका पार नही कर सकत। हिंसात्मक काय और नासमझी के सत्याग्रह उस इमारत को ही तोड सकते है जो इतनी मेहनत और आशाओ म इतन वरसो म बनी है।

"आपको मालूम है कि अखबारो की आजादी म मेरा पूरा विश्वास है लेकिन जसे सब आजादिया हैं इसम भी जिम्मदारी और सयम होना चाहिए। जब पहले कही दगे हुए ह चाहे भाषा के नाम से, चाह धम के नाम स तो गरजिम्मदारी से लोगो ने लिखा है। इससे स्थिति और गभीर हुई है। इस खतर से बचना जरूरी है। कुछ अर्से से कई अखबार गलत खबरें जिससे लोग भडक या जिससे गलतफहमी फले दे रहे थे। हमारा पूरा मकसद इस समय यह है कि शाति और स्थिरता की स्थिति बनी रह। सेंसरशिप का मतलब यही है।

हमारा इरादा है कि उत्पादन बढाए जिससे रोजगार बढे और ज्यादा अच्छा वितरण भी हो। बिजली की फौरन जरूरत है कृषि क काम के लिए और उद्योगो क लिए भी। हमे गरीब और मध्यम वग के लोगो के लिए भी कुछ करना है उनकी कठिनाइया दूर करनी हैं।'

एक ओर पूरा देश पूरा जन मानस अभी कराह भी नही पाया था कि सरकारी और कांग्रेसी दानो स्तरो से आपात स्थिति का भयकर स्वागत होन लगा। आपात स्थिति के मच पर न जाने कहा से इतन विदूषक आए कवि और लेखक आए नाचने गाने वाल और कव्वालिया आइ। हाय जोडे पत्रकार आए। जो कल तक कुछ थ आज इतने कुछ और हो गए कि पहचान पाना असभव। शब्द बदल गए। आवाजें बदल गइ। हमन क ढग म एक बुनियादी फक आ गया। बोलन और चुप रहन सोचन और अभि

व्यक्त करने के बीच जो मौन सचाई होती है, उसमें गुणात्मक परिवर्तन आ गया।

कुछ शीर्षस्थ लेखकों, कलाकारों, खिलाड़ियों, पत्रकारों के हस्ताक्षर युक्त विज्ञापन छपने लगे आपात स्थिति के समर्थन में। सारे समाचारपत्र विभिन्न राज्यों के मुख्य मंत्रियों और कांग्रेस कार्यसमितियों द्वारा इंदिरा गांधी के प्रति समर्थनों से भर गए। यही एक बात सारे मुख्य मंत्रियों, कांग्रेस अधिकारियों और उनके समर्थकों से अलग-अलग ढंग से सुनाई पड़ती— कि देश में कुछ तत्त्वों ने ऐसी परिस्थितियां पैदा कर दी थीं कि जिनके कारण प्रधान मंत्री को ऐसे सख्त कदम उठाने को बाध्य होना पड़ा। कोई भी राष्ट्र देश की कानूनी सरकार को अपदस्थ करने का आह्वान बर्दाश्त नहीं कर सकता। जब प्रजातांत्रिक संस्थाओं को गिराने के लिए हिंसा चालू की जाए तो आपातकालीन घोषणा जैसे सख्त कदम उठाने ही पड़ते हैं।'

आतंरिक सुरक्षा के नाम पर मीसा

२७ जून को राष्ट्रपति ने संविधान की धारा ३५९ (१) के अंतर्गत आपात स्थिति के बाद गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों के अदालतों में अपील करने के अधिकार को निलंबित किया। धारा १४, २१ और २२ के अंतर्गत अदालतों में अपील करने के अधिकार को समाप्त किया गया। ३० जून को राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने आंतरिक सुरक्षा अधिनियम में संशोधन का अध्यादेश जारी करते हुए यह घोषणा की—गिरफ्तार किए गए व्यक्ति की गिरफ्तारी के लिए कोई कारण देने की जरूरत नहीं है।

प्रधान मंत्री ने २८ जून को अपने मंत्रिमंडल में एक विशेष परिवर्तन किया जिसके अनुसार श्री विद्याचरण शुक्ल (इन्द्रकुमार गुजराल की जगह) सूचना तथा प्रसारण मंत्री बनाए गए।

दो दिनों में ही गुजराल क्यों हटाए गए? इसके पीछे एक छोटी-सी घटना है। २६ जून की सुबह रेडियो के प्रथम समाचार प्रसारण में जयप्रकाश की गिरफ्तारी का समाचार मुंह से निकल गया। कुछ लोग कहते हैं २५ जून की आधी रात को जिस आवाज ने फोन पर चन्द्रशेखर को जे० पी०

की गिरफ्तारी का समाचार दिया, वह आवाज़ गुजराल की ही थी—और यह तब काफी बडा अपराध था। इस बडे अपराध के अनुसार बडी सजा गुजराल को इसलिए नही दी गई कि उन पर रूस की महरबानी थी और वह भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के पुराने 'काड होल्डर' (सदस्य) थे।

१ जुलाई का २० सूत्री कायक्रम घोषित हुआ— केवल एक ही जादू है जो गरीबी को दूर कर सकता है और वह है स्पष्ट दूर-दृष्टि के साथ साथ कडा परिश्रम, दृढ इच्छा और कठोरतम अनुशासन। हमम से प्रत्येक को अपने अपने स्थान पर केवल अपने लिए ही नही बल्कि अपने साथी नागरिको के लिए और अधिक काम करने का दृढ निश्चय करना चाहिए। राज्य की सम्पत्ति का अधिक सम्मान किया जाना चाहिए। इसे नष्ट करने पर दण्डात्मक जुर्माने किए जाएगे। सभी तरफ हम और अधिक सयम बरतने की भी आवश्यकता है। जो खपत स्पष्ट रूप से कम की जा सकती है उसे कम करने का सरकार का कतव्य है परतु नागरिको का भी उत्तरदायित्व है। राष्ट्र के जीवन को बेहतर बनाने के लिए यही रास्ता है।

कानून तोडने राष्ट्रीय गतिविधियो को समाप्त करने तथा अनुशासन और अवना के लिए सुरक्षा सेनाओ को उकसाने से आर्थिक अराजकता और गडबडी हो सकती थी और हमारा देश पृथक्तावादी प्रवृत्तियों और विदेशी खतरे का शिकार हो जाता। नफरत के बादल कुछ छट जाने पर हम अपने आर्थिक लक्ष्यो को और अधिक स्पष्टता और महत्त्व के साथ देख सकते है। आपातकालीन स्थिति से हम अपने आर्थिक कार्यों को आगे बढाने का एक नया अवसर मिला है। "

शुक्रवार ४ जुलाई को राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ जमाते इस्लामी और आनन्द माग को निषिद्ध घोषित कर देने के बाद केन्द्र सरकार ने उन सब व्यक्तियो को दड का अधिकारी घोषित कर दिया जो अर्द्धसैनिक और अतिवादी कायवाहियो म किसी तरह से भी हिस्सा लेते और सहयोग देते हुए पाए जाए।

६ जुलाई तक सारे देश म व्यापक छापे डालकर पुलिस ने तमाम चीज़ें बरामद की। अब तक सरकारी आकडो के अनुसार १,४०६ गिरफ्तारियां

हुए जिनमें थे ६७८ राष्ट्रीय स्वयंसेवक और १६० आनन्द मार्ग के औ
बाकी नक्सलवादी और जमात इस्लामी।

अखबारों और फिल्मों में तस्करों की घटनाओं से खलनायक के रूप में पे
किया जाता रहा है। पिछले सप्ताह भारत सरकार ने देश के बहुत से हिस्सों
में उन्हें गिरफ्तार करके जेलों में डाल दिया।

एम विशेष समाचार ही अब विशेष सवाददाताओं द्वारा विशेष ढंग से
लिए जाने लगे। ये समाचार अब विशेष ढंग से समाचारपत्रों में छपने लगे
सरकार और समाचार इन दोनों की यही कोशिश होने लगी कि लोग अब
राजनीतिक व्यक्तियों और दल में पड़े नेताओं के नाम भूल जाएं और उन्हें
अब सिर्फ याद आएं तस्करों के नाम—हाजी मस्तान, यूसुफ पटेल
सुखनारायण बखिया, पूजाजी शाह, रामलाल नारंग आदि आदि। राष्ट्रीय
गाथाओं और चरित्रों को भूलकर लोग अब इन तस्करों की चरित्र-कथाएं
पढ़ें। तभी तो उसी मीसा के अंतर्गत यूसुफ पटेल भी गिरफ्तार किया गया
और उसीमें मोरारजी भाई और राजनारायण भी गिरफ्तार किए गए।

श्रीमती इंदिरा गांधी के समर्थन में प्रतिदिन उनके निवास-स्थान के
सामने लोग इकट्ठे किए जाते। इन्दिरा गांधी को रोज कुछ बोलना था
इसके लिए एक भीड़ की जरूरत हमेशा होती। उसीके सहारे जेल में बन्द
नेताओं के बारे में बुरा भला कहना रहता।

ऐसी भीड़ दूर-दूर से ट्रेनों में, बसों में गाड़ियों और ट्रकों में
लादकर दिल्ली लाई जाती। एक ऐसी ही भीड़ के सफर के बारे में घटना
घटी। रेल राज्यमंत्री मोहम्मद शफी कुरेशी का हुक्म होता है कि पूरी
गाड़ी के मुसाफिर बिना टिकट रेल से यात्रा करेंगे—बिल्कुल मुफ्त। उस
समय के उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक सी० एस० परमेश्वरम ने आपत्ति
की—इससे राष्ट्र के चरित्र पर बुरा असर पड़ेगा।

इसका सीधा असर यह हुआ कि उसी रात परमेश्वरम को समय से पूर्व
ही जबरदस्ती अवकाश दे दिया गया।

उन शुरू के दिनों में प्रधान मंत्री हर किसीको केवल उत्तर देती थीं।
कोई उनसे प्रश्न नहीं कर सकता था। केवल उत्तर पाने के लिए मात्र
जिज्ञासा कर सकता था। सारी ट्रेड यूनियनें प्रेस समाचार अफसर नेता

शिक्षक छात्र बच्चे-बूढ़े कलाकार मज़दूर किसान, लेखक सबका वह लगातार उत्तर देती रहती—

'सारे प्रतिबंधों के बावजूद देश का लोकतंत्री ढांचा अपरिवर्तित है इन सब प्रतिबंधों के बावजूद मेरा ख्याल है कि हमारा देश दुनिया का सबसे अधिक तनावहीन देश है। प्रतिपक्षी दलों का उद्देश्य बहुत स्पष्ट था—सरकार को और वस्तुतः समस्त राष्ट्रीय गतिविधियों को ठप्प करके राष्ट्र की लाश पर आगे बढ़कर सत्ता हथियाना। आपातकालीन स्थिति लागू होने के पहले प्रेस का एक भाग सचाई और तथ्यों को जिस तरह दबा रहा था उसे रोकने का एकमात्र रास्ता सेंसर नहीं था पर क्या किया जाए देश में जो प्रतिक्रियावादी तत्त्व हैं उनका विदेशों से कोई संबंध नहीं रहने दिया जाएगा।'

इस बीच श्रीमती गांधी बहुत बोलतीं। अखबारों में केवल वही छपती या उनकी प्रतिछाया प्रतिध्वनि छपती और सुनाई पड़ती।

जे० पी० का पत्र—इंदिरा के नाम

यह बात तक कहीं नहीं छपी कि कौन कौन गिरफ्तार हुए हैं। जे० पी० कहां हैं कैसे हैं? लोग अचानक कहां अदृश्य हो गए? एक तरफ शोर केवल शोर दूसरी तरफ बिलकुल सन्नाटा—इस स्थिति ने भारतीय जनमानस को भीतर ही भीतर अति कल्पनाशील बनाया। कहां क्या हो रहा है क्या घट रहा है इसका पहला जायजा हम उस दिन मिला जब चंडीगढ़ से २१ जुलाई को जयप्रकाश नारायण का श्रीमती गांधी के लिखे हुए खत की एक प्रतिलिपि मिली—

प्रिय प्रधान मंत्रीजी

समाचारपत्रों में आपके भाषणों और भेंट-वार्ताओं के जो विवरण छपते हैं उन्हें पढ़कर मैं हैरान रह जाता हूं। आपने जो कुछ किया है उसे सही और उचित सिद्ध करने के लिए नित्य कुछ न कुछ कहना ही पड़ता है। क्या इसीलिए कि अंतरात्मा दोषी है और वह आपको अंदर से कचोटती है। आपने प्रेस तथा हर प्रकार के सार्वजनिक मतभेद और **असहमति का**

मुंह बन्द कर लिया है। अब आपको क्या भय है कि कोई आपकी आलोचना करेगा, या आपकी बातों का खंडन करेगा ? निर्भय होकर आप झूठ बोलती जा रही हैं और तथ्यों को तोड़ मरोड़कर रखती जा रही हैं। लेकिन अगर आप सोचती हों कि इस तरह जनता की नजर में आप अपने को पाक साफ और नेकनीयत सिद्ध कर सकेंगी और विरोध को राजनीतिक दृष्टि से मिट्टी में मिला देंगी तो आप बहुत बड़ी भूल कर रही हैं। यदि आपको मेरी बात में संदेह हो तो आपातकाल को समाप्त कीजिए, जनता के मूल अधिकार उसे वापस दीजिए, प्रेस को पुनः स्वतंत्र कीजिए, उन सबको मुक्त कर दीजिए जिन्हें आपने जेलों में बन्द कर रखा है और जिन्होंने सिवाय इसके दूसरा कोई अपराध नहीं किया है कि देश के प्रति अपना कर्तव्य पूरा किया। इतना करके देख लीजिए। नौ वर्ष कम नहीं होते, महोदया ! इतने दिनों में जनता ने, जिसे भगवान ने पांच स्थूल इन्द्रियां के अलावा एक छठवीं इन्द्रिय सूझ बूझ और सूक्ष्म परख की दे रखी है, आपको अच्छी तरह समझ लिया है।

जहां तक मैं समझ सका हूं, आपके सारे गीतों का एक ही राग है—वह यह कि (क) योजना सरकार को ठप्प करने की थी और (ख) एक आदमी ऐसा था जो सिविल और सैनिक कर्मचारियों में विद्रोह भड़का रहा था। मुख्य राग आपका यही है, यद्यपि कुछ अन्य राग भी आप अलापती रही हैं। समय समय पर आप मुख्य विषय से हटकर अपने दूसरे विचारों की खैरात भी बांटती रहती हैं, जैसे यह कि राष्ट्र का महत्त्व लोकतंत्र से अधिक है या यह कि सामाजिक लोकतंत्र (सोशल डेमोक्रेसी) भारत के लिए अधिक उपयुक्त है। इसी धुन से मिलती जुलती आपकी अन्य बातें भी होती हैं।

सारी बदमाशी की जड़ में मैं ही हूं, इसलिए मैं बता दूं कि सचाई क्या है। हो सकता है कि मेरी बातों में आपकी रुचि न हो, क्योंकि जो कुछ झूठ सच आप कह रही हैं तथा तथ्यों को जिस तरह तोड़ मरोड़ रही हैं, वह आप अनजान में नहीं, जानबूझकर, योजनापूर्वक कर रही हैं। फिर भी कम से कम इतना तो हो जाए कि सचाई हमेशा के लिए कागज पर अंकित हो जाए।

' सबसे पहले सरकार ठप्प करने की योजना के बारे में कहूं। कतई ऐसी कोई योजना नहीं थी और आप भली भांति जानती हैं कि नहीं थी। मैं बता दूं कि सचमुच क्या योजना थी।

' भारत के सभी राज्यों में बिहार एक ऐसा राज्य था जहां जन-आंदोलन था। लेकिन वहां भी मुख्य मंत्री के अनेक वक्तव्यों के अनुसार आंदोलन बहुत पहले ही खत्म हो चुका था—अगर कभी रहा भी हो तो। किन्तु यदि आपके सर्वव्यापी गुप्तचर विभाग ने ठीक ठीक जानकारी दी हो तो आपको जानना चाहिए कि सचाई क्या है ? सचाई यह है कि बिहार में आन्दोलन फैल रहा था और देहातों में बिलकुल नीचे तक पहुंच रहा था। मेरी गिरफ्तारी तक जनता सरकार गांव से लेकर ब्लाक तक बनाई जा रही थी। आशा थी कि बाद में यह क्रम ज़िले और राज्य तक पहुंचता।

अगर आपने जनता सरकारों का कार्यक्रम देखा होगा तो आपके ध्यान में यह बात आई होगी कि कार्यक्रम ज़्यादातर रचनात्मक था। सामग्रियों का सार्वजनिक वितरण, प्रशासन की निचली सीढ़ियों पर भ्रष्टाचार की रोकथाम, आपसी झगड़ों का मेल मिलाप और पंचफैसले के पुराने जाने माने तरीकों से निबटारा, हरिजनों को उनका हक दिलाना, तिलक दहेज जैसी सामाजिक कुरीतियों को रोकना, आदि काम जनता सरकारों के जिम्मे थे। इन कामों में कोई भी ऐसा नहीं था जिसे किसी तरह राजद्रोही या विनाशकारी कहा जा सके। जहां जनता सरकारें अच्छी तरह संगठित थीं उन्हीं जगहों में कर-बंदी के कार्यक्रम उठाए जाते थे। जब शहरी क्षेत्रों में आन्दोलन ज़ोरों पर था तो धरना और पिकेटिंग द्वारा कुछ दिनों तक सरकारी कार्यालयों का काम ठप्प करने की कोशिश की गई थी। पटना में जब भी विधानसभा का अधिवेशन होता था तो सदस्यों से इस्तीफा देने का आग्रह किया जाता था और उन्हें भीतर जाने से शांतिपूर्वक रोका जाता था। ये सविनय अवज्ञा के सोचे-समझे कार्यक्रम थे जिनमें राज्य भर में हज़ारों लोग—पुरुष और स्त्री—गिरफ्तार हुए थे।

अगर इसे ही बिहार सरकार को ठप्प करना माना जाए तो आज़ादी की लड़ाई के ज़माने में असहयोग और सत्याग्रह द्वारा ब्रिटिश सरकार को ठप्प करने के लिए हम लोगों ने इसी तरह के प्रयत्न किए थे। लेकिन वह

मुह वद वर लिया है। अब आपको क्या भय है कि कोई आपकी आलोचना करेगा, या आपकी बातो का खडन करेगा ? निभय होकर आप झठ बोलती जा रही हैं और तथ्यो को तोड मरोडकर रखती जा रही हैं। लेकिन अगर आप सोचती हो कि इस तरह जनता की नजर म आप अपने को पाक साफ और नेकनीयत सिद्ध कर सकेंगी और विरोध को राजनीतिक दृष्टि से मिट्टी म मिला देंगी तो आप बहुत बडी भूल कर रही हैं। यदि आपको मेरी बात म सदेह हो तो आपातकाल को समाप्त कीजिए जनता के मूल अधिकार उसे वापस दीजिए प्रेस को पुन स्वतत्र कीजिए उन सबको मुक्त कर दीजिए जिन्ह आपने जेलो म बन्द कर रखा है और जिन्होन सिवाय इसके दूसरा कोई अपराध नहीं किया है कि देश के प्रति अपना कतव्य पूरा किया। इतना करके देख लीजिए। नौ वष कम नहीं होते महोदया! इतने दिनो म जनता ने जिसे भगवान ने पाच स्थूल इन्द्रियो के अलावा एक छठवी इन्द्रिय सूझ-बूझ और सूक्ष्म परख की दे रखी है आपको अच्छी तरह समझ लिया है।

जहा तक मैं समझ सका हू आपके सारे गीतो का एक ही राग है—वह यह कि (क) योजना सरकार को ठप्प करने की थी और (ख) एक आदमी ऐसा था जो सिविल और सनिक कमचारियो म विद्रोह भडका रहा था। मुख्य राग आपका यही है यद्यपि कुछ अय राग भी आप अलापती रही हैं। समय समय पर आप मुख्य विषय से हटकर अपने दूसरे विचारो की खरात भी बाटती रहती हैं जसे यह कि राष्ट्र का महत्त्व लोकतन्त्र से अधिक है या यह कि सामाजिक लोकतन्त्र (सोशल डमाक्रसी) भारत के लिए अधिक उपयुक्त है। इसी धुन से मिलती जुलती आपकी अय बातें भी होती हैं।

सारी बदमाशी की जड म मैं ही हू इसलिए मैं बता द कि सचाई क्या है। हो सकता है कि मेरी बातो म आपकी रुचि न हो क्योकि जो कुछ झूठ सच आप कह रही है तथा तथ्यों को जिस तरह तोड मरोड रही हैं वह आप अनजान म नही जानबूझकर योजनापूवक कर रही हैं। फिर भी कम स कम इतना तो हो जाए कि सचाई हमेशा के लिए कागज पर अकित हो जाए।

' सदन पहले सरकार ठप्प करने की योजना के बारे म कहू। बतई एमी कोई योजना नही थी और आप भनी भाति जानती हैं कि नही थी। मैं बता दूं कि सचमुच क्या योजना थी।

भारत के सभी राज्यो म बिहार एक एसा राज्य था जहां जन-आदोलन था। लेकिन वहा भी मुख्य मत्री क अपने वक्तव्यों क अनुसार आदोलन कभी पहले हो फिस हो चुका था—अगर कभी रहा भी हो तो। किन्तु यदि आपके सवव्यापी गुप्तचर विभाग न ठीक ठीक जानकारी दी हो तो आपको जानना चाहिए कि सचाई क्या है ? सचाई यह है कि बिहार म आन्दोलन फल रहा था और देहातो म बिलकुल नीचे तक पहुच रहा था। मेरी गिरफ्तारी तक जनता सरकार गाव स नकर ब्लाक तक बनाई जा रही थी। आशा थी कि बाद म यह क्रम जिले और राज्य तक पहुचता।

अगर आपने 'जनता सरकारो' का कायक्रम देखा होगा तो आपके ध्यान म यह बात आई होगी कि कायक्रम ज्यादातर रचनात्मक था। सामग्रियो का सावजनिक वितरण प्रशासन की निचली सीढियो पर भ्रष्टाचार की रोकथाम आपसी झगडो का मेल मिलाप और पचफसले क पुराने जाने माने तरीकों से निबटारा हरिजनो को उनका हक दिलाना तिलक दहेज जसी सामाजिक कुरीतियो को रोकना आदि काम जनता सरकारो क जिम्मे थे। इन कामो म कोई भी एसा नही था जिसे किसी तरह राजद्रोही या विनाशकारी कहा जा सके। जहा जनता सरकारें अच्छी तरह सगठित थी उन्ही जगहो म कर-बदी क कायक्रम उठाए जाते थ। जब शहरी क्षेत्रो म आन्दोलन जोरो पर था तो घेरना और 'पिकेटिंग' द्वारा कुछ दिनों तक सरकारी कार्यालयो का काम ठप्प करने की कोशिश की गई थी। पटना म जब भी विधानसभा का अधिवेशन होता था तो सदस्या स इस्तीफा देने का आग्रह किया जाता था और उन्हे भीतर जाने स शातिपूर्वक रोका जाता था। ये सविनय अवज्ञा के सोचे समझे कायक्रम थ जिनम राज्य भर मे हजारो लोग—पुरुष और स्त्री—गिरफ्तार हुए थे।

अगर इस ही बिहार सरकार को ठप्प करना माना जाए तो आजादी की लडाई के जमाने मे असहयोग और सत्याग्रह द्वारा ब्रिटिश सरकार को ठप्प करने के लिए हम लोगो न इसी तरह क प्रयत्न किए थ। लेकिन वह

ऐसी सरकार थी जो शस्त्र के बल पर कायम हुई थी जब कि बिहार की सरकार और विधानसभा सविधान के अनुसार स्थापित हुई है। तो किसीको क्या अधिकार है कि जनता द्वारा चुनी हुई किसी सरकार या विधान सभा से हट जाने को कहे ? यह आपका एक प्रिय प्रश्न है जिसे आप बार बार पूछती हैं। इसका उत्तर दिया जा चुका है—एक नहीं न जाने कितनी बार। उत्तर उन लोगों ने दिया है जिनका इस विषय पर अधिकार है। इनमें मैं भी शामिल है जो सविधान के जाने माने वकील और विशेषज्ञ हैं। उत्तर यह है कि लोकतंत्र में जनता को यह अधिकार निश्चित रूप में प्राप्त है कि वह ऐसी सरकार के इस्तीफे की माग कर सकती है जो जनता द्वारा निर्वाचित होने के बावजूद भ्रष्ट हो गई हो और कुशासन पर उतारू हो। और यदि विधानसभा ऐसी सरकार का समर्थन करती है तो उसे भी जाना चाहिए ताकि जनता निकम्मे प्रतिनिधियों के स्थान पर अच्छे प्रतिनिधि चुन सके।

किन्तु इस स्थिति में एक प्रश्न उठता है। जनता की इच्छा क्या है, यह कैसे ज्ञात हो ? जानने का एक ही उपाय है जो लोकतंत्र में मान्य है। जहा तक बिहार का सबध है पटना में बडी से बडी रैलिया हुई, जुलूस निकले राज्य भर के निर्वाचन क्षेत्रों में हजारों सभाए हुई। तीन दिन का बिहार बन्द हुआ ४ नवम्बर को अविस्मरणीय घटनाए घटी और १८ नवम्बर को पटना के गाधी मैदान में अभूतपूर्व सभा हुई। क्या ये प्रदर्शन जनता के सकल्प के पक्के प्रमाण नहीं थे ? इसके विपरीत बिहार की सरकार और कांग्रेस ने अपने पक्ष में क्या प्रमाण दिए ? क्या वहा ६ नवम्बर का दयनीय जवाबी प्रदर्शन जिसकी व्यूह रचना स्वय श्री बरुआ ने की थी और जिस पर जैसा कि विश्वसनीय सूत्रों से पता चला ६० लाख की असाधारण रकम खर्च की गई सही प्रमाण बन सकता है ? मैंने बार बार माग की थी कि अगर ये प्रमाण भी पक्के और अतिम न माने जाए तो जन मत गणना करा ली जाए लेकिन आपको जनता के सामने जाने में भय लगता था।

बिहार आन्दोलन के सिलसिले में एक और महत्त्व की बात का उल्लेख कर दू। उससे इस प्रकार के आदोलन की राजनीति को समझने में मदद

मिलेगी। विहार के छात्रों ने आंदोलन कुछ अचानक नहीं छेड़ा। पहले उन्होंने एक सम्मेलन किया जिसमें अपनी मांगें तय कीं। उसके बाद मुख्य मंत्री और शिक्षा मंत्री से मिले एक से अधिक बार मिले। लेकिन विहार की निकम्मी और भ्रष्ट सरकार ने छात्रों की बातों को कोई महत्त्व ही नहीं दिया। तब छात्रों ने विधानसभा का घेराव किया। घेराव के दिन जो दुखद घटनाएं घटीं उन्होंने विहार आन्दोलन को नजदीक ला दिया। इतने पर भी छात्रों ने मंत्रिमण्डल के इस्तीफे या विधानसभा को भंग करने की मांग नहीं की। कई हफ्ते बीते जिनके दौरान गोलियां चलीं लाठीचार्ज हुए और मनमाने ढंग से गिरफ्तारियां हुई। यह सब होने पर छात्र संघर्ष समिति ने विवश होकर मंत्रिमंडल के इस्तीफे और विधानसभा को भंग करने की मांग की। इस बिन्दु पर पहुंचकर अन्तिम निर्णय हो गया और कदम उठ गया।

इस प्रकार विहार सरकार के लिए पूरा मौका था कि वह चाहती तो आमने-सामने बैठकर शांति के साथ सब मसले हल कर सकती थी। छात्रों की कोई मांग ऐसी नहीं थी जो अनुचित रही हो या जिसके संबंध में समझौता संभव न रहा हो। लेकिन विहार सरकार ने संघर्ष का रास्ता पसन्द किया—संघर्ष यानि घोर दमन का रास्ता। यही उत्तर प्रदेश में हुआ। दोनों जगह सरकार ने सुलह का आपसी चर्चा से प्रश्नों का हल करने का रास्ता नहीं पकड़ा। रास्ता पकड़ा विवाद और संघर्ष का। अगर इससे भिन्न रास्ता होता तो कतई कोई आन्दोलन न होता।

यह एक रहस्य भरी पहेली है। इन सरकारों ने बुद्धिमानी से काम क्यों नहीं किया—यह प्रश्न बार-बार मेरे मन में उठा है और मैंने इस पर गहराई से विचार किया है। मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि सूझ समझ से काम न लेने में मुख्य बाधा रही है—भ्रष्टाचार। सरकारें अपने भीतर के भ्रष्टाचार का हल नहीं निकाल सकी हैं विशेष रूप से ऊपर के लोगों के भ्रष्टाचार का मंत्रियों के भ्रष्टाचार का। और यही सरकार और प्रशासन का भ्रष्टाचार इस आंदोलन का केन्द्रबिन्दु रहा है।

जो कुछ भी हो इस प्रकार का आंदोलन विहार के सिवाय दूसरे किसी राज्य में नहीं था। उत्तर प्रदेश में सत्याग्रह अप्रैल में शुरू हो गया था लेकिन

जन आदोलन बनने म बहुत देर थी। दूसरे राज्यों म सघप समितिया तो बन गई थीं कि तु जन-आदोलन की सभावना कही नहीं प्रकट हुई थी। और चकि लोकसभा का चुनाव नजदीक आ रहा था विरोधी दलों का ध्यान मामन दिखाई देने वाले चनाव-सघष पर आधिक था न कि ऐसे सघष पर जिसम सविनय अवज्ञा का कायक्रम भी होता। इसलिए जिस योजना की बात आप करती है—सरकार ठप्प करने की योजना—वह आपक दिमाग की उपज है जिसकी ईजाद आपने अपने तानाशाही तरीकों को उचित सिद्ध करन के लिए की है।

लकिन तक के लिए एक क्षण के लिए मैं मान लेता हू कि ऐसी योजना सचमुच बना थी। तो क्या आप पूरी ईमानदारी स विश्वास करती हैं कि अभी कल तक आपके जो सहयोगी थ भूतपूव उपप्रधानमत्री तथा च द्रशेखर जो काग्रेस कायसमिति के सदस्य थे वे भी इस योजना म शरीक थे ? फिर व और उनकी तरह बहुत स दूसरे लोग क्यों गिरफ्तार किए गए हैं ?

नही प्रिय प्रधान मत्रीजी सरकार को ठप्प करने की कोई योजना नही थी। यदि कोई योजना थी भी तो एक सामा य निर्दोष थोडे समय की जो उस समय तक चलाई जाती जब तक सुप्रीम कोट मे आपकी अपील का फसला न हो जाता। यह वही योजना थी जिसकी घोषणा २५ जून को नानाजी देशमुख ने रामलीला मैदान म की थी। इसी योजना पर उस दिन शाम को मैंने अपना भाषण भी दिया था। कायक्रम यह सोचा गया था कि कुछ चुने हुए लोग आपके निवास के सामने या उसक निकट सत्या ग्रह करेंग कि सुप्रीम कोट क फसले तक के लिए आप अपना पद छोड दें। यह कायक्रम सात दिन तक दिल्ली म चलता और उसके बाद राज्यो मे भी शुरू होता। जैसा मैंने ऊपर कहा है यह कायक्रम भी सुप्रीम कोट के फसल तक ही चलता। मैं नही समझ पाता कि यह कायक्रम किस प्रकार राजद्रोही विनाशकारी या खतरनाक कहा जा सकता है। लोकतत्र म हर नागरिक को सविनय अवज्ञा का अधिकार है। यह अधिकार उसस छीना नही जा सकता। जब न्याय और सुधार के दूसरे सब दरवाजे बद हो जाते हैं तो वह अपन इस अधिकार का प्रयाग करता है। कहने की जरूरत नहीं कि इसम सत्याग्रही जान बूझकर कानून म निर्धारित दड अपने ऊपर

आमन्त्रित करता है। गाधीजी न लोकतन्त्र म यह एक नया आयाम जोडा था। कसी विडम्बना है कि गाधी क ही भारत म यह आयाम मिटाया जा रहा है।

यह जान लेन की बात है—बडे महत्व का मुद्दा है—कि सत्याग्रह का इतना कायक्रम भी विरोधियों को न सूझता अगर आप धैर्य रखती और चुपक से अपने पद पर चिपकी रहती। लेकिन आपन ऐसा न करक कुछ दूसरा ही किया। आपन पिछलग्गुओं द्वारा अपने निवास क सामने सभाए कराइ प्रदशन कराए जिनम आपस अनुरोध किया गया कि आप त्यागपत्र न दें। आपने इन सभाओं और प्रदशनों म भाषण दिए, अपनी स्थिति क पक्ष म लचर दलीलें दी और विरोधियो क सिर पर झूठे आरोप थोपे। *आपक निवास क सामन हाईकोर्ट के उस जज का पुतला जलाया गया और* शहर मे पोस्टर चिपकाए गए जिनम जज और सी० आई० ए० का नाता बताया गया था। जब ऐसी घृणित घटनाए रोज घटने लगी तो विरोधियों क सामने क्या विकल्प रह गया सिवाय इसके कि वे शरारत का जवाब दें? जवाब भी कस दें? हुल्लडबाजी से नहीं, बल्कि सुव्यवस्थित सत्याग्रह से, अपने बलिदान से। यही वह योजना' है जिस योजना से आपकी क्रोधाग्नि भडकी है, जिसन जनता की स्वतन्त्रता छीनी है और जिसक कारण लोकतन्त्र पर इतना घातक प्रहार हुआ है।

'प्रेस की आजादी क्यो छीन ली गई है? इसलिए नहीं कि भारतीय प्रेस गैरजिम्मेदार था बेईमान या सरकार विरोधी था। सच बात तो यह है कि किसी भी देश म जहा स्वतन्त्रता है प्रेस इतना जिम्मेदार निष्पक्ष और विवेकशील नहीं है जितना भारत म है। वास्तव मे यहा के प्रेस पर आपका गुस्सा तब भडका जब हाईकोर्ट के फसले के बाद राजधानी के सभी अखबारों ने, यहा तक कि ढुल मुल टाइम्स आफ इडिया ने भी बडे जोरदार और तकसगत सम्पादकीय लेख लिखे जिनम यह सलाह थी कि आपको कुर्सी छोड देनी चाहिए। तो प्रेस की आजादी आपको हजम नहीं हुई। बस विचार-स्वातत्र्य की अतिम आशा और अवसर भी **खत्म** हो गया और आपने एक झटक स प्रेस का गला घोट दिया। **इस कल्पना** से भी आदमी चौंक पडता है कि प्रेस की स्वतन्त्रता ...

लोकतंत्र का प्राण है मात्र एक प्रधान मंत्री की व्यक्तिगत खीज के कारण खत्म कर दी जा सकती है।

आपने विरोधियों पर यह आरोप लगाया है कि वे देश के प्रधानमंत्री की प्रतिष्ठा गिराने की कोशिश करते हैं जबकि वास्तविकता यह है कि यह काम आपकी ओर से होता है। इस महान पद का सम्मान जितना आपने स्वयं गिराया है उतना दूसरे किसीने नहीं। क्या इसकी कल्पना भी की जा सकती है कि किसी लोकतंत्रीय देश का प्रधान मंत्री ऐसा भी हो सकता है जिसे अपनी संसद में इस कारण से मत देने तक का अधिकार न हो कि वह चुनाव में भ्रष्ट तरीके इस्तेमाल करने का दोषी पाया गया है! (सुप्रीम कोर्ट हाई कोर्ट के फैसले को बदल सकती है। संभव यही है कि भय और आतंक के इस वातावरण में बदल दे—लेकिन जब तक उसका फैसला नहीं हो जाता तब तक आपका अपराध और मत देने के अधिकार का छीना जाना—दोनों कायम हैं।)

वह एक व्यक्ति जिसके लिए कहा जाता है कि उसने सेना और पुलिस में राजद्रोह भड़काया इस अभियोग से इनकार करता है। उसने इतना ही किया है कि सेना और पुलिस के जवानों को अपने कर्तव्य और जिम्मेदारियों के प्रति सचेत किया है। इस सम्बन्ध में उसने जो कुछ कहा है वह कानून के अन्तर्गत है—संविधान आर्मी एक्ट पुलिस एक्ट सबके अन्तर्गत।

इतना मैंने आपके मुख्य मुद्दों—सरकार ठप्प करने तथा सेना और पुलिस में राजद्रोह फैलाने के बारे में कहा। अब आपके कुछ छोटे मुद्दों और अन्य विचारों के बारे में कहूंगा।

लोकतंत्र का राष्ट्र में अधिक महत्त्व नहीं है—आपकी कही हुई यह बात छपी है। प्रधान मंत्री महोदया क्या आप सीमा से बाहर जाकर धृष्टता नहीं दिखा रही हैं? आप ही अकेली नहीं हैं जिसे राष्ट्र की चिंता हो। जिन लोगों को आपने कैद कर रखा है उनमें अनेक ऐसे हैं जिन्होंने देश के लिए आपसे कहीं अधिक किया है और उनमें से प्रत्येक व्यक्ति उतना ही देशभक्त है जितनी आप हैं। इसलिए कृपा करके हमारे घावों पर नमक मत छिड़किए हमें लोगों को देशभक्ति का पाठ मत पढ़ाइए।

राष्ट्र बड़ा या लोकतंत्र यह विकल्प नहीं है। एक को छोड़कर दूसरे का अपमान की बात ही नहीं हो सकती। राष्ट्र कल्याण की ही भावना से प्रेरित होकर २६ नवंबर १९४९ को भारत की जनता ने अपनी संविधान सभा में यह घोषणा की थी कि "हम भारत के लोग भारत को एक प्रभुसत्ता सम्पन्न लोकतंत्रीय गणराज्य बनाने का दृढ़ संकल्प लेकर अपने लिए यह संविधान स्वीकार कर रहे हैं।" वह लोकतंत्रीय संविधान मात्र एक अध्यादेश से या संसद के कानून से तानाशाही के संविधान में नहीं बदला जा सकता। अगर बदला जा सकता है तो भारत की जनता के द्वारा ही। विशेष रूप से इसी निर्णय के लिए नयी संविधान सभा का चुनाव हो तो उसके द्वारा जनता की यह घोषणा हो सकती है। संविधान पर हस्ताक्षर हुए एक चौथाई शताब्दी बीत गई। अगर आज तक न्याय स्वतंत्रता समता और भाईचारे की प्राप्ति सभी नागरिकों को नहीं कराई जा सकी है तो दोष संविधान और लोकतंत्र का नहीं है बल्कि कांग्रेस पार्टी का है जिसकी दिल्ली में इतने वर्षों से लगातार सत्ता रही है। इस विफलता के कारण ही जनता में और युवकों में इतना असंतोष है। असंतोष का इलाज दमन नहीं है। उल्टे दमन विफलता को कई गुना बढ़ा देता है।

वैसे मैं देखता हूं कि आजकल अखबार नई नीतियों नये अभियानों और नये उत्साह की खबरों से भरे रहते हैं। जाहिर है कि आप खोए हुए समय की कमी पूरी करने की कोशिश कर रही हैं यानी जो काम आप नौ वर्षों में नहीं कर सकीं उसे करने का दिखावा अब कर रही हैं। लेकिन आपके २० सूत्रों की वही गति होगी जो पहले १० सूत्रों और स्फुट विचारों (स्ट्रे थाटस) की हो चुकी है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं, इस बार जनता बेवकूफ नहीं बनेगी। एक दूसरी बात का भी विश्वास दिलाता हूं। स्वार्थियों व रीढ़ के अवसरवादियों और जी हुजूरों की पार्टी—दुख है कि कांग्रेस ऐसी ही बन गई है—कभी कोई सार्थक काम नहीं कर सकती। (कांग्रेस के सभी लोग ऐसे नहीं हैं। इने गिने अपवाद हैं। कुछ को सदस्यता समाप्त कर दी गई है और कुछ दबकर लिए गए हैं। यह तानाशाही का धर्म है कि पार्टी के भीतर भी आलोचना का अधिकार नहीं रह जाता।) प्रचार बहुत होगा कागज पर घोड़े खूब दौड़ाए जाएंगे लेकिन

सर ज़मीन पर स्थिति जैसी है वसी ही बनी रहेगी। गरीबो की हालत—देश के अधिक भागो म उन्ही का प्रबल बहुमत है—पिछले वर्षो म लगातार बिगडती ही चली आ रही है। यह भी काफी होगा कि और अधिक न बिगडे। लकिन उसक लिए आपको राजनीति और अथनीति क प्रति अपना पूरा दृष्टिकोण बदलना पडेगा।

मैंने ऊपर जो कुछ लिखा है पूरी स्पष्टता क साथ लिखा है चबा-चबा कर बात कहने की काशिश नही की है। मैंने एसा गुस्से म नहा किया है या इस नीयत से भी नहा किया है कि शब्दो म आपकी बराबरी करू। नहा, वसा करना अपनी बेबसी और कमजोरी दिखाना होता। मैं ऐसा इसलिए भी नही लिख रहा हू कि मुझे अहसास नही है कि मेरे स्वास्थ्य का कितनी चिंता रखी जा रही है। मरी यही काशिश है कि नगा सत्य आपक सामन रख दू जिसे आप ढकती और ताडती मरोडती रही हैं।

यह मेरा कतव्य था जा सुखद नही था फिर भी मैंने पूरा किया। अब सलाह और नसीहत स कुछ शब्द कहकर समाप्त करू। आप जानती है कि मैं बूढा हो गया हू। मेरी जिन्दगी का काम पूरा हो चुका है। प्रभा के जाने के बाद अब क्या है कौन है जिसके लिए जीऊ? भाई और भतीजे का अपना परिवार है और छोटी बहन के लडके-लडकिया है—बडी बहन तो बरसो हुए मर चुकी। शिक्षण समाप्त करन क बाद म लेकर अब तक मैंने अपना पूरा जीवन देश की सवा म लगाया है और बदले म कभी किसी चीज की कामना नही की है। अब मैं पूरे सताष के साथ एक कैदी की हैसियत मे भी आपके शासन म मर सकता हू।

क्या आप एस मनुष्य की सलाह सुनेंगी? कृपा करके उस नीव को मत बर्बाद कीजिए जिस राष्ट्रपिता ने और आपके उच्चमन पिताजी न डाला था। आप जिस रास्त पर चल रही हैं उस पर दुख और सघष के सिवाय दूसरा कुछ नही है। विरासत म आपको एक महान परम्परा ऊचे मूल्य और क्रियाशील लोकतत्र मिला था। अपने बाद के लिए बस इनका ध्वसावशेष मत छोड जाइए। इन सबको दोबारा जुटाने सवारन म बहुत दिन लग जाएग। इसम मुझे जरा भी शक नही है कि ये चीजें दोबारा तो आएगी ही। जिस जनता ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद स सघष किया और नीचा

न्खाया, वह तानाशाही की शम और अपमान को हमेशा क लिए नही वर्दाश्त कर सकती। मनुष्य की आत्मा पर विजय नही पाई जा सकती, दमन उसका चाह जितना किया जाए। आत्मा कब्र स खडी होगी। रूस म भी दबी हुई आत्मा धीरे धीरे ऊपर आ रही है।

"आपन 'सामाजिक लोकतत्र (सोशल डमाक्रेसी) की बात कही है। इन शब्दो स न्मिाग के सामन कितना सुन्दर चित्र खिंच जाता है ? किन्तु आपने पूर्वी और मध्य यूरोप म दखा है कि वास्तविकता कितनी कुरूप है। नगी तानाशाही और अत म रूस का आधिपत्य—यही स्थिति है। कृपा कीजिए भारत को ढकेलकर उस भयकर दुर्दिन की ओर मत ले जाइए।

'क्या मैं पूछ सकता हू कि य कठोर, क्रूर कदम किस लिए उठाए गए हैं ? क्या सिर्फ २० सूत्री कायक्रम को अमल म लाने के लिए ? पहल क १० सूत्रो पर अमल करन से आपको किसने रोका था ? सारा असतोष विरोध सत्याग्रह था ही इस कारण कि आपन कायक्रम पर—यद्यपि वह बहुत अपर्याप्त था—अमल नही किया ताकि उस कष्ट और बोझ म कुछ तो कमी आता जिसके नीचे जनता और युवक कराह रह थ। यही बात तो चद्रशेखर, मोहन धारिया कृष्णकात और उनके मित्र कहत रह हैं जिसके लिए उन्ह दड मिला है।

'आपन कहा है कि दश मे दिशाहीनता' आ गइ थी। लेकिन क्या दिशाहीनता विरोधियो के या मेरे कारण आई ? दिशाहीनता आई आपके अनिणय क कारण इस कारण कि आपम खुद कोई न्शिा तय करन और उसम चलने की प्ररणा नही थी। आप उसी समय तेजी के साथ और नाटकीय ढग से चलती दिखाई देती हैं जब आपकी व्यक्तिगत स्थिति के लिए खतरा पैदा होता है। खतरा टल गया तो फिर वही ढीलमढील और न्शिाहीनता आ जाती है। प्रिय इन्दिराजी, अपने को ही देश मत मानिए। अमर आप नही भारत है।

आपन विरोधियो पर और मेरे पर हर तरह की बदनामी थोपी हैं। लकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हू कि अगर आप सही कदम उठाए—जसे २० सूत्री कायक्रम, मत्रिया क स्तर पर भ्रष्टाचार चुनाव सबधी सुधार आर्थिक सबध म—और विरोध पर भरोसा करें और उसकी सलाह

पर ध्यान दे तो हम सब लोग खुशी से आपके साथ सहयोग करगे। उसके लिए लाकतत्र को समाप्त करन की क्या जरूरत है ? अगला कदम आप ही उठा सकती है। आप सोच ल।

इन शब्दो के साथ विदा। ईश्वर आपका साथ दे।

जयप्रकाश नारायण"

आधी रात से काली रात

दिल्ली म २५ जून की आधी रात को पहली गिरफ्तारी जयप्रकाश की हुई। उस रात पूरे देश मे पहले गिरफ्तारियां हुइ फिर आपात स्थिति लगी। पर कबिनेट द्वारा इसकी पुष्टि २६ जून को सुबह छ बजे हुई और प्रधान मत्री ने उसकी घोषणा रेडियो स सुबह आठ बजे की।

घोषणा सुनकर लोग बस एक-दूसरे का मुह देखा लग थे। उन्ह कतई पता या अनुभव ही नही था कि यह क्या चीज है ? उन्हें इसका अनुमान और पता धीरे धीरे हुआ। जैसे-जसे सचाई अनुभव स गुजरती गई, वसे वस खामोशी बढती गई।

२६ जून सुबह छ बजे कबिनेट की मीटिंग श्रीमती इन्दिरा गाधी के निवास स्थान पर--इसकी कभी किसीन पहले कल्पना भी नही की थी। सुबह सात बज से पहले कभी किसी मत्री की नीद खुलने का कोई सवाल ही नही था। सुनत हैं लोग जबरन नींद से उठाए गए और वे जो कपडे पहन थे उन्ही म सीधे प्रधान मत्री के घर लाए गए। अधिकतर उस हड बडाहट म नग पैर भागे आए थे। कोई बटन बद करत हुए कार से बाहर निकला कोई भीतर ही भीतर 'राम राम कह रहा था।

क्योकि किसीको कुछ भी पता नही था। प्रधान मत्री के अलावा जिन तीन व्यक्तियों को पता था उनम से एक पिछले कमरे मे बडे चन से सो रहा था, दूसरा हेलीकोप्टर स हरियाणा और दिल्ली के आसमान पर उड रहा था और दूरबीन से बाहर देख रहा था। तीसरा वायुयान से कलकत्ता से दिल्ली आ रहा था।

वह कबिनेट मीटिंग अपूव थी। कवल तीन मिनट की। एक मिनट लगा चुपचाप, बिना कुछ जान पूछे समय (विरोध करन की बात कहा थी ?) उस कागज पर हस्ताक्षर करन मे। एक मिनट लगा सिफ इतना कहन और सुनन म कि अब आप लोग जा सकते है और तीसरा मिनट लगा प्रधान मत्री को सलाम करन म।

हतप्रभ दो बुजुर्ग मंत्री बाहर बरामदे में पड़ी कुर्सियों पर बैठ गए। न कहीं जाने की इच्छा हो रही थी न इतना साहस ही रह गया था कि एक दूसरे से कुछ पूछें, कुछ बात करें। वे भी चुपचाप मुंह देखते रह गए और आंखों-आंखों में ही कुछ जान गए। वे जान गए जो गत अठाईस वर्षों के कांग्रेसी राज में उनकी कीमत थी। कीमत अब पूरी तरह से जनता अदा करे, हम अब 'राज' करेंगे।

नसबंदी इसी 'राज' का राजतिलक समारोह था। अनुशासन पर्व इसी राज की सजावट थी। मीसा इसी राज की विषकन्या थी। 'समाचार' इसी राज की कुटनी थी। 'बुलडोजर' इसी राज की सलामी थी।

घर लौटकर लोग मुंह हाथ भी नहीं धो पाए थे (आज बैंड टी से नींद नहीं खुली थी) कि फिर फरमान आया कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक का। सब भागे।

उस बैठक की कारवाई तीन घंटे तक चलती रही। बैठक के दौरान कांग्रेस कार्यालय पर पुलिस का सख्त पहरा था। मुख्यतः आर्थिक मुद्दों पर ही श्रीमती गांधी बहुत ज़ोर ज़ोर से बोलती रहीं। कांग्रेसाध्यक्ष श्री बरुआ ने काफी तालठोंक जबान में सूचना दी कि उन्होंने श्री चन्द्रशेखर, मोहन धारिया लक्ष्मीकान्तम्मा रामधन और शम्भुनारायण मिश्र को कांग्रेस कार्यकारिणी से मुअत्तल कर दिया है। राजविदूषक वाली मुखमुद्रा से कहा, 'आपातकालीन स्थिति की घोषणा से देश की परिस्थितियों में गुणात्मक परिवर्तन आ गया है। कांग्रेस पार्टी को चाहिए कि अब आर्थिक कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने के लिए अधिकाधिक सक्रिय हों।'

१ जुलाई को इन्दिरा गांधी ने बीस सूत्री कार्यक्रम घोषित किया।

दिल्ली के ४७ संपादकों ने ६ जुलाई को प्रधान मंत्री, इन्दिरा गांधी द्वारा हाल में उठाए गए सभी कदमों में अपनी आस्था व्यक्त की जिनमें समाचारपत्रों पर लगा 'सेंसर' भी शामिल है। अखिल भारत समाचार-संपादक सम्मेलन के दो भूतपूर्व अध्यक्षों—श्री अक्षयकुमार जैन (नवभारत टाइम्स) और श्री रणवीर (मिलाप)—तथा ४५ अन्य संपादकों ने श्रीमती गांधी को दिए गए ज्ञापन में कहा कि सेंसर में किसी तरह की ढील देना

लोकतन्त्र धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद म आस्था रखने वाले सभी व्यक्तियो के लिए और भी ज्यादा खतरनाक होगा।'

पाचवी लोकसभा का अब तक का सबसे अल्पकालिक अधिवेशन था—२१ जुलाई को आरभ हुआ और २८ जुलाई को समाप्त। मुख्य काम सविधान के अनुच्छेद ३५२ की व्यवस्था के अनुसार दोनों सदनो द्वारा आपातकालीन स्थिति की घोषणा की सपुष्टि थी। इस बार प्रश्नोत्तर काल, स्थगन प्रस्ताव की नोटिसो तथा जीरो आवर' म उठाए जाने वाले मुद्दे कार्यसूची म शामिल नही किए गए। दशक-दीर्घा बिलकुल सूनी थी। किसीको प्रवेश नही मिला।

वही होगा जो उसकी इच्छा है

—वह कौन है ?

—इदिरा गाधी।

—इदिरा गाधी क्या है ?

—भारत।

—भारत क्या है ?

—इदिरा।

उस राज दरबार म राज विदूषक प्रजा का मनोरजन कर रहा था, ऐसा प्रजा समझती है। नही प्रजा अब जनता हो गई थी। वह सब कुछ समझ रही थी और सब कुछ देख रही थी।

नहा, जो मैं चाहू वही देखे प्रजा। उसकी इसी इच्छा की पूर्ति का पहला कदम था, पहली अगस्त से राजस्थान, मध्य प्रदेश बिहार उडीसा आध्र और कर्नाटक के चुने हुए २० जिलो के २,४०० गावो म कुल ३५ लाख जनता के लिए खास तौर पर तैयार दूरदर्शन कार्यक्रम दिखाया जाना। खेती आरोग्य शिक्षा परिवार नियोजन और सास्कृतिक एकता ये हैं इन कार्यक्रमो के विषय।

७ अगस्त को सविधान (३९वा) सशोधन विधेयक पारित करने के बाद लोकसभा का अधिवेशन अनिश्चित काल के लिए स्थगित।

८ अगस्त, उत्तर बिहार म भयकर बाढ। इदिरा का कोप।

—धत्त ! हर बात मे उसीका नाम।

—वही है चारा ओर बबुआ हो !

—क्स ?

—और कही कुछ नही लोक्त।

—अच्छा।

—हूँ।

—बम बस भइया चुप। चौप्प !

११ अगस्त का सुप्रीम कोर्ट न फमला दिया—प्रधानमत्री की चुनाव याचिका पर सुनवाइ २५ अगस्त तक स्थगित।

१७ अगस्त से केन्द्रीय जाच ब्यूरो (सी० बी० आई०) द्वारा वरिष्ठ अधिकारियो के मकानो का सर्वेक्षण काय शुरू हुआ। माथ ही इनकम टक्स के अधिकारिया द्वारा लागा की सम्पत्ति पर घरा पर छाप डालन शुरू हुए।

—यह सब इतना काला धन कहा स आया ?

—बताऊ ?

— शट अप।

फिर वही चुप्पी।

लाकम पर छाप। जिस घर म अधिकारी जब चाह घुसकर तलाशी ले रहे है।

—यह क्या है ?

—सुनिए

—खबरदार !

सब थरथर काप उठे।

—क्या मचमुच पकड पकडकर थान काट जा रह है ?

—*नही भाइ व खबरें दूसरे राज्या की हैं दिल्ली म ऐसा नहा हो रहा है।*

—कोइ कह रहा था यहा भी शुरू हो गया है।

—फिर तो पता नही।

अखबारो म यह खबर जरूर पढने को मिली थी कि करल हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति ने दो वकीला की याचिका नामजूर कर दी जो राज्य के मुख्य

सचिव और पुलिस के इंस्पेक्टर-जनरल की बाबत थी कि वे लोगों को मनमानी सजा देते हैं और उनके बाल काट देते हैं। वे अदालत से अपने केशों की सलामती चाहते हैं।

—ऐ लौंडे ! दाढ़ी मूंडता है या नहीं ?

—सरकार

—चल बे !

उस दिन दिल्ली के सकड़ों हज्जाम जो सड़कों के किनारे गली कूचों में घूम फिरकर नाई की रोजी रोटी कमाते थे, उन्हें पकड़ लिया गया—जवानों की दाढ़ी मूंडने के लिए, फिर बाद में पता चला वे हज्जाम जेल भेज दिए गए जेल में मीसा बंदियों की मूंछ दाढ़ी मूंडने।

आपात् स्थिति

२६ जून १९७५ को देश में अचानक जो आपात स्थिति लागू हुई उसका स्वरूप और चरित्र क्या था ? वह चीज क्या थी ?

अनुभव तो सभी ने किया। हर स्तर के आदमी हर तरह के समाज और पूरे देश ने। खासकर समस्त हिन्दी क्षेत्र और दिल्ली पंजाब हरियाणा, राजस्थान मध्य प्रदेश गुजरात बंगाल ने, और सबसे अधिक दिल्ली ने उसे भोगा।

जिस तरह में यह इमरजेंसी तानाशाही का भारतीय माडल था उसी के अनुरूप उसका माडल कार्यक्षेत्र दिल्ली और समूचा हिन्दी क्षेत्र था।

१८५७ में यही क्षेत्र था १९४२ में यही क्षेत्र था और अब १९७५ में भी यही क्षेत्र था। यहीं सबसे अधिक कड़ाई से प्रेस पर प्रतिबंध लगाया गया। जनता के मौलिक अधिकार छीन गए। भयंकर ढंग से नसबन्दी हुई। आतंक के जितने उपाय हो सकते हैं सबके प्रयोग यहीं हुए। लाखों लोगों को सींखचों के अंदर बंद कर दिया गया। एक अजब तानाशाही थोप दी गई।

इतना आतंक और भय क्यों फैलाया गया ? सिर्फ इसीलिए नहीं कि श्रीमती गांधी सत्ता की कुर्सी पर बैठी रहें बल्कि मुख्य रूप से इसलिए भी कि जो जन आंदोलन प्रजातांत्रिक मूल्यों और अधिकारों के लिए हिन्दी

क्षेत्रा से उठकर पूरे दश म फैलता जा रहा था और बहुत तजी से जो सम्पूण क्राति की शक्ल लेने जा रहा था उसका बुनियाद को ही खत्म कर दिया जाए। जे० पी० क विचार एव लोक-सघष स मजबूत होत हुए सगठना को ही दफना दिया जाए।

वह राजशक्ति द्वारा लोकशक्ति को नष्ट करन का एक बहुत ही गहरा षडयत्र था। जून स लेकर अगस्त तक दश म लाखो लोगो का गिरफ्तार कर दश की जनता म आतक फैलाने का उद्दश्य तो इस तानाशाही सरकार का था ही साथ ही साथ वह दश म भीतरी और बाहरी सकट का हौवा खडा कर जनता म भ्रम पदा कर उस अपनी शरण म लेन का भी उपाय था ताकि जनता यह समझे कि देश म भीतरी और बाहरी जो सकट खडा हुआ है उसे सरकार ही हल कर सकती है और दश म आपात स्थिति की घोषणा कर जो दमन की कारवाई हुई है वह उसी सकट से निपटन के लिए की गई है तथा यह दमन की कारवाई भी देश और समाज क शत्रुओ के साथ हुई है। यही कारण है कि समाचारपत्रो म गिरफ्तार आदोलन कारियो क नाम और सख्या की जानकारी नही दी गई। अगर कोई तस्कर पकडा गया चोर बाजार का माल जब्त किया गया घूसखोर इसपेक्टर सस्पेंड किया गया या किसी निकम्म अफसर का समय स पहल पेशन दे दी गई तो उसका खूब ढिंढोरा पीटा गया। स्वभावत एम लोगो के विरुद्ध कारवाई का जनता ने स्वागत और समथन किया।

इस शक्ति के खिलाफ जलो के सीखचा क भीतर से भूमिगत लोगा से आवाजें उठी ता असलियत का पता चला कि हमारी प्रधान मत्री बहुत ही निमम महिला है। उन्हाने तानाशाही का भारतीय माडल तयार किया है। एक तरफ सामान्य जन के जीवन म पुलिस का हस्तक्षेप नही दूसरी तरफ इन्दिरा की तानाशाही का सक्रिय विरोध करने वालों मुक्ति चाहन वाले गरीब तथा किसान मजदूरो के सामाजिक-आर्थिक शोषण के खिलाफ आवाज उठान वाला को सेना की नगी बबरता का सामना करना पड रहा है उन्ह जेल की सीखचो म बद किया जा रहा है उल्टा लटकाकर पीटा जा रहा है पशाब पीन के लिए मजबूर किया जा रहा है एक-दूसरे की जननेद्रिया को मुह म रखने के लिए क्रूर व्यवहार किया जा रहा है। उनकी मा बहनो

के साथ अमानुपिक व्यवहार किया जा रहा है—एक तरफ ससद चल रही है मसदीय प्रणाली के औचित्य की दुहाई दी जा रही है दूसरी तरफ विपक्ष क नेता जेल म नज़रबद हैं और मजबूर होकर इस्तीफा दे रहे हैं ससद म कायवाही हा रही है। उसका पूण विवरण भी समाचारपत्रा म प्रकाशित नही किया जा रहा है। एक तरफ गरीबी हटाओ' के नारे की तरह २० सूत्री आर्थिक कायक्रम का धुआधार प्रचार हो रहा है गरीब किसान मजदूरा को आर्थिक स्थिति म परिवतन की दुहाई दी जा रही है, वड बडे उद्योग घरान दश के शापक उनक २० सूत्री आर्थिक कायक्रम का स्वागत कर रहे है (क्या उनका हृदय परिवतन हो गया ?) मजदूरो क बोनस और हड़ताल के अधिकार को जब्त कर लिया गया है। मजदूरा और मजदूर नताओ को इदिरा के घोपित युवराज सजय के गुण्डों एव सेना से पिटवाया जा रहा है मौत के घाट उतारा जा रहा है।

तानाशाही के इस भारतीय मॉडल की विशेषताए हम अच्छी तरह समझनी चाहिए। इस तानाशाही क रचयिता अच्छी तरह जानते हैं कि कवल सरकार के दमन से कोई क्रातिकारी आदोलन जिसन जन-जीवन के वुनियादी सवाल उठाए है हमेशा क लिए नही दवाया जा सकता। इसलिए सपूण क्राति को समाप्त करने की शक्ति सरकार के साथ-साथ ममाज क अन्दर मे भी निकलनी चाहिए एसी स्थिति पदा हानी चाहिए कि मपूण क्राति समाज के दिलोदिमाग से ही निकल जाए और वह खुशी-खुशी मरकार क पीछे-पीछे चलन लग। सरकार की दष्टि म अनुशासन का यही अथ है। इस दृष्टि से दमन क अलावा दो काम और किए जा रहे हैं—एक सगठन और दूसरा प्रचार धुआधार प्रचार।

रिक्शा चालक गरीब किसान से लेकर ऊपर तक लोगो न महसूस किया—आज इन्दिरा सरकार बहुत प्रगतिशील बन गई दिखती है। लेकिन यह जानना चाहिए कि हर तानाशाही सरकार झूठ और दमन पर टिकी रहता है। लोग सोचन लगे, सत्ताधारियो की तरफ स आज ममाजवाद' का नारा बहुत जोरो स लगाया जा रहा है लेकिन यह कोई नई बात नही है। हिटलर न भी 'समाजवाद' म अपना विश्वास प्रकट किया था और २५ सूत्री आर्थिक कायक्रम चलाया था। वर्षो पूव मुसोलिनी भी क्या एक

'समाजवादी' नहीं था ? इन समाजवादों का एक ही अर्थ होता है—फासिज्म ! और फासिस्टवादी सरकार देश के मिल मालिकों और पूंजीपतियों से प्राप्त धन की आधारशिला पर खडी होती है। लोकसभा में पारित एक बिल के अनुसार अब तालाबन्दी पूर्ण बंदी और मज़दूरों की छटाई करने के पहले मालिकों को निर्धारित सूचना देकर तथा केन्द्र या राज्य सरकार से आज्ञा प्राप्त करना आवश्यक हो गया है। उस बिल में कांग्रेसी सरकार द्वारा मिल मालिकों को ऐसी अनुमति देने के पहले कांग्रेस दल को एक लम्बी रकम वसूलने का रास्ता और साफ कर दिया है। लोग देखने लगे—अब सरकार और मिल मालिक आपस में साठ-गाठ कर मजदूरों का दोहरा शोषण करेंगे और मज़दूर इस शोषण के खिलाफ हडताल नहीं कर सकेंगे। मज़दूरों के हित के नाम पर ही सरकार ने उनका अधिकार (हड़ताल और बोनस का) छीन लिया है। ऐसा कहकर किसी का शोषण करना आसान भी हो जाता है।

आपात स्थिति से पहली बार आधुनिक भारत को अपने अनुभवों से तानाशाही की कुछ सच्चाइयों का पता चला।

तानाशाही के लक्षण और उसके काम करने के साधन एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। तानाशाही का प्रमुख साधन या हथियार भय है। तानाशाह समाज में भय और आतंक का वातावरण बनाकर अपना स्थान मज़बूत बनाता है। बीसवीं सदी की तानाशाही अपनी ही प्रजा को भयभीत और आतंकित कर देने की कला में पराकाष्ठा पर पहुंच गई है। उसके लिए अनेक प्रकार की पुलिस व्यवस्था अर्धसैनिक व सैनिक संगठनों और अनेक ढंग से गुप्तचर संस्थाओं का इस्तेमाल करती है। वह कैदियों और दुश्मनों को दंडित करके भय के वातावरण को और मज़बूत बनाता है। मनुष्य पहले कभी जिस क्रूरता की कल्पना भी नहीं करता था उस हद का क्रूरता तक वह इन सजाओं द्वारा पहुंच गया। जेलों में दी जाती सकने अमानुषी सजाएं का सट्रेशन कम्पस जहरीली कोठरियां या साइबेरिया की ठिठरती ठंड में पानी की खुराक पर कड़ी मजदूरी करवाना ये उन सजाओं के कुछ नमूने मात्र हैं। इन सजाओं का एक दूसरा प्रकार है कैदियों को तरह-तरह के रसायन पिलाकर अंधेरी कोठरी में एकान्तवास में रखकर या उन पर

तेज़ रोशनी डालकर उन्हें विक्षिप्त बना देना। इस सदी के तानाशाहों ने विज्ञान का भरपूर उपयोग अमानुष बनने में किया है।

तानाशाह का दूसरा प्रमुख साधन है भ्रम। कितना भी दबंग तानाशाह हो प्रजा के समर्थन के बगैर वह टिक नहीं सकता। इसीलिए जन समर्थन प्राप्त करने के लिए उसे जनता को भ्रम में रखने के तरह तरह के प्रयत्न करने पड़ते हैं। ज्यादातर तानाशाह अपने कार्यकाल के प्रारंभ में किसी न किसी प्रकार का आर्थिक कार्यक्रम लोगों के सम्मुख रखते देखे गए हैं। हिटलर मुसोलिनी और स्तालिन ने इस प्रकार के कार्यक्रम चालू किए थे। इसके मूल में देश को आर्थिक रूप से स्वायत्त करने की भावना के साथ साथ स्वयं जनता का कल्याण करने वाला तारक है ऐसा भ्रम पैदा करने की भावना भी उसके मन में काम करती है। जैसे-जैसे ये आर्थिक कार्यक्रम लागू करने की बात आगे बढ़ती है वैसे-वैसे पहली भावना से दूसरी भावना ज्यादा प्रखरतर होती देखी जाती है। और इसीलिए देश ही तानाशाह और तानाशाह ही देश है' वाला सूत्र अंत में गूंजने लगता है। लाखों लोगों के मन में देश एक अमूर्त वस्तु होती है जबकि तानाशाह साक्षात मूर्त रूप में होता है इसलिए भोली भाली जनता देशभक्ति के बदले धीरे धीरे तानाशाह-भक्ति करने लगती है। इसीमें तानाशाह की रुचि होती है।

तानाशाह भ्रम के हथियार का कई तरीकों से प्रयोग करता है। कभी वह ऐसा भ्रम पैदा करता है कि वह हर वक्त देश के सबसे दलित व्यक्ति के साथ रहता है जबकि वास्तविकता यह है कि वह हमेशा दलितों का समर्थन खोजता रहता है। कभी ऐसा भ्रम पैदा करने की कोशिश में लगा रहता है कि उसकी व्यवस्था वैज्ञानिक प्रगति के लिए आवश्यक है। जबकि चाहे तानाशाह रहे चाहे न रहे विज्ञान तो आगे बढ़ता ही रहेगा। कभी-कभी तानाशाह धर्म की रक्षा के लिए या संस्कृति के उद्धार के लिए काम करते हैं ऐसा भ्रम पैदा करने की कोशिश करते हैं जबकि तानाशाही स्वभावतः मानव धर्म और मानवीय संस्कृति के खिलाफ ही होती है। कभी तो तानाशाह स्वयं को भ्रष्टाचार दूर करने वाला प्रदर्शित करना चाहता है लेकिन वह भूल जाता है कि जो व्यवस्था स्वयं एक भ्रष्टाचार है, उसके मातहत भ्रष्टाचार निवारण की प्रक्रिया देर तक नहीं टिक सकती।

अपने बारे में भ्रम बढ़ इसलिए वह कभी अपनी पकड़ को ढीली करके लोगों को यह दिखाने की कोशिश करता है कि अब वह काफी उदार हो गया है। परन्तु ऐसी उदारता क्षणभंगुर होती है।' लोगों के मन में जैसे ही यह भ्रम घर कर लेता है वह अपना लगाम पुनः खींच लेता है।

तानाशाह का दूसरा एक हथियार है द्वेष। फूट डालकर राज करने का साम्राज्यवादी सूत्र तानाशाह का देश के आंतरिक प्रश्नों से निपटने में मदद रूप हो जाता है। इस काम के लिए वह द्वेष के साधन का उपयोग करता है। किसी स्थान पर यह जाति विशेष के प्रति द्वेष के रूप में प्रगट होता है। कभी यह किसी वर्ग विशेष के प्रति द्वेष के रूप में प्रकट होता है। इस प्रकार के द्वेष की चरम सीमा प्रकट हुई थी जब हिटलर ने साठ लाख यहूदियों की हत्या की और स्तालिन ने कुलाक जाति को जड़ से नस्तनाबूद किया। इसका अभी का उदाहरण मिलता है पाकिस्तान में हाल में हुई अहमदिया जाति वालों की बड़ी संख्या में की गई हत्याएं।

तानाशाहों का एक विदित अस्त्र है देश पर संकट है ऐसा माहौल खड़ा करना। कहीं यह मजहब खतरे में है के रूप में प्रकट होता है। कहीं यह साम्राज्यवादी देश अपने देश को खत्म करने की योजना बना रहे हैं के सूत्र में प्रकट होता है तो कहीं वह प्रतिक्रान्ति के भय के रूप में प्रकट होता है। मानव समाज जब भयभीत हो जाता है। झूठा भय खड़ा करके फिर अपना ही सहारा देना तानाशाह का यह तरीका जाना हुआ है। हर शासक इस तरीके का प्रयोग कमोबेश रूप में करता है। तानाशाह के हाथ में ये तरीके और ज्यादा क्रूर बन जाते हैं।

जेल से छूटकर २३ मार्च १९७६ को उत्तर प्रदेश विधानसभा में विरोधी दल के नेता चौधरी चरणसिंह ने जो भाषण दिया वह एक ऐसा साक्ष्य है जिससे आपात् स्थिति का सजीव चित्र हमारे सामने प्रस्तुत होता है

"रोजाना क्या किस्सा होता था कि पहले मैं बरेली की बात सुनाता हूं। वहां पर रमेश आनन्द नाम का एक छात्र था जो एम० एस-सी० फर्स्ट ईयर (मथमटिक्स) का विद्यार्थी था जिसकी उम्र २३ वर्ष थी। उसे २० अक्तूबर १९७५ को घर से सर्किल इंसपेक्टर कोतवाली ने बुलाया और सायं ६ बजे से रात्रि २ बजे तक उसको पीटा गया। दोपहर २ बजे बंदी

बनाया गया। ४ बजे एक दूसर लडके वीरेन्द्र अटल को घर स लाया गया और ४ बजे से ही दोनो स एकसाथ पूछ-ताछ शुरू की गई। साइक्लोस्टाइल मशीनों के बारे मे गालिया की बौछार करत हुए उनसे पूछा गया। उत्तर बतान से इकार करने पर उनको पीटना शुरू किया गया बाद म जिलाधीश श्री माताप्रसादजी भी आ गए। उनको देखकर पीटन वाला की हिम्मत और बढ गई। बजाय कम होन के और क्षमा याचना का रवया अख्तियार करने के डी० एम० की आख बतला रही थी कि ठीक कर रह हो और उह रस्सी से हाथ बाधकर पीटना शुरू कर दिया गया। पीटत पीटत ४ बेंत तोड डाले गए परन्तु दोनो म से किसीन भी अपना मुह नहीं खोला। यह देखकर हाकिम राय इसपक्टर का क्रोध और भडक गया। डी० एम० का खुश करन का उसे अच्छा मौका नजर आया। अतएव उसन बिजली के पिलास से रमेश आनन्द के हाथ का अगूठा बडी क्रूरता से दबाया खून की धार बह चली। इसके बाद अगुली दबाई और बहुत ही बेजा बेजा गालिया दी। इसके बाद उसने एक एक करके वीरेन्द्र अटल के हाथ की अगुलिया को लहूलुहान कर दिया और कहा, सब नाखून खीच लूगा नही तो बताओ, कहा रहता है प्रचारक कहा होता है साइक्लास्टाइल आदि। जब नाखूना को पिलास स दबाने पर वे कुछ भी नहीं कर पाए तो जमीन पर, मौजूदा गवनमट स मतभेद करने की वजह से पटक दिया गया और पैर ऊपर करके बतों स इतनी पिटाई की गई कि तीन बेंत और टूट गए। दोपहर से लेकर अगली दोपहर तक चाय भी नहीं दी गई भोजन तो दूर रहा। २९ अक्तूबर को दोपहर पल्ल चलाकर और हथकडी डालकर जेल भेज दिया गया। जल म सब बन्दियो की माग पर २९ अक्तूबर १९७५ की रात मे ही दोनो की डाक्टरी जाच हुई जिसम प्रत्येक के शरीर पर चोट दज की गई। इतना घोर अमानुषिक अत्याचार किया गया।

चेतराम को तो इतना मारा गया कि पिटते पिटत उनकी मृत्यु ही हो गई। इनका फोटो भी मौजूद है। इनकी कहानी सुन लीजिए। व्यवसायी, उम्र ४० वष काली बाडी बरेली २३ नवम्बर १९७५ को सत्याग्रह थाना सर्किल के इस्पेक्टर श्री रणविजयसिंह द्वारा पिटाई और मृत्यु। २३ नवम्बर १९७५ को चेतराम ने अपने एक साथी शिवनारायण क साथ

सत्याग्रह किया। थाना सविल के इन्सपेक्टर, श्री रणविजयसिंह ने थाने ले जाकर लात घूसा और डंडों से बहुत पिटाई की जिससे चेतराम के शरीर में बहुत मार्मिक चोटें आई। बाद में उन्हें जिला जेल बरेली भेज दिया गया जहां चिकित्सा का कोई प्रबन्ध नहीं किया गया। इस प्रकार भारी चोटों की असहाय पीड़ा के कारण १२ दिसम्बर को उन्होंने शरीर छोड़ दिया और शहीदों में अपना नाम लिखा लिया। तानाशाही के नग्न नाच का यह एक नमूना है। ज्ञानेन्द्र देव छात्र बी० एस-सी० फर्स्ट ईयर बरेली कालेज उम्र १६ वर्ष उनका एक दूसरा साथी था जिसकी उम्र २२ वर्ष था और एक अध्यापक तीसरा। इन तीनों लोगों ने बरेली कालेज में एक साथ सत्याग्रह किया। थाना बारादरी के इन्सपेक्टर श्री शलेन्द्रनाथ खोसला ने थाने में जाकर उनकी बहुत पिटाई की और उनसे तरह-तरह पूछताछ की। पर इन लोगों ने कुछ नहीं बताया। इन्हें मारकर उन्हें जेल भेज दिया गया। विश्वबन्धु नाम के एक अन्य साथी भी थे।

अब जिला पीलीभीत के उत्पीडन की बात सुनिए। पीलीभीत में पुलिस शासन ने अपना आतंक फैला रखा था। वहां के पुलिस इन्सपेक्टर श्री गौड और श्री तिवारी ने घोषणा कर रखी थी कि पीलीभीत में सत्याग्रह नहीं होगा। अब इसको साबित करना था कि सत्याग्रह नहीं हुआ। परन्तु सत्याग्रह हुआ और सत्याग्रहियों की बेरहमी से पिटाई की गई।

आगरा डिवीजन की पिटाई सबंधी बहुत सी घटनाएं हैं लेकिन केवल दो सुनाता हूं। एक डाक्टर है अलीगढ़ के श्रीनिवास पाली। उन्हें उनके घर से पकड़ा गया और पुलिस स्टेशन पर ले जाकर वहां उन्हें एक दरख्त पर पैर ऊपर करके लटका दिया गया, पैर ऊपर सिर नीचे और इस तरह उनको दो दिन तक पीटा गया। एक लड़के को तो लाठी की छड़ से पीटा गया। २८ नवम्बर को श्री तर्जसिंह तथा उनके साथी को जो अतरौली के रहने वाले थे पुलिस लाइन अलीगढ़ में ले जाकर पीटा गया और उनको पीने के लिए पानी की जगह पेशाब दिया गया। एक बूढ़ा किसान ज्ञानसिंह था उसे इतना पीटा गया कि उसके दो दांत टूट गए। और इन सब लोगों से यह भी कहा गया कि तुम अपने जूतों से खुद अपने आपको पीटो या एक दूसरे के जूते से एक-दूसरे को पीटो। बालीसिंह नाम के एक व्यक्ति को

इतना पीटा गया कि २६ नवम्बर, १९७५ को जल में जाकर उसका इंतकाल हो गया। १८ १९ दिसम्बर को सत्याग्रह हुआ था।

इसी तरह से मथुरा में सिरोहा और डा० बी० चौधरी को बुरी तरह पीटा गया। पहली दिसम्बर को रामप्रसाद और उसके दूसरे साथी जो बनारसी पुल के रहने वाले हैं उनको बलदेव और त्यागी नाम के पुलिस अफसरों ने खूब पीटा। इतनी पिटाई की कि उनके मुह और नाक से खून बहना शुरू हो गया। एक पत्रकार का नाम है देवनन्दन कुरशिया। काफी लोग उनको जानते हैं। उनकी पिटाई की गई और तब तक पीटा गया कि आखिर बेहोश हो गए। बुलन्दशहर के कई मामले हैं लेकिन मैं उनको छोड़ देता हूं। लेकिन कानून अपनी जगह पर है। कानून के खिलाफ कुछ नहीं हो सकता। कानून के माने यह नहीं है कि नाखून खींच लिया जाए और पेशाब पिलाया जाए और लगातार पिटाई की जाए। यह बात नहीं है कि इसकी सूचना ऊपर के अफसरों को न हो। जेल से लोग छूटते थे और जेल के फाटक पर गिरफ्तार कर लिए जाते थे और दूसरे या तीसरे दिन मजिस्ट्रेट के सामने मुकदमा पेश हो जाता कि अमुक कोने पर ३० आदमी इकट्ठा थे और कह रहे थे कि गवर्नमेंट निकम्मी है। इस तरह फिर वह गिरफ्तार कर लिए गए। पुलिस का कहना था कि वह छूटते ही व्याख्यान देते थे। सेशन जज आर्डर करता तो उनको रिलीज (रिहा) करना पड़ता। फिर बाहर आए फिर केस बना दिया गया। एक व्यक्ति को तीन दिन हवालात में पुलिस ने रखा, क्योंकि पुलिस के आफीसर के यहां शादी थी। फिर वह मजिस्ट्रेट के सामने हाजिर किया गया। मजिस्ट्रेट ने अपनी मजबूरी जाहिर की और सजा का हुक्म सुना दिया। परन्तु मजिस्ट्रेट का कौन कहना। सुप्रीम कोर्ट के जज के साथ क्या बर्ताव नहीं किया गया? वहां जिस तरह के कन्फरमेशन (स्थायीकरण) और प्रोमोशन (पदोन्नति) होते हैं वह भी मिसाल है। १९७३ की बात है कि फैसला गवर्नमेंट के खिलाफ होता है। ३ न्यायाधीश उस फैसले के देने में शामिल थे। उन तीनों को सुपरसीड कर दिया जाता है। क्या वह नालायक थे यह नहीं बताया जाता है और एक जूनियर आदमी को चीफ जस्टिस मुकर्रर कर दिया जाता है। ज्यादा इनके बारे में नहीं कहना चाहता हूं।

केवल एक बात कहना चाहता हू कि जिस तरह सुपरसीड किया जाना है और ऐसे व्यक्ति को ऊपर रखा गया जो हर प्रकार से जूनियर था उसका असर पडना जरूरी है उसका असर न पडे मुश्किल है और पजाब हाई कोर्ट म भी यही हुआ कि एक सीनियर जज को जिसका सारा बार मारे वकील इज्जत करते है, सुपरसीड किया गया और नियुक्ति उस जज की की गई जिसका फसला गवनमट के माफिक हुआ करता था। मैं जजो क खिलाफ नही कहूगा। लेकिन फसला गवनमट के माफिक होता था इसलिए उनका प्रोमोशन हुआ। दिल्ली हाईकोर्ट के दो जज रगनाथन तथा अग्रवाल है। ऐसा इत्तिफाक कि इनके जजमट गवनमट क खिलाफ हो जाते हैं कुलदीप नयर जो स्टेटसमैन के सम्पादक रह चुके है विख्यात पत्रकार हैं उन्होने कई किताबें लिखी है जिनसे इदिराजी खुश नही हो सकती। इसलिए इनको जेल भेज दिया।'

सिल गए होंठ

२२ जुलाई १६७५ को राज्यसभा म एक आतक भरा सनाटा था। काग्रेस पक्ष क सदस्य अपने विपक्षिया और स्वतत्र मत रखन वाले लागो को कुछ इस तरह देख रहे थ जसे कह रहे हो—कहिए, अब भी कुछ बालन का दम है!

—है।

—समझ लीजिए और सावधान रहिए—हमारी राय से असहमति तक अपराध माना जाएगा।

—क्या ?

—हम अपन खिलाफ कुछ भी नही सुन सकत।

—फिर यह पवित्र सभा क्यों ?

—अब इस सभा की यही मर्यादा है कि सत्ता और हुकूमत के खिलाफ किसीका मुह न खुले।

—खुलगा।

—समय बर्बाद होगा क्योकि यहा से कुछ भी बाहर नही जाएगा। सारे समाचार, प्रचार और प्रसार हमारी मुट्ठी म हैं।

—फिर भी हम बालेंगे। शब्द ब्रह्म है शब्द अक्षर है जिसका कभी क्षय नही होता।

ये शब्द गुजराती के प्रसिद्ध लखक उमाशकर जोशी के थे। उन्होंने अपने पास बठे कृष्णकात की ओर दखा। कृष्णकात यह बोलते हुए खडे हुए—मैं उठता हू बालन गहरे दुख म जो अधकार अचानक पूर देश पर छा गया है उससे हर किसीका दम घुट रहा है। हमारे तमाम साथी अचानक गायब हा गए जो कल तक यहा हमारे साथ बठते थ। जयप्रकाश नारायण हमारे एक महानतम नेता और महात्मा गाधी के एकमात्र सच्चे प्रतिनिधि इस आजाद भारत मे अचानक इस तरह जेल के सींखचो क

भीतर बद है। इससे हमारे दिला म उदासी, निराशा के साथ ही साथ एक गहरी पीडा है। मैं अभियोग लगान क लिए नहीं खडा हू, बल्कि इस अधेरे म सत्य की तलाश म उठा हू।

इस मुल्क ने आज़ादी के लिए बडी लबी लडाई लडी है पर जैसा भय जसी खामोशी अचानक हम पर उतरी है वैसा पहले कभी नही हुआ। मुझे पाकिस्तान के शायर फज की य लाइनें याद आ रही हैं

आ गई फसले सुकू चाक गरेबा वालो
सिल गए होंठ कोई ज़ख्म सिल या न सिले
दोस्तो बज्म सजाओ कि बहार आई है
खिल गए ज़ख्म कोई फूल खिले या न खिल।

—इसकी ज़रूरत क्या थी ?

—आपको कुछ पता नहीं। बठ जाइए !

काग्रेसी सदस्यो की तरफ से तमाम आवाज़ उठी थी चुप कराने के लिए। पर वह अकेली आवाज शब्द बनती जा रही थी—हम पता है मीसा क अतगत २६ जन की सुबह अचानक सारी गिरफ्तारिया हुई हैं। आपात् स्थिति लगने से पहले भी गिरफ्तारिया हुई है। आप कहते है वे बहुत थोडे-से ही लोग थे जो देश की भलाई क खिलाफ थे पर इस सारे मुल्क पर यह घना अधेरा क्यो ?

आज वे कौन लोग है जो बीस सूत्री कायक्रम के समयन म लग ह ? वे कौन हैं जो प्रधान मत्री के बगल के सामने खरीदे हुए लोगो की भीड जमा करने म लगे है ? वही काग्रेसी है जो अब तक सभी प्रगतिशील कायक्रमो के विरोधी रहे हैं—जिनका धधा है काला बाज़ार, बेईमानी दुश्चरित्रता भ्रष्टाचार। क्या वजह थी कि काग्रेस अपने किसी भी उद्देश्य म सफलता नही प्राप्त कर सकी ? यही हैं काग्रेस की सारी नीतियो को असफल करने वाले। हमारे राष्ट्रीय जीवन स इस तरह ज० पी० को हटाकर कितनी क्षति पहुचाई गई हैं इस देश की गाधी मर्यादा और शील परपरा को।

दूसरी तरफ स किसीकी ऊची आवाज़ आई—सुनिए सुनिए मिस्टर एन० जा० गोरे। चीफ मैंसर एच० ज० डा-पेहा क निर्देश सुनिए। कमला

किया गया है कि ससद-सदस्यो की कोई भी बात सवाद किसी भी तरह बाहर नहीं छपेगा।

—बठ जाइए !

—चुप रहिए !

स्पीकर क सामने एन० जी० गोरे उठे और कहा—काग्रेस ने जो कुछ किया कितनी फाईरिंग, कितनी निर्दोष हत्याए जुल्म और अपराध उसे छपने क्यो नही दते ? जयप्रकाश ने माग की—इन जुल्मो और शासन-तन्त्र की बेइमानिया और भ्रष्ट मन्त्रियो एम० एल० ए०, एम० पी० की अनीतिया की जाच होनी चाहिए—यही है उनका राष्ट्रीय विरोध !

—सिर्फ इतनी ही बात नही है।

—और सुनिए !

वी० पी० दत्त बार-बार श्री गोरे को बोलने से रोकत रहे।

गोरे न गुस्स म कहा—मिस्टर दत्त आप दिमाग मे बिके हुए है। कल अगर इन्दिरा ज० पी० को रिहा करके कहे—चलो, मुझे सहयोग दो, तो आप कहेगे—देखो कसा किया ! मिस्टर दत्त आपन कल कहा कि आर० एस० एम० ब्राह्मणो की सस्था है तो देखिए ना काग्रेस के इन स्तम्भो को—वह बैठे हैं उमाशकर दीक्षित, यह महाशूद्र हैं न ? वह बठे हैं कमलापति त्रिपाठी यह बडे धर्मनिरपेक्ष है क्यो ? उमाशकर जोशी न बडे ही घायल स्वरो मे कहा—कल तक यह भारत देश एक देश था। एक प्रान्त क लोग दूसरे से जुडे थे। आज हम अलग-अलग टुकडो मे बाट दिए गए। अब हम पता नही चलेगा कहा क्या हो रहा है। कल तक हम आजाद थे स्वतन्त्र। आज हमारी स्वतन्त्रता छिन गई। अब हम जीकर क्या करेंगे ?

प्रधान मन्त्री श्रीमती गाधी न कडी निगाहा से श्री जोशी की ओर देखा। जोशी का कवि हृदय रो रहा था।

एन० जी० गोरे ने कहा—मडम ! डी० एम० के० सगठन काग्रेस, जनसघ बी० क० डी० सी० पी० एम०, सोशलिस्ट स्वतन्त्र अकाली दला की ओर से मैं कहता हू—हम इस सभा की बठक म फिर भी कुछ आशा के साथ भाग लन आए थे आशा थी यहा तो कुछ आजादी बची होगी। पर प्रस पर पाबदी का यह स्वरूप और ओम महता के एस निर्देश

कि इस सभा के वे सारे नियम और परम्पराए प्रश्न करने ध्यानाकर्षण लाने, विचार विनिमय प्रश्नोत्तर आदि के अधिकार दिए जाए तो अब बाकी क्या रहा ?

मैडम इसके साथ हम इस सदन से अपने आपको अलग करते हैं।

काला अखबार

आपत्तिजनक सामग्री के प्रकाशन निषेध के लिए ८ दिसबर १९७५ को जो अध्यादेश जारी हुआ, उससे एक काले अखबार का जन्म हुआ और जन्म भी ऐसा कि कहीं समाचार भी नहीं छपा कि इस जन्म में कौन रोया कौन हसा ? हा जिन घरो म मगल गाया गया वे तब तक यह भूल चुके थे कि कोई समाचार होता है।

अखबार वाले इस काले अखबार के लिए कतई तैयार न थे। सब कुछ अप्रत्याशित हुआ।

ऐसे होता ही था।

हा सूचना और प्रसारण मत्रालय अखबारो को, पत्र पत्रिकाओ को अधिक जिम्मेदार बनाने के लिए अनेक उपायो की तजवीज कर रहा था और पत्रकार बधु प्रेस क्लबो म सिगरेटें पीते अखबार आचरण सहिता के बारे मे ख्याली बातें कर रहे थे। अग्रेजी और हिन्दी चारो सवाद समितियो को मिलाकर एक राष्ट्रीय सवाद समिति बनाए जाने की पेशकश हो रही थी। मगर अचानक तीन अध्यादेश जारी हो गए

पहला—जो ससद की कारवाई के प्रकाशन को निषिद्ध ठहराता है।

दूसरा—जो उन तमाम चीजो को अखबार के दायरे से दूर हटा देता है जिन्हे आपत्तिजनक सामग्री अध्यादेश की धारा ३ म परिभाषित किया गया है।

तीसरा—जो सविधान के अनुच्छेद १४ २१ और २२ को निलबित करता है और उस रूप म किसी नागरिक का अदालतो की शरण म जाने का अधिकार खत्म करता है।

अध्यादेश म नौकरशाही को ही निर्णय करने और आदेश देने का पूरा

अधिकार था। इसके खिलाफ पहली अपील भी कोई न्यायाधीश नही वल्कि सरकारी अधिकारी ही सुनेगा—ऐसी व्यवस्था थी।

इस काले अखवार ने समाचार के कुछ सदस्यो के मन म भय, आशका, सदेह भर दिया। प्रसिद्ध लोग घुटने टेककर बैठ गए। जो अब तक अभि व्यक्ति की आजादी पर अग्रलेख लिखते भाषण देते नही थकते थे, अब 'अनुशासन पर्व' मनाने लगे।

टाइम्स आफ इडिया' और हिदुस्तान टाइम्स दोनों सस्थाना से काले पष्ठ छपते रह।

इडियन एक्सप्रेस' और स्टेटसमैन' केवल यही दो समाचारपत्र थे जिहोन सघष का पक्ष लिया और आजादी की लडाई मे किसी तरह स भी नही डिगे।

जानते ह क्या खोया है ?

नहीं इसकी पूरी जानकारी नही है। हो भी नही पाती। अखबारो म वही इदिरा राज छपता है सब स्वग बनता जा रहा है। पर इस इमरजेंसी क बीच हमने इतना खोया —

(१) पुलिस जब चाहे आपको गिरफ्तार कर सकती है ? 'मीसा' मे गिरफ्तारी का कारण भी नही बताया जाएगा और अब सर्वोच्च न्यायालय ने फसला दे दिया है कि आप किसी अदालत म फरियाद भी नही कर सकते। आपका घर लूट लिया जाए आपकी सम्पत्ति ज़ब्त कर ली जाए या आप मार भी डाले जाए, आप कानून की दुहाई नही दे सकते। पुलिस का राज है वह जो चाह कर सकती है।

(२) आप किसान हैं। आपका लगान वढ गया है विजली, पानी, खाद का रेट बढ गया है। सरकार अपन रुपये की वसूली वडी वेरहमी से कर रही है। आप असहाय हैं। आप कुछ कर नही सकते।

(३) आप गरीब हैं भूमिहीन हैं मजदूर हरिजन या आदिवासी हैं। आप यह भी नहीं कह सकत कि बीस सूत्री कार्यक्रम के जो

लाभ मिलना चाहिए आपको नही मिल रहा है आपके लिए जो कानून बन हुए है व लागू नही किए जा रहे है। कही आपकी सुनवाई नही।

(४) आप पत्रकार हैं। आपकी कलम बद है। आप नही लिख सकते जो लिखना चाहे आपको वही लिखना पडेगा जो सरकार चाहे।

(५) आप प्रोफेसर हैं शिक्षक हैं। आप किसी गोष्ठी म नही जा सकत लेख या किताब नही लिख सकत।

(६) आप सामाजिक कायकर्ता हैं। आप सभा नही कर सकत। आप किसी बुराई या भ्रष्टाचार क खिलाफ नही बोल सकत शान्ति पूण आदोलन नही कर सकते।

(७) आप व्यापारी हैं। आपको अधिकारियो की पूजा करनी पडगी आप गलत काम करें या न करें। साथ ही युवक काग्रेस को चदा भी देना पडेगा।

(८) आप सामान्य नागरिक हैं। किसी काम के लिए सरकारी दफ्तर म जाइएगा तो पहले से अधिक घूस दना पडेगा। इसर जैसी है—रेट बढ गया है।

(९) नागरिक के जो अधिकार सविधान म मान गए थे वे ठप्प कर दिए गए है। आपके बोलने लिखने पर तो रोक है ही आपके कही आन जान पर भी रोक लगाई जा सकती है।

(१०) सरकार की पचवर्षीय योजनाए फेल हो चुकी है। गरीबी और बेरोजगारी तजी स बढ रही है। विषमता घटती नही। निकम्मा शिक्षा बदली नही जाती। प्रशासन भ्रष्ट और बेकार है। न्यायालया म न्याय नही मिलता। भूमि व्यवस्था सामन्त-वादी है। अपनी सारी निरकुशता और विफलता का सरकार एकतरफा प्रचार स ढक रही है।

(११) आप मतदाता है। लोकतत्र म आपको अपनी मर्जी की सरकार बनाने का अधिकार है। लेकिन चुनाव नही कराया जा रहा है। फरवरी १९७६ म जो चुनाव होना चाहिए था वह टाल

दिया गया। आगे चुनाव कब होगा कहना कठिन है और होगा तो मुक्त शुद्ध और पक्षपातरहित होगा इसकी गारण्टी नहीं है।

सोचिए कहा है हमारी स्वतत्रता और हमारा लोकतन्त्र ? यह तानाशाही है नगी और निरकुश—इन्दिराजी की तानाशाही। उनके बाद सजय गाधी की होगी!

क्या आप सोचते हैं कि आपने क्या खो दिया है ? आपने खोया है स्वतन्त्र लोकतान्त्रिक देश के नागरिक की हैसियत अपना अधिकार जान माल की सुरक्षा अपना सम्मान। तो बचा क्या ?

आखें खोलिए देखिए समझिए बोलिए। जनता की आवाज उठेगी तो सत्ता हिल जाएगी।

(भूमिगत तरुण क्रांति सघर्ष कार्यालय पटना की ओर से प्रसारित)

इस बीच सुप्रीम कोर्ट ने 'हैबियस कारपस' के प्रश्न पर फसला दिया। व्यक्ति की स्वतन्त्रता की अतिम टिमटिमाती रोशनी भी बुझ गई।

बम्बई २ मई १६७६ को जयप्रकाश ने फिर भी यह लिखकर, प्रकाशित कर, कहा—श्रीमती गाधी की तानाशाही अब लगभग पूर्ण हो गई—व्यक्ति के रूप मे भी और सरकारी तन्त्र मे भी। सभी स्वतन्त्रता प्रेमी भारतीयो को साहस के साथ इस समस्या का सामना करना चाहिए कि किस तरह इतिहास का उल्टा प्रतिगामी प्रवाह फिर सही दिशा मे मुडेगा और हम अपनी खोई हुई स्वतन्त्रता वापस पाएगे और अपनी लोकतान्त्रिक सस्थाए फिर स्थापित कर सकेगे। जाहिर है कि यह तभी हो सकेगा—अगर सविधान के रास्ते से करना हो तो—जब लोकसभा के मुक्त शुद्ध और पक्षपातरहित चुनाव हो जिनमे काग्रेस की हार हो और विरोध विजयी होकर अपनी सरकार बनाए। सही है यह कहना आसान है, करना कठिन लेकिन यह भी उतना ही सही है अगर ज्यादा नही कि इतना सब तो करना ही है। कैसे यही प्रश्न है। मेरा सुझाव है कि

(१) पूरे देश मे सभाए हों—आम जनता की तथा विभिन्न सस्थाओ और सगठनों की—और उनमे माग की जाए कि इमरजेंसी

उठायी जाए राजनीतिक बंदी छोड़े जाएं लोकसभा के चुनाव कराए जाएं तथा प्रेस और बोलने की, विचार प्रकट करने की स्वतंत्रता वापस दी जाए।

(२) जो लोग व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा स्वतंत्र लोकतांत्रिक संगठनों में विश्वास करते हैं वे फौरन चाहे जिस तरह संभव हो तीन-तीन, चार चार की टोली बनाकर जनता में घुस जाएं और लोगों को बताना शुरू कर दें कि क्या हो रहा है और कौन से बुनियादी सवाल पैदा हो गए हैं? श्रीमती गांधी की तानाशाही का रथ बढ़ता चला जा रहा है क्योंकि लोग चुप हैं कुछ कर नहीं रहे हैं। लोग चुप और निष्क्रिय इसलिए हैं कि समझ ही नहीं रहे हैं कि क्या हो रहा है। एकतरफा प्रचार के कारण बहुत से लोगों ने मान लिया है कि जो हुआ है उनकी भलाई के लिए हुआ है। इसलिए सबसे पहला और जरूरी काम यह है कि लोगों को एक बार फिर बताया जाए कि स्वतंत्र और लोकतांत्रिक समाज के आधार क्या हैं बुनियादी तत्त्व क्या हैं? यह काम समझदारों के साथ करना है। उसके लिए जरूरी है कि सरल भाषा में जानकारी के साथ और यह बताते हुए कि क्या करना है पर्चे फोल्डर पुस्तिकाएं आदि तैयार की जाएं। जाहिर है कि इनका प्रकाशन और प्रचार गैरकानूनी ढंग से ही हो सकेगा। बहुत से लोग इन लिखित चीजों को पढ़ और समझ भी नहीं सकेंगे लेकिन ये टेक्स्ट बुक का काम करेंगी। इन्हें छोटी छोटी गोष्ठियों में पढ़ा जाए जिनमें ज्यादातर छात्र तथा अन्य युवक और युवतियां शरीक हों।

कहने की जरूरत नहीं कि जो लोग इस तरह के निर्दोष शैक्षणिक काम में शरीक होंगे वे भी पकड़े जा सकेंगे जेल भेजे और पीटे जाएंगे और उन्हें यातनाएं दी जाएंगी। उन्हें इन सबके लिए तैयार रहना होगा। लेकिन मुझे विश्वास है कि इस देश में ऐसे काफी युवक और युवतियां हैं जो इन खतरों को जानते हुए भी पीछे नहीं हटेंगे।

(३) जनता के शिक्षण के साथ साथ जनता के संगठन का काम भी होना चाहिए। बिहार आंदोलन में जन संघर्ष समिति और छात्र संघर्ष के रूप में संगठन हुआ था। मेरा सुझाव है कि बिहार के बाहर पूरे देश में जो संगठन बनें उन्हें केवल नव निर्माण समिति कहा जाए। पहचान के

लिए नाम के पहले ग्राम, नगर छात्र आदि शब्द जोड़े जा सकते हैं।

यह त्रिविध कार्यक्रम है। मेरा ख्याल है कि इस वक्त उन सभी लोगों को जो जनता की शांतिपूर्ण क्रांतिकारी कारवाई में तथा स्वतंत्र, समान और आत्मशासित नागरिकों के नये भारत में विश्वास करते हैं उन्हें यह त्रिविध कार्यक्रम तुरंत उठा लेना चाहिए।

हो सकता है कि कुछ लोगों को यह कार्यक्रम फीका लगे। लेकिन मुझे आशा है कि अगर वे गहराई से सोचेंगे तो उनके विचार बदल जाएंगे। बिहार आन्दोलन ने भी अपना लक्ष्य सरकार से टक्कर लेना नहीं माना था। टक्कर तो आंदोलन से यों ही निकल आई और जब निकल आई तो टक्कर ली गई। जो कार्यक्रम मैं सुझा रहा हूं उसपर अगर गंभीरता के साथ अमल किया गया और वह फैला और शक्तिशाली हुआ तो टक्कर अनिवार्य हो जाएगी। लेकिन उसकी जिम्मेदारी हमारे ऊपर नहीं होगी, जिम्मेदारी होगी समाज की उन प्रतिक्रियावादी शक्तियों पर जो सरकार के नेतृत्व में जनता की क्रांति को कुचलने की कोशिश कर रही हैं। ऐसा बिहार आन्दोलन में हुआ। ऐसा ही अब भी होगा।

लेकिन इतना ही नहीं करना है। जनता के आंदोलन का लक्ष्य था और आज भी है सम्पूर्ण क्रांति अर्थात व्यक्ति और समाज के हर क्षेत्र में क्रांति ताकि जीवन आज से अधिक अच्छा हो, पूर्ण हो और उसमें ज्यादा सुख और समाधान हो। इसका यह अर्थ है कि काम के लिए विशाल क्षेत्र पड़ा हुआ है। भारत में जाति प्रथा का मिटना कई दृष्टियों से वर्ग प्रथा के मिटने से ज्यादा जरूरी है। शिक्षा में क्रांति एक दूसरा क्षेत्र है जिसमें काम ही काम है। कितने ही उदाहरण दिए जा सकते हैं किन्तु सबका गिनाना जरूरी नहीं है। समझ-बूझ रखने वाले कल्पनाशील सक्रिय साथी अपना कार्यक्षेत्र स्वयं चुन सकते हैं।

इस तरह का काम होगा तो सामाजिक (जाति के भी) और आर्थिक निहित स्वार्थों से संघर्ष की नौबत आ सकती है। और, यह संभव है कि संघर्ष के कुछ क्षेत्रों में राज्यसत्ता का सहयोग भी मिले।

आतक

जमन और इटली तानाशाही के समान सारे आतकपूण काय समाजवाद और प्रजातत्र के नाम पर हुए। स्वभावत सब कुछ जनहित क लिए किया गया। उसम भी विशेषकर गरीब और पिछडे लोगा क हित और कल्याण को सबस बडा लक्ष्य माना गया। महगाई कम हो जिदगी की रोजमर्रा खपत की चीज़ों क दाम कम हो इसीके भीतर स वह बुनियादी तत्त्व पकडा गया जो एक ही सचाई के दो सिरे हैं। पहला पदा करने वाला, दूसरा उपभोक्ता। इन दोनो सिरों के बीच है माल बचने वाला—बनिया व्यापारी महाजन सेठ साहूकार।

इसलिए आपात स्थिति का आतक कहा से यथाशीघ्र पूण प्रभाव के साथ पदा हो इसके लिए पहल बनिया—महाजन पकडा गया।

स्थान दिल्ली

जगह शाहदरा

दिनाक ३ जुलाई १९७५ समय दोपहर।

एक आदमी—ओ सेठजी अब बाढिया सुनला क्यो डई ?

—जी सरकार!

—दस किलो फस्ट क्लास चावल, एक कुटल बढिया गहू अबे आडर लिखता है या नही!

—जी।

— मेरा मुह क्या देख।

—साहब मैं गरीब आदमी मर जाऊगा मेरी पूजी हा कितनी है!

—अच्छा तेरा यह मजाल। चीजो क दाम की लिस्ट कहा है?

—यह तो सरकार!

—बेईमान कहीं का। हर चीज क साथ दाम बधा लगा होना चाहिए।

—लगा है सरकार!

—हीग और फिटकरी पर दाम नहीं लिखा। चल मीसा' म!

—क्यो ?

—तू आर० एस० एस० का आदमी है।

—यह क्या चीज है ?

—बता इसे ।

दूकान लूटी जानी है। दूकानदार की पिटाई होती है और भरे बाज़ार गिरफ्तार करके उसे ले जाया जाता है।

बात फलती है। बातें होने लगती हैं। आतंक फैलने का इतना उम्दा केन्द्र और क्या हो सकता है। बनिया, महाजन से किसका सम्बन्ध नहीं होता ? सब इसी रास्ते से तो गुज़रते हैं। पैदा करने वाला किसान उपभोक्ता अफसर और आसपास का सारा समाज समाज की सारी संस्थाएं यहां जुड़ती हैं।

कीमतों के बहाने छोटे दूकानदारों से लेकर आयकर के बहाने बड़े महाजनों और सेठ-साहूकारों पर छापे ज़मानत गिरफ्तारियों ने पूरे भारतीय समाज में डर पैदा किया। व्यक्ति कुछ नहीं है धन की कोई ताकत नहीं है किसीकी कोई इज्जत-आबरू नहीं है। सर्वशक्तिमान केवल राजतंत्र है अफसर और पुलिस है समाज को ऐसा अनुभव देकर केवल यह साबित किया जाने लगा कि व्यक्ति कुछ भी नहीं है। असली दूरगामी लक्ष्य यह था कि व्यक्ति की आत्मचेतना को इतना कुचल दिया जाए कि वह अंतत प्रजातंत्र के लिए खड़ा ही न हो सके।

इसके लिए न्यायालयों की शक्ति को इस तरह समाप्त करना कि आदमी वहां न्याय पाने के लिए जा ही न सके हारकर भय और आतंक के सामने आत्मसमर्पण करे—यह एक रास्ता चुना गया।

कैसा न्याय ?

राजनीतिक, अराजनीतिक, सर्वथा निर्दोष लोगों को घरों, दफ्तरों शिक्षा-संस्थाओं, कार्यालयों, उद्योगों राह चलते चुप बैठे लोगों को बिना कोई कारण बताए जेलों में डाल दिया जाता। जो उनकी जमानत के लिए दौड़ धूप करता उसे भी गिरफ्तार कर लिया जाता। जो वकील ऐसे लोगों की पैरवी करता उसे कठोर दंड का भय दिलाया जाता। दिल्ली में तीसहजारी कोर्ट के बाहर वकीलों की जगह इसलिए

कि लोग आतंकित हो जाए। वकीलो का दल जब न्याय मांगने लेफ्टिनेंट गवर्नर के पास गया तो उनके नेता को गिरफ्तार कर लिया गया।

परतन्त्र भारत में फील्ड मार्शल वावेल का एक नोट ६ जून १९४४ को वाइसराय हाउस नई दिल्ली से श्रम मंत्री मिस्टर एमरी के नाम था— कुछ ही दिनो पहले की बात है—आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के जनरल सेक्रेटरी की पत्नी श्रीमती कृपलानी जो अब जेल में हैं पटना में एक आई० सी० एस० अफसर मजूमदार के घर पर गिरफ्तार हुई। काफी दिनो से उनकी तलाश थी वह कांग्रेस अंडरग्राउंड आन्दोलन के नेताओं में से एक हैं। रदरफोर्ड (गवर्नर बिहार) ने मुझे लिखा है कि उस मजूमदार की राजभक्ति के बारे में सदा सन्देह रहा है—ऐसे दो एक और भी आई०सी० एस० अफसर है बिहार में। सवाल यह है कि श्रीमती कृपलानी के बारे में कोई ऐसा घोषित अभियोग नहीं था जिसके कारण अब मजूमदार के खिलाफ कोई कार्रवाई की जाए। रदरफोर्ड ने सोचा है कि मजूमदार से बिहार चीफ सेक्रेटरी द्वारा यह कैफियत ली जाय कि क्या वह अपने किन्ही राजनीतिक विचारो के कारण नौकरी में रहने लायक है या उसे अवकाश ग्रहण करने के लिए कहा जाय पेंशन लेने की बहुत करीब भी पहुंच चुका है। मैंने रदरफोर्ड को यह सलाह दी है कि जब तक किसी अफसर के राजनीतिक विचार सरकारी काम में बाधक नहीं होते तब तक सरकार से उसका कोई मतलब नहीं। यह गैरमुमकिन है कि अपने निजी विचारो के लिए किसी अफसर को सजा दी जाए।

(द ट्रांसफर आफ पावर—१९४२ ७ खंड ४ पृ न १००८)

अपना उदाहरण

पहला अमरपुर थाना (भागलपुर) अंतर्गत कौशलपुर ग्राम में हमारे एक साथी के घर पर २४ फरवरी को रात्रि तीन बजे अमरपुर थाना के बन्हवास पुलिस अधिकारी करीब चार दजन सी० आर० पी० के साथ दरवाजे तोडकर अंदर घुस आए। घर के सारे दरवाजे एवं खिडकिया तोड डाले एवं पडोसी घर वालो को पीटा, बहनो के साथ दुर्व्यवहार किया। ज्ञातव्य है कि उस घर में महीनो से कोई नहीं रह रहे हैं। तानाशाही

व्यवस्था म और अपेक्षा भी क्या की जा सकती है ? देखना है कि इन्दिरा की अनैतिक हिंसा जीतती है या हम आंदोलनकारियों की नैतिक सत्याग्रही अहिंसा।

स्वच्छ दिल्ली के नाम पर इन्दिरा गांधी की सरकार ने जामा मस्जिद के नजदीक की दसियों साल पुरानी छोटी छोटी दूकानों को उखाड फेंका। कुछ दु खी दूकानदार इन्दरमोहन नामक एक ५२ वर्षीय व्यक्ति के पास गए। इन्दिरा गांधी की लल्लो चप्पो म लगी सी० पी० आई० के मजदूर नेताओं से इन्दरमोहन के अच्छे संबंध थे। वे उनके पास गए। तय हुआ कि संजय गांधी—तानाशाही के घोषित युवराज—इस काम म सहायक हो सकते हैं। इन्दरमोहन संजय के पास गए। उनसे बेगुनाह दूकानदारों के लिए मदद मांगी पर उन्हें धक्के मिले।

और उसी शाम जब इन्दरमोहन खाना खाने बैठे ही थे कि ग्यारह गुण्डे उनके घर म घुस गए। उन्हें पीटा और उनके सर और जननेन्द्रियों को घातक चोट पहुंचाई तथा उनके बाल नोच डाले। घबराए हुए नौकरों ने शोर मचाया। पर जब तक वह सहायता लेकर आता गुण्डे इन्दरमोहन को घसीटकर घर से ले जा चुके थे। उनके हाथ बांध दिए गए और घसीट कर सात मील दूर दरियागंज पुलिस स्टेशन ले जाया गया। जब उन्होंने गिरफ्तारी का कारण पूछा तो जवाब मिला कि—'ऊपर का हुक्म है।' दूसरे दिन इन्दरमोहन को जामा मस्जिद के नजदीक वाले पुलिस स्टेशन ले जाया गया। वहां उन्हें फिर से पीटा गया और पखाने म बंद कर दिया गया। तीन दिन के बाद जब एक वकील मित्र को इन्दरमोहन का पता चला तब कहीं जाकर मानसिक और शारीरिक रूप से टूट चुके इन्दर मोहन को रिहा कराया जा सका।

('आर्तनाद' दक्षिण बिहार छात्र युवा संघर्ष वाहिनी (भूमिगत) द्वारा मई १९७६)

दूसरा या तो सारा देश आज तानाशाही के शिकंजे म जकड़ा हुआ है। लेकिन पटना आकर मे महसूस कर रहा हूं कि सारा बिहार जेल बन गया है। बिहार म पुलिस द्वारा धर पकड़ तो पहले से ही जारी थी पर मेरे आने के बाद उसमें और तेजी आ गई है। मुझे बताया गया है कि

पिछले दो वर्षों के दौरान जिस किसी व्यक्ति ने कभी आन्दोलन में भाग लिया था उसको पकड़कर बन्द करके रखने का निश्चय सरकार ने किया है। शायद उसे भय है कि मेरी उपस्थिति से फिर कहीं उनकी भावनाओं का तार बज न उठे। जनता से मुझको और मुझसे जनता को अलग रखने की कोशिश गत जुलाई से ही चल रही है। जिस दिन मैं यहां आया तब से ही मेरे निवास पर पुलिस की कड़ी निगरानी है। जो लोग मुझसे मिलने आते हैं, उन्हें पुलिस के लोग रोककर पूछते हैं और उनका नाम पता नोट करते हैं। इसलिए लोग यहां आने से भी डरते हैं। अधिकांश लोग तो मुझे सिर्फ देखने के लिए या स्वास्थ्य पूछने के लिए आते हैं। लेकिन पुलिस के भय से वे आ नहीं पाते मुझे देख नहीं पाते क्योंकि वे समझते हैं कि पुलिस उन्हें बाद में परेशान करेगी। बंबई में तो ऐसी स्थिति नहीं थी। पता नहीं यहां का शासन क्यों इतना बुज़दिल है क्यों इतना भयभीत है! मैं बीमार हूं और अपने घर आया हूं। मैं चाहता हूं कि सामान्य स्थिति शीघ्र लौटे। परन्तु शासन की नीतियों के कारण स्थिति सामान्य नहीं हो पाती।

—जयप्रकाश नारायण

(बिहारवासियों के नाम चिट्ठियों से)

—व्यवधान!

—क्या?

—आप क्या कह रहे हैं?

(जेल से छूटकर उत्तर प्रदेश विधानसभा में चौधरी चरणसिंह कह रहे हैं।)

श्री उपाध्यक्ष मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि जो विवाद है वह राज्यपाल के अभिभाषण से परे है। मैं चाहूंगा कि वे अपने विचारों को सीमित रखें। राजनीतिक विवाद को लेकर विवाद किया जाएगा तो स्थिति मेरे लिए कठिन हो जाएगी।

चरणसिंह मैंने समझा नहीं कि मेरी क्या गलती है?

श्री उपाध्यक्ष प्रश्न और उत्तर जो हो रहे हैं उनसे मुझे दिक्कत होगी।

राज्यपाल के अभिभाषण तक ही सीमित रहे। यदि आप राष्ट्रीय स्तर पर चले जाएं और विचार राज्यपाल के अभिभाषण पर करते हैं, उनमें दूर चले जाएं तो मेरे लिए कठिन हो जाएगा।

श्री अब्दुल राऊफ लारी जो विवाद उत्पन्न करें उन्हीं को तो मना करेंगे।

श्री उपाध्यक्ष माननीय सदस्य बैठ जाएं।

श्री रामनारायण पाठक माननीय उपाध्यक्ष जी मेरा व्यवस्था का प्रश्न है।

आप हमारी बात को सुन लें।

श्री उपाध्यक्ष आप कृपा कर बैठ जाएं।

श्री चरणसिंह उपाध्यक्ष महोदय मैं बतला रहा था कि इमरजेंसी क्यों लागू की गई। प्राइम मिनिस्टर ने अनेक बार यह कहा कि अपोजीशन लीडर्स का दूसरे देशों से संबंध है जिसका मतलब है कि हम देश के दुश्मन हैं। मैं यह कह रहा हूं कि इन्दिराजी अनेक बार यह कह चुकी हैं हजारों बार कह चुकी हैं कि अपोजीशन लीडर्स का दूसरे देशों से संबंध है। यह चीज है। इससे बड़ा चीज कोई नहीं हो सकता है एक पोलिटिकल (राजनीतिक) आदमी के लिए।

श्री रामनारायण पाठक मान्यवर मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि इसका जवाब दे दिया जाए।

श्री चरणसिंह आपका तात्पर्य है कि मैं गलत कह रहा हूं। आप जिस ढंग से कह रहे हैं राजनीतिक विवाद में फंस जाएंगे।

श्री उपाध्यक्ष माननीय सदस्य बैठ जाएं बीच में न बोलें।

श्री चरणसिंह मैंने पूछा कि पत्र पहले क्यों नहीं पेश किया ? पत्र फर्नांडीज साहब का है तो आप उनके खिलाफ मुकदमा दायर कीजिए सजा हो जाए तो हम निन्दा करेंगे।

चौ० चरणसिंह यह कानून है, जिसके पास कोई जवाब नहीं होता वह ही यह कहते हैं कि हम सब लोग दुश्मन से मिले हुए हैं। आप हम सब पर न्यायालय में मुकदमा क्यों नहीं चलाते हैं ? औद्योगिक उत्पादन के बारे में कहा जाता है कि इमरजेंसी से पहले के जमाने में वह बहुत कम हो गया था,

अब बढ गया है। बहुत खूब आपकी नाकाबिलियत से जो गडबडिया पैदा हुई है, उसके लिए भी क्या हमारी ज़िम्मदारी है ? ए० आई० टी० यू० सी० शायद श्रमिको का सबसे बडा सगठन है जो आपके दोस्त सी० पी० आई० के हाथ म है। अगर हडताल हुई होगी तो आपके दोस्तो ने कराई होगी। एक दूसरा सगठन है—आई० एन० टी० यू० सी०।

श्री भीखालाल इन आठ नौ महीनो म दश म प्रोडक्शन (उत्पादन) बढ गया है।

चौ० चरणसिंह आप जब चाहते है तो बढ जाता है और जब चाहते है तो घट जाता है। श्रमिको के जो सावजनिक महत्त्वपूण सगठन है वे आपके हाथ म हैं विरोधी दलो के हाथ म नहीं है। नाकाबिलियत आपकी अपनी ज़िम्मेदारी विपक्ष की।

आपके २० प्वाइटस प्रोग्राम हैं। उनम कहा गया है कि विद्यालयो एव छात्रावासो म विपक्ष वाले अनुशासनहीनता फलाते है। मुमकिन है कि कुछ लोग फलाते हो लेकिन कांग्रेस वाले भी कम नही है। हमने १६७० म निश्चय किया था कि कम्पलसरी स्टूडेंटस यूनियन (अनिवाय छात्र सघ) होना उचित नही। नतीजा यह हुआ कि हालाकि कांग्रेस वालो ने और विपक्ष वालो ने भी लडको को भडकाया लकिन न कोई गोली चली न कही हिंसा हुई। मुमकिन है दस बीस लडके गिरफ्तार हुए हो। उस वष सबसे अधिक पढाई हुई। जिस तरह की पढाई हुई और विद्यालयो मे शाति रही उसके बारे म मेरे पास उनके पत्र आए जिनम कहा गया था कि इतनी पढाई विगत २० सालो म कभी नही हुई। आपके लीडर त्रिपाठीजी आए ५ तारीख को पावर (शासन) म और आते ही उन्होने उस आर्डिनेंस (अध्यादेश) को वापस ले लिया और फिर अनिवाय यूनियन्स बनी। नतीजा क्या हुआ ? यूनिवर्सिटी जली। आज तक कही उतना बडा काड नही हुआ लेकिन फिर भी जो व्यक्ति इसके लिए जिम्मेदार था (श्री त्रिपाठी) उनकी तरक्की हो गई। तो म जानना चाहता हू कि अगर यहा पर लडको के झगडे हुए है तो कौन है इसके लिए ज़िम्मेदार ? जब गवनमट की तरफ से कोशिश हुई कि यूनियन्स न हो तो आपकी ओर स कोशिश हुई कि हो। जब मैं (दिल्ली) म था तो वहा पर एक पुलिस अधिकारी थे

(एस० एच० ओ०)। उन्होंने मुझे बताया कि जब कभी बस जलाने में या यूनिवर्सिटी कैम्पस में बदमाशी करने की वजह से लड़कों को गिरफ्तार किया गया तो हमेशा कांग्रेस के लीडरों की ओर से कहा गया कि उनके ऊपर केस न चलाओ। शिकायत दर्ज कर ली। कुछ दिन बाद उन्हें छोड़ दिया। लेकिन अनुशासनहीनता का दोष दिया जाता है हमको।

एक तर्क हमारे विरुद्ध यह भी दिया गया है कि हम तो प्रधान मंत्री के पद की बदनामी करते थे। कहा गया है कि हम उनकी शान नहीं बनने दे रहे थे। हम तो चाहते थे कि उनकी शान बढ़े लेकिन डैमोक्रेसी में हमेशा यह होता है कि अपने काम से ही अपनी शान बनती है। क्या हमने विल्सन साहब की शान बना दी है? उन्होंने अपने आप यह कहा— मैं आठ साल तक प्राइम मिनिस्टर (प्रधान मंत्री) रह चुका हूं। अब और अधिक समय तक प्राइम मिनिस्टर नहीं रहना चाहता। लेकिन हमारी बहनजी ने टेलीविज़न पर इंटरव्यू देते हुए कहा कि अभी तो मेरा काम बहुत बाकी है (क्योंकि गवर्नमेंट का काम बाकी है) देश है सरकार है हमेशा समस्याएं बनी रहेंगी। लिहाजा हमेशा ही देश को इंदिराजी चाहिए। मैं पूछना चाहूंगा कि इसमें उनकी शान बढ़ेगी या घटेगी? मैं कहता हूं कि किसी के कहने से मेरी शान नहीं घटेगी मेरे कुकर्मों से ही घटेगी। आप मुल्क को किधर ले जा रहे हैं? आप चाहते हैं कि देश में एक दलीय शासन हो और सिवाय कांग्रेस के कोई दूसरी पार्टी न रहे। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष माननीय सदस्य सदन में शांति रखें।

चौ० चरणसिंह अपने दौरे में एक जिले में ही नहीं मैंने अनेक स्थानों पर लिखा हुआ देखा है (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष यह कौन सा तरीका है इस तरह से आपस में बातचीत करने का? यह नहीं होना चाहिए।

चौ० चरणसिंह इंदिराजी के बीस सूत्री कार्यक्रम के सिलसिले में तथा उनकी हुकूमत के दस साल पूरे होने पर एक उत्सव मनाया गया। किसी भी लोकतांत्रिक देश में ऐसा हुआ है? डि वलेरा सोलह वर्ष तक आयरलैंड के प्रधान मंत्री रहे ग्लैडस्टन भी दस साल तक रहे लेकिन कहीं भी इस तरह का कोई उत्सव नहीं हुआ।

नौजवान धर्मवीरजी का काम है वे नाराज न हों वे इस बात को सोचें। अगर प्राइम मिनिस्टर की अपनी निजी ओर स या पार्टी की तरफ से वह दिन मनाया जाता तो इसमें कोई हर्ज नहीं था। लेकिन आपने सार्वजनिक उद्योगों को और प्राइम मिनिस्टर को एक बना दिया। क्यों ? आखिर आप किधर जा रहे हैं ?

एक आवाज उसमें हर्ज ही क्या है ?

चौ० चरणसिंह हर्ज है। यह कोई डेमोक्रेसी नहीं है। राजा की वर्षी मनाई जाती है रानियों की वर्षी मनाई जाती है कि उन्होंने दस साल तक राज्य किया। किसी भी डेमोक्रेटिक कन्ट्री में आज तक यह सुनने को नहीं मिला है कि इस तरह से कोई दिन मनाया गया हो। इस बारे में आप माननीय नारायणदत्तजी से ही पूछ लें। इसमें कोई हर्ज नहीं है। आपने स्टेट और पार्टी को एक बना दिया इंदिराजी के साथ। इसको आप सोचें। जेल में मुझे पढने को मिला कि मिल्क प्राइसेज कट आन आकेजन आफ प्राइम मिनिस्टर इंदिरा गांधीज बर्थडे (प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी जी के जन्मदिन के शुभ अवसर पर दूध के मूल्य में कमी)। इसका मतलब यह हुआ कि किसी राजा को लड़का पैदा हो गया तो इसलिए छुट्टी रहेगी। मैं पूछता हूं कि क्या इसमें हर्ज नहीं है और फिर आप मुझसे बहस करते हैं ?

श्री उपाध्यक्ष श्री धर्मवीरजी आप तो एक जिम्मेदार सदस्य हैं। सदन की मर्यादा कायम रखें और बैठने की कृपा करें। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष आप लोग बैठने की कृपा करें। आप बोलेंगे तो कैसे काम चलेगा ?

चौ० चरणसिंह मैं मिल्क प्राइस के बारे में कह रहा था।

प्रधान मंत्री के जन्म दिन पर दूध के मूल्यों में कमी

बंगलौर १८ नवम्बर कल श्रीमती इंदिरा गांधी के जन्मदिन की प्रतिष्ठा में सरकारी बंगलौर डेरी ने आज दूध के मूल्यों में और कमी करके रु० १ ६० से रु० १ ८० प्रति लीटर कर दिया है।

यह टाइम्स आफ इंडिया में छपा है। सुन लीजिए। इस तरह की प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन नहीं देना चाहिए लेकिन दिया जा रहा है। किया यह जा रहा है कि एक ही आदमी है जो हिन्दुस्तान का मालिक है। यह

आवतल नही है। इसी सिलसिले म मेजर हबीबुल्ला खा (उनकी धमपत्नी यहा मम्बर भी थी) का एक पत्र मैं पढना चाहता हू। सुन लीजिए।

श्री ऊल अब लगता है कि वह समय नही आन वाला है।

चौ० चरणसिंह यही मुयका भी लगता है। लेकिन आखिरी बात कहे देता हू।

श्री ऊल आप कहिए।

श्री चरणसिंह मैं यह बता दू जो इसका मजमून है।

एक माननाय सदस्य ऐसे ही बता दीजिए मान लेंगे।

चौ० चरणसिंह मान लेंगे तो बडी भलमनसाहत है आपकी।

मैं कह रहा था कि लेटर लिखा है उन्होंने मेजर रणजीतसिंह को जो कि बस्ता क हैं। य हमारी पार्टी क मम्बर हैं। उन्होंने यह मूल पत्र मुझको दिया है। मैंने उस साइक्लोस्टाइल्ड कराया था। दो कापी मैं लाया था, पर कहीं रह गई हैं। उसम जो लिखा था, वह यह है एक सल बनाई गई है नाम है एक्स सर्विसेज यू० पी० कांग्रेस कमटी सल। मैं इसका कन्वीनर (सयोजक) मुकरर हुआ हू प्रदेश-भर क लिए। मैं चाहता हू कि आप गोरखपुर डिवीजन के सयोजक हो जाए और इस सिलसिले म मुझसे बात कर लें। इसम जो प्वाइन्टस लिए हुए हैं—जी० ओ० सी० इन०सी० सेंट्रल कमाण्ड और फिर है ए० ओ० सी० इन० सी० सेण्ट्रल एयर कमाड जो सर्विस आफीसर हैं। आप अपन इलेक्शन क ख्याल मे उनका (अवकाश प्राप्त सैनिकों का) एक सगठन बना रहे हैं।

—समाचार।

—क्या?

—समाचार।

दो दिन तक अगर कोई अखबार श्रीमती इन्दिरा गाधी का फोटो नहीं निकालेगा तो उसका इलक्ट्रिक और कनक्शन कट हो जाएगा। 'ईस्टन इकोनामिस्ट' मशहूर अखबार है। उसन एक तस्वीर महात्मा गांधीजी की निकाली। वह महात्माजी के नोआखाली की यात्रा की तस्वीर है। वह सेंसर हो गई। सेंसर बोड न उसको निकाल दिया इसलिए कि इट इज़, माइकनी टू बी मिसइन्टरप्रटेड (इसका अनुचित अथ लगाया जा

है) अर्थात् अब गांधीजी का अपने देश में कोई स्थान नहीं रह गया है। अपनी लकुटिया लेकर अब वे विदेश जा रहे हैं। परन्तु सम्पादक ने इसका विरोध किया और सुनते हैं कि इस्तीफा दे दिया। इस प्रकार से देश का मस्तिष्क बनाया जा रहा है। अभी 'पायनियर' में एक खबर निकली है। वह कोई व्यक्तिगत बात नहीं है। मैं केवल देश के हित में कह रहा हूं। इन्दिराजी की माताजी पर केस चला १६३१ में और जजमेंट अब निकाल कर प्रदर्शित किया जा रहा है स्टेट एक्जीविशन (सरकारी प्रदर्शनी) में। वहां परिवार जो अब तक हुकूमत करता आया है वही आगे भी करेगा। देश के लिए लाखों लोगों ने बलिदान किया। सन १६३१ की बात है। कितने लोग जेल गए होंगे। गरीब औरतें गरीब आदमी और कितने ही देशभक्त लेकिन नहीं जो प्रदर्शित किया जाएगा वह केवल एक लेडी का प्रधान मन्त्री की माताजी का। मैं जानना चाहता हूं कि और लोगों के नाम व काम का प्रदर्शन सरकारी प्रदर्शनी में क्यों नहीं किया गया? ऐसे भी व्यक्ति होंगे जिन्होंने कमला नेहरू से भी अधिक त्याग किया हो। इस प्रदर्शनी में इन्दिराजी की माताजी के खिलाफ जो जजमेंट शायद १६३१ में हुआ था, वह भी रखा गया है। वह जजमेंट ११ मार्च १६७६ के 'पायनियर' में छाप ही दे दिया गया है। परन्तु इसके आखिरी वाक्य ही रेलवेन्ट (प्रासंगिक) हैं

आप देखेंगे नेहरूजी के इस देश के पहले पं० मोतीलाल नेहरू का भी मैसेज है ठीक उसके नीचे। ये सब एक्जीविशन (प्रदर्शनी) में रखे गए हैं। अखबार के शब्द इस प्रकार हैं

(ठीक उसके नीचे और कमला नेहरू के चित्र से लगा हुआ एक और चित्र है जिसमें पं० मोतीलाल नेहरू की अपनी अल्पायु पोती इन्दिरा की देखभाल करने के लिए जो प्रबंध उन्होंने किए थे उनकी प्रगति के संबंध में चिन्ता व्यक्त की गई है)। दादा को इतनी फिक्र थी और आप लोगों को भी फिक्र करनी चाहिए। हमारे प्रधान मन्त्री का तप व तपस्या कितनी भारी है।

बीस सूत्री प्रोग्राम की उपलब्धि है साहब। दुनिया में किसी भी योग्य गवर्नमेंट के मातहत जो काम होने चाहिए उन्हें आप इमरजेंसी आपात

स्थिति की उपलब्धियां कहते हैं। इस प्रोग्राम में सिंचाई बढाने का सूत्र भी है जिसे हम भी करने को कहते थे और अन्य लोग भी कहते थे।

एक बात और आप कहते हैं कि 'मीसा' में तस्करों के खिलाफ सख्त कारवाई हो रही है। तो यह इंदिराजी ने कौन-सी नई बात कर दी जिसका आप ढोल पीट रहे हैं? यह कानून पहले से बना हुआ था। सन् १९७१ में कौल कमीशन ने तस्करों के बारे में रिपोर्ट दी थी कि बहुत ज़ोरों से यह अपराध बढ रहा है तो उस वक्त क्यों नहीं कारवाई की गई? लेकिन उस वक्त इलेक्शन होने वाले थे तस्करों से रुपया लेना था इसलिए कुछ नहीं किया गया और जब देखा कि जनता की नाराजगी बढ रही है तो आपने यह कानून बनाया। बीस प्वाइंट प्रोग्राम क्या हो गया है जैसे कोई नई गीता लिख दी गई हो? तो क्या इन सब बातों के लिए इमरजेंसी की जरूरत थी? अखबारों में निकलता है कि जब से इमरजेंसी लागू हुई तब से रेलों में बिना टिकट यात्रा कम हो गई है। टिकट लेकर पहले लोग नहीं चलते थे और जब से इमरजेंसी लागू हुई टिकट लेने लगे हैं। तो साहब जैसे पहले से कुछ सम्वत चलते आए हैं वैसे ही आप भी अब २६ जून से इंदिरा सम्वत चलाइए। बिना टिकट यात्रा के संबंध में एक खबर सुनिए

'२ अगस्त आपात स्थिति की घोषणा के बाद से पश्चिम रेलवे के रतलाम डिवीज़न में सात हजार से अधिक व्यक्ति बिना टिकट यात्रा के जुर्म में गिरफ्तार किए गए हैं। पी० टी० आइ०।'

रतलाम डिवीज़न में सात हज़ार व्यक्ति बिना टिकट यात्रा करते हुए पकड़े गए। तो पहले क्या नहीं पकड़े जाते थे? क्या कोई कानून नहीं था? इसी तरह से टैक्स कलेक्शन (कर वसूली) के बारे में हैं। २ अगस्त की खबर है

'केन्द्र के वित्त राज्य मंत्री श्री प्रणवकुमार मुखर्जी ने आज कहा कि गत ४० दिनों में करों की जितनी वसूली हुई है, वह अभूतपूर्व उल्लास का विषय है।

बंबई टेलीविज़न को एक टेलीविज़न भेंट में उन्होंने कहा कि आपात स्थिति के दौरान आबकारी की आमदनी और प्रत्यक्ष कर तथा अन्य करों -

की वसूली म पर्याप्त उन्नति हुई है। इस आपात स्थिति न आलस्य का समाप्त कर दिया है।'

यह है आपका प्रोपगडा। इसस किसी अफसर की कुशलता नही बढगी इसस बिना टिकट यात्रा नही रुकगी। यह ता जसा आपका चरित्र होगा वसा ही काम कमचारी करगा। इस इमरजेंसी म आप कुछ लागो को जन भज देंगे। मानो हमन अर्थात् विरोधी पक्ष न आन्श दिया था कि बिना टिकट वाला का न पकडो हमने कहा था स्मगलिंग चलन दो हमने यह कहा था कि निश्चित क्षेत्र न बढाना हमन कहा था कि लडकों का लूटन दो चाकू छुरे चलन दो और उन्ह तवन करन दो। लोगा का गुमराह करन क लिए कि देखो कितना फायदा हुआ है इन काग्रेस क विरोधिया को बद करन स इसलिए इनका जल म रहन दो जन म रहना इनका ठीक है — यह सब प्रचार हो रहा है।

एक शिशु मदिर की बात है। शिशु मदिर एक छोटी-सी सस्था है जा जनसघ क लोगा क हाथ म थी आर० एस० एस० स उसका कार्ड मतलब नही था उसको आपन जब्त कर लिया। उन लोगो ने हाईकाट म एक दावा दायर कर दिया यह रिट गवनमट क खिलाफ थी। चूकि फसला होने वाला था इसलिए आडिनेंस (अध्यादेश) द्वारा उस जब्त कर लिया जो कोट का अपमान है बहुत बडा अपमान है। अब वह मीसा या किसी म नही आए तो आडिनेंस लागू करक उनका हरण कर लिया। उसक ४०० अध्यापक हैं उनकी तनख्वाह अब नही मिल रही है। आप सोच उन बेचारा का क्या होगा ? पूरे मुल्क म इस 'मीसा म कितन ही ऐस है जिनको उनकी तनख्वाह नही मिल रही है। मैं कहता हू कि माननीय मुख्य मत्रीजी इसको नाट कर ल। कानून म 'मीसा क बदी के लिए प्रावधान है। लोगो क बच्चे भूखा मर रहे हैं उनके घर पर कोई जीविका कमाने वाला नही है, किन्तु ऐस तमाम लोगो को कानून होते हुए भी कोई एलाउस नही दिया जा रहा है। जम बताते नही है हाईकोर्ट का अधिकार ले लिया तानाशाह की तरह स और लोगा को जलो म डाल दिया। किन्तु उनक लिए जो प्रावीजन (प्रावधान) है एलाउन्स का वह भी नही दिया तो उन्हे जल म नही रखा जा सकता। आप विचार कर लीजिए इसपर भी

रिट' होने वाली है जेल मे उसीको रखा जा सकता है जो कारागार कानून के अन्दर आता है अर्थात बदी रखा जाता है जिस पर कोई आरोप हो या जिसको अदालत से सजा हो गई हो, उसको ही आप जेल म रख सकते हैं। आप उनको अदर रखो या बाहर, मुझे कुछ नही कहना लेकिन उनके बच्चो का प्रबन्ध करना आपका फज है उसपर आप पूरा ध्यान दें।

दूसरे छोर पर

आतक के दूसर छोर पर।

नसबदी !

बुलडोजर !

दोनो का इस्तमाल। कायक्रम इ दिरा गाधी का बीस सूत्री, कायक्रम सजय गाधी का पाच सूत्री।

सत्य समाचार नई दिल्ली का एक भाग—जगपुरा। धूमधाम से शादी की तयारी थी। दुल्हन क घर क सामन जसे ही बारात आइ युवा काग्रेस न हवा म एक पोस्टर लहराया। लिखा था—पहले नसबदी फिर सेहराबदी।—**सजय गाधी**

सत्य समाचार परिवार नियाजन का एक दल पुलिस दस्त क साथ हरियाणा म पिपली क पास नाहर गाव म पहुचा। यह २५ नवम्बर १९७६ की घटना है। दल न एक अठारह साल के अविवाहित युवक को नसबदी क लिए पकडा। युवक की बहन चिल्लान लगी—मेरा भाई अभी कुवारा है शादी नही हुई। पर कोइ प्रभाव नही। बहन न एक कुल्हाडी से पुलिस इस्पेक्टर पर आक्रमण किया। पुलिस की गोली स बहन और भाई दोना की मृत्यु। गाव के लागा ने घेर लिया। पुलिस की गोली से तीन मरे। पुलिस स्टेशन को आसपास के गाव वालो न घर लिया और पुलिस थाने म आग लगा दी। थानेदार सहित दा सिपाही जिदा ही जल गए।

भाई-बहन की मृत्यु पर शोक प्रकट करन क लिए आसपास के गावों की करीब एक लाख जनता इकट्ठी हो गई। जनता दिल्ली की ओर माच करन लगी। सी० आर० पी० और पुलिस की ताकत उह बढने स रोकन म असफल हुई।

रक्षामन्त्री, बसीलाल न इच्छा व्यक्त की कि सेना के लोग उन्हे वढने से रोकें। सेना अधिकारी न मना कर दिया।

सत्य समाचार उत्तर प्रदेश मे जिला अधिकारी सशस्त्र पुलिस दस्ते के साथ जीप और गाडियो म दिन डबने के बाद चारो तरफ नसबदी के शिकार के लिए निकल पडत है। जो भी रास्ते म मिलता है, उसे पकडकर नसबदी शिविर म पहुचा दिया जाता है।

डर क मारे कुछ पुरुष लोग स्त्री का भेष बदल लेते है। अधिकतर लोग दिन डूबत-डूबत घर आ जात हैं।

गश्त लगाती इन जीपा और गाडिया को दूर से ही देखकर लोग भागत है और खेतो म जगलों म छिप जाते है।

सत्य समाचार उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर बस्ती लखनऊ उनाव, रायबरेली और हरदोई ज़िला म नसबदी के अत्याचार के कारण जनता और पुलिस म भयकर सघर्ष।

सत्य समाचार नसबदी के लिए मीसा का दुरुपयोग।

सत्य समाचार हिमाचल प्रदेश के पहाडी इलाके म लोग गाव क गाव एक जगह से दूसरी जगह छिपत घूमते रहते थ। परिवार नियोजन क दस्त पुलिस के साथ पहाडी अचल म इस तरह घूमत रहत—जैसे शिकारियों और दस्युओ का दस्ता शिकार क पीछे-पीछे घूम रहा हो।

कुछ भारतीय विद्वानो का कहना है कि विश्व बैंक के दबाव से नसबदी का इतना भयकर काम सजय गाधी न किया। अमरीका का विचार है कि अगर भारत की आबादी इसी तरह बढती गई तो यहा क लोग भूखा मरने लगेंगे। फिर भारत मजबूर होकर कम्युनिस्ट हो जाएगा।

पर लोगों का अनुभव है कि यह नसबदी अभियान यहा के लोगों को भयभीत और आतकित करन क लिए किया गया। जिसकी नसबदी हो जाती है वह वीर पुरुष नहा रह जाता। सजय गांधी भारत को वीरविहीन

बनाकर इसपर मजे से राज करना चाहता है। खुद तो राजा बनेगा ही अपनी मा के बाद भजय का वश ही आगे इस मुल्क पर राज करेगा— जसे मुगलो न किया जसे अग्रेजो ने किया।

अक्तूबर '७५ से लेकर समूचा १६७६ इतना लबा समय सारा देश केवल यही नार सुनता रहा और सवत्र दखता रहा

अगला बच्चा अभी नही दो के बाद कभी नहीं।
हम दो हमारे दो।
नसबदी कराओ सुखी हो जाओ।
नसबदी के कितन फायदे।
परिवार नियोजन कराओ देश को बचाओ।
निरोध का इस्तमाल कर दिया कमाल।
दूर दर्ष्टि पक्का इरादा।
आपात स्थिति अनुशासन पव है।
प्रधान मत्री क बीस सूत्री कायक्रम का हम समथन करते हैं।
हम सुनहरे भविष्य की ओर बढ रहे है।

दिल्ली के सारे मुहल्लो म चौराहो गली-कूचो म नसबदी शिविर खुले थे। वहा दिन रात फिल्मी गीत बजत थे और लोगो को अतरह उपदेश लवचर सुनन पडते थे। लाउडस्पीकर के इस भौंडे शोर के बीच सडक पर चलना मुश्किल हो गया किन किन प्रलोभनो दवावो और अत्याचारो स गरीब विवश लोग खुलेआम पकडकर ले आए जाते थे नसबदी के लिए। रेलगाडियों मे बेटिकट पकडे गए लोग सडक के किनारे बठे मोची पान सिगरेट मूगफली फल आदि बेचन वाले लोग रोजी रोटी क लिए घूमते हुए मजदूर माली वाले बाबू कारीगर और यहा तक कि भिखमगो को पकडकर जबरन सबकी नसबदी हुई।

इस काल म जसे पूरा देश एक नसबदी शिविर बन गया था। नसबदी के राजकुमार खलीफा का हुक्म जाता प्रात क मुख्य मत्रियो के पास। लक्ष्य तय होता कि इतने दिनो म इतनी नसबदी। इसीके आधार पर यह साबित किया जाता कि कौन मुख्य मत्री कितना नजदीक है सजय गाधी के।

मुख्य मत्रियों की आज्ञाए प्रात के सारे ज़िलों मे होती। हर ज़िलाधिकारी को अपने ज़िले के नसबदी कोटा को समय स पहले पूरा करके देना होता। विवश ज़िलाधिकारी को अपनी नौकरी की रक्षा के लिए अपनी पूरी शक्ति और शासन-तत्र को इस्तेमाल करना होता। सारे विभागो के लिए नसबदी कोटे बाट दिए जाते। फल यह होता कि तत्र का सबसे निचला व्यक्ति जसे स्कूल का मास्टर, अस्पताल का कपाउडर ग्राम विकास क्षेत्र का बी० एल०डब्ल्यू० नस और दाई गाव का पटवारी, थान का सिपाही डाकखान का डाकिया आदि की तनख्वाह तभी मिलती जब य अपने मालिका को नसबदी के कस न्त।

पूरा दश इस तरह नसबदी शिविर म कापने लगा। अफसर अधिकारी नसबदी के शिकार के लिए सशस्त्र दौरे करते। शहर स गाव के लोग भागकर अपन गाव जात। गाव से भागकर लोग जगल और खेतो म छिपत।

बुलडोजर

शहर म आतक का प्रतीक था बुलडाजर और रेड (छापा मारना)। बुलडोजर प्रतीक का इस्तेमाल अनेक अर्थो म हुआ जसे मकान गिराना, शहर को सुदर करना सडक चौडी करना पूरा का पूरा मौहल्ला चद मिनटा मे बर्बाद कर देना। विचारों विश्वासा और सकल्पो पर बुलडोजर चलाना।

आपातकालीन शक्ति का प्रतीक बुलडोजर। प्रभुसत्ता और विध्वस का औजार था बुलडाजर। जस मीसा आपातकालान आतक का प्रतीक था जस सी० बी० आई० का प्रतीक था, ठीक उसी तरह राजसत्ता, शासन सत्ता और व्यक्ति की निरकुश शक्ति का प्रतीक था बुलडोजर। गुस्सा आया कि बुलडाजर कुछ दिखाना हुआ तो बुलडोजर।

बुलडोजर का क्षत्र व्यापक था गदी बस्तियो को दूर हटाना झुग्गी झोपडियो को शहर स बाहर करना पुरानी घनी बस्तियों का ठीक करना गाय भस पालन (डेरी) का बस्ती स बाहर करना लोगा की जमीन को सरकारी जमीन करना और हर जन प्रतिरोध क सामन यही बुलडोजर खडा कर देना। जसे हिटलर की शक्ति का प्रतीक था टैंक

आपात स्थिति की ताकत 'बुलडोजर' के रूप में जानी जाती है।

दिल्ली का तुर्कमान गेट

आपातकालिक शक्ति और विनाश का ऐतिहासिक दृश्य है तुर्कमान गेट। यह जगह पहले डी०ए०जी० (दिल्ली अजमेरी गेट स्लम क्लियरेंस स्कीम) के अंदर लाई गई। इस घनी बस्ती को तोड़ने गिराने का काम १५ और १६ अप्रैल १९७६ को दो दिनों तक बड़ी शक्ति से चला।

१८ अप्रैल को कुछ मुसलमान स्त्रियों (मुख्यतः आवाज़ी मुसलमानों की ही थीं) ने बुलडोजर के सामने सत्याग्रह करते हुए धरना दिया। लोग यहां से उठाकर जबरदस्ती दिल्ली से बाहर एक खुले मैदान में छोड़ दिए जा रहे थे। वहां औरतों के लिए न कोई परदा था न जिंदगी की कोई एक बुनियादी चीज।

उसी समय जामा मस्जिद के इलाके में लोगों की जबरदस्ती नसबंदी किए जाने की खबर फैली। अब तक यहां पुलिस की सहायता से परिवार-नियोजन के अधिकारियों के अत्याचारों की शिकायतें प्रधान मंत्री तक पहुंच चुकी थीं पर कहीं कोई असर नहीं।

डी० डी० ए० (दिल्ली डवलपमेंट एथारटी) और पुलिस अधिकारी दोनों ने निरंकुशता से काम लिए। उस इलाके के किसी भी कांग्रेसी राजनीतिक या समाज सेवी की कोई बात न सुनी गई। फलतः उस क्षुब्ध विरोधपूर्ण वातावरण में एक ओर हिंदू मुसलमान जनता दूसरी ओर दिल्ली पुलिस और सी०आर० पी०। दोनों ओर तनाव भरा वातावरण। मुसलमान लोग जो सैकड़ों सालों से यहां रहते आए हैं वे इस तरह अपने बाप दादों के घरों को छोड़ दिल्ली से बाहर त्रिलोकपुरी नहीं जाना चाह रहे थे।

इसी बात पर पुलिस की गोलियां चलीं। दोनों तरफ से मुठभेड़। पूरे दो दिनों तक पूरी तरह वह पूरा इलाका दिल्ली प्रशासन ने 'सील' (बंद) करा दिया। शेष दिल्ली से वह इलाका पूरी तरह से काट दिया गया। और वहां संघर्ष होता रहा।

उस पुलिस गोली कांड में २५ लोगों की मृत्यु हुई, २०० घायल हुए

और २६ लोग गभीर रूप से घायल। न जाने कितने लोग लापता। कुछ लोग टूटते गिरते हुए घरा क मलबो के नीचे दब गए। सी० आर० पी० कवल मारने क लिए ही गोली दागती थी डराने के लिए नही इसलिए जितने स्त्री-पुरुष, बच्चे बूढे सी० आर० पी० से अपनी रक्षा के लिए मकानो म छिप थे वे सब उस बुलडोजर' से पिस गए।

एक हजार म ज्यादा लोग गिरफ्तार हुए। सी० आर० पी० क कुछ जवानो न भागत हुए लागा को लूटा। अनेक अमानवीय अत्याचारा की घटनाए हुइ। मुसलमान स्त्रिया न अपने बाल बच्चा सहित मस्जिदो मक-बरो दरगाहो और मदरसो म छिपकर पनाह ली।

शाही मसजिद तक को तोडन म कोर सकोच न हुआ। आसफ्जली रोड की एक दूसरी मसजिद को भी आधा ताड गिराया गया।

दिल्ली प्रशासन न खासकर इसी मुहल्ल पर क्यों इस तरह पहल बुलडोजर लगाया इसकी वजह समझ म नही आइ। पर इसका एक पुराना इतिहास है और उसका नाम है 'डी० ए० जी० स्कीम । उस पुरान इतिहास क पन्ठो के अनुसार वह पुराना काम इसी समय क्यो पूरा किया जाना था इसके पीछे वही आतक जमाने का ही लक्ष्य था। पुलिस की गोली से मरे हुए कुछ लागो के नाम हैं —

(१) मुहम्मद आरिफ वल्द मुहम्मद बशीन—फक्ट्री मजदूर जामा मस्जिद क्षत्र उम्र २४ साल साकीन २५६३ कूचा मीर हसन। ( )जहीरुद्दीन वल्द नासिरद्दीन उम्र २५ साल साकीन, खारवाला फाटक। (३) जन्नत बेगम वहिन मुहम्मद इब्राहीम उम्र ३० साल फाटक तलिया तुकमानगट क मीतर। (४) सलाउद्दीन पुत्र मुहम्मद यामीन, उम्र १६ साल निवासी १६४२ कूचा चेलान। (५) सुलेमान, वल्द स्वर्गीय बशीर फाटक मीर हसीन चितली कबर। (६) हफीज बरकत का पौत्र (नाम जसा पाया गया) इयूड फर्नीचर शाप गनी ननवा तेली के दूसरी आर तुकमान गट। (७) इकबाल (दूसरे कागजातो की प्राप्ति अभी नही हुई) (८) पुत्र अब्दुल हक (नाम अभी प्राप्त करना है) निवासी मुहल्ला गधेवाल तुकमान गट। (९) अब्दुल मलिक उम्र २२ साल (पुलिस इमद पुत्र मजीद अहमद

उम्र १६ साल निवासी ३८८६ गली खान खाना जामा मस्जिद। (११) मोहम्मद आबिद पुत्र मोहम्मद यासीन उम्र १८ साल निवासी १६७४ सुईवालान जामा मसजिद।

गभीर रूप से घायल य लोग हुए (१) भोना—निवासी फाटक तेलीयान (२) शहाबुद्दीन एलिस बबुआ निवासी फाटक तलीयान और (३) बान्म पुत्र मातिनी—३०३० गली अनसारी कलान मसजिद तुक मान गेट।

लापता लोगो के नाम इस प्रकार बताए गए (१) वाहिद अली पुत्र सलीमुद्दीन निवासी २८२० पहाडी भोजला। (२) घोटी बेगम पत्नी बाबूखान गली सदान खान पहाडी भोजला। (३) मोहम्मद रईस, पुत्र स्व० मोहम्मद हाशाम गली तख्तवाली सुईवालान दिल्ली। (४) अफ राज बगम पत्नी अजीजुद्दीन ११४३ तुकमान गेट रकाबगज। (५) मोहम्मद सुलमान गली तख्तवाली सुईवालान। (६) रजिया बेगम पत्नी मोहम्मद शकिल निवासी ११४० तुकमान गेट रकाबगज। (७) बदरुद्दीन पुत्र इसलामुद्दीन १२१२, रकाबगज तुकमान गट।

सत्य समाचार इक्कीस साल की युवती राजिया जिसने बुलडोजर के सामने लटकर सत्याग्रह करना चाहा उस बी० एस० एफ० के जवान उठाकर ल गए। रजिया तीन दिनो क बाद पागल अवस्था म वहा फिर देखी गई।

सत्य समाचार राजमोहिनी और राजपत दोनों स्कूल अध्यापिका सखिया न कुतुबमीनार से कूदकर आत्महत्या की। नसबदी के लिए केस लान म असफलता के कारण इन्ह ऐसा करना पडा।

सत्य समाचार दिल्ली के ईस्ट पटेल नगर के पास जहा अब शानदार राजेन्द्र प्लस बन गया है यहा पहल धुग्गी झोपडी वालो की बस्ती थी। जगल और पत्थर काटकर गरीब लोगो ने यहा अपन घर बनाए थ। डी० डी० ए० ने सोचा अब जमीन की कीमत काफी बढ गई है तो इन्हें

उजाड़कर इस जगह फ्लैटस और गगनचुंबी इमारतें बनाकर क्यों न करोड़ों रुपये बनाए जाए ?

एक बात मुख्य है। सवर्ण आभिजात्य धनी मुहल्लों में ये नीची अछूत जाति के लोग कैसे रह सकते हैं ? जैसे गावों में सवर्णों की सीमा से दूर अछूत बस्ती होती है, उसी तरह शहरों में भी अछूत गरीब शहर से बाहर ही तो रह सकते हैं।

भारतीय इतिहास रहा है—एक कमाए दूसरा खाए। एक किसान है एक जमींदार है—यह है भारतीय ग्राम समाज। शहरी समाज यह है कि मजदूर जमीन को समतल करके अपनी झोपड़ी झुग्गी बनाए राज प्रशासन एकाएक उसे हथिया ले और पैसे वालों को मनमानी दामों पर बेच दे।

आखो देखा

सोमवार ६सितम्बर १६७६। पटना, प्रात काल पूरे नौ टको म भरे हुए नौजवान युवा कार्गेस के प्ले काड स लिए सडको पर से तेज जा रहे हैं। बहुत ऊंच नारे लगाते हुए इनक्लाब जिन्दाबाद, इन्दिरा गाधी जिन्दाबाद सजय गाधी जिन्दाबाद यूथ काग्रेस जिन्दाबाद।

ठीक सुबह ७ बजे टको म भरे वे सारे युवक पटना हवाई अड्डे पर। भीतर प्रवेश के लिए उनसे कोई टिकट नही। प्रधान मत्री इदिराजी के एक परम विश्वासपात्र बिहार म प्रधान मत्री के प्रभाव का जायजा लेने क लिए आ रहे थ। *क्या बिहार पर राष्ट्रपति शासन लगाया जाए या वत मान मुख्य मत्री पर भरोसा किया जाए ? चुनाव हो तो फल क्या होगा ?*

नेता को स्पष्ट उत्तर चाहिए था।

सध्या छ बजे वह नेता श्रीकृष्ण मेमोरियल के हाल म बिहार के युवा नेताओ पत्रकारो और बुद्धिजीवियो को अपना भाषण दे रहा था। हाल क्या पूरी इमारत बेतरह सजाई गई थी। बिल्कुल जश्न का माहौल था।

सौ कारें दो दजन जीप आधे दजन पुलिस टक हाल के बाहर ठहरे थे। सजे हुए हाल के भीतर सकडों कुर्सिया खाली पडी थी। मुश्किल स पचास लोग नेता का भाषण सुनने बैठे थ। नेता एक ही जादू एक ही दूर दृष्टि और पक्का इरादा विषय पर धुआधार बोल रहा था और हाल म पूर्ण शाति थी।

—पर इतनी कम भीड क्यो ?

अचानक भाषण के बीच वह नेता पूछ बठा।

सयोजक प्रबन्धक अपने कार्यकर्ता से वे नौ ट्रक कहा गए ?

—हा वे लोग कहा है ?

भाषण आगे नही बढा। नेता गुस्से से हाल के बाहर जाने लगा। तभी वे नौ ट्रक भरे लोग आए।

—कहा थे अब तक बत्तमीज ।

प्रबधक न बुलाकर कहा—बवकूफो कहा थे ?

युवक नसा टक से नीचे उतरत हुए बोना—हम लोग एक बहुत जरूरी काम म लग हुए थ। कोतवाली के सामने हम लोग महाशय जितेन्द्र के लिए नारे लगा रहे थे ।

—यह जितन्द्र कौन है ?

—काग्रेस एम० एल० ए० ।

—क्या हुआ ?

—वह गिरफ्तार कर लिए गए हैं।

—क्यो ? कसे ?

—आपने नही पढा आज का अखबार। वह और उनके तीन दोस्तो न मिलकर बिन्दू नामक एक स्त्री के साथ बलात्कार किया, जो एम० एल० ए० के पास काई न्याय मागन आई थी ।

सादे वस्त्र मे एक पुलिस के मुह से निकला—हा वह किसी मदद के लिए आई थी बचारी।

सरकार के किसी भी दफ्तर म तब तक काम नही किया गया जब तक नसबन्दी के मुहमागी तादाद म केस नहा दिए गए। अस्पताल म रोगियो का इस बिनाह पर दाखिला नही दिया गया। राशन तेल चीनी वगरह की उचित दर दूकानो का भी स्टाक तक रीलीज नहीं किया गया जब तक नसबन्दी केस नही द दिए गए। लाइसेंस परमिट वगैरह के लिए ता यह अनिवाय कर ही दिया गया। मार्केट एसासिएशन के लिए नसबन्दी का कोटा बाध दिया गया। व्यापारी नसबन्दी के एक एक केस के लिए पाच-पाच सौ रुपय खच करत रह। पुलिस को पसा देकर या डाक्टर स केस लकर पैस दत रहे। बचारे गरीब इस कदर पकडकर ल जाए जात रहे जैस बेबस बकरे जिबह के लिए ले जाए जात हैं।

पजाब का एक व्यापारी (सर्वे फाम से)

सजय गाधी के आगमन पर यहा के यूथ काग्रेस क वकरों ने छो—

लगभग सभी दुकानदारो से जबरन सौ-सौ रुपये वसूल किए। जिसन सौ रुपय का सजय टक्स देने म थोडी भी आनाकानी की उसको डी० आई० आर० म गिरफ्तार करन की धमकी दी गई।

फैजाबाद के एक गल्ला व्यापारी

बीस सूत्री कायक्रम के क्रियावयन के नाम पर व्यापारियो को जबरन घटी हुई कीमत पर माल बेचन को पुलिस डी० एम० फूड कट्रोलर, वगरह ने बाध्य गया। जब स्टाक खत्म हो गया तो व्यापारियो ने नया स्टाक नही खरीदा। महगा खरीदकर सस्ता वह *आखिर बेच कैसे सकता था*। इन्सपेक्टर से लकर अदना सिपाही कोई न कोई गलती बताकर अपनी रिश्वत वसूल करता रहा। एक व्यापारी स तो सिफ इस पर वसूल कर लिए कि सारे स्टाक मे सिफ एक तौलिय पर कीमत नही लिखी थी। (शाहदरा के एक व्यापारी के सर्वे से)।

मुझसे जिला काग्रेस के अध्यक्ष ने काग्रेस सेवा दल क शिविर के लिए एक हजार रुपये मागे। इनकार करने पर मुझे 'मीसा' म गिरफ्तार कर लिया गया। आजकल मैं पेरोल पर हू।

प्रतापगढ के एक व्यापारी से

आपातकाल मे व्यापारियो पर चलाए गए देशव्यापी दमन के व्यापक सर्वेक्षण के फार्मों के अदर से कुछ नमूने हैं ये। न तो इसमे दमन के सभी प्रकार है और न ही अपवाद हैं।

सर्वेक्षण मे प्राप्त ६४२ फार्मों म सत्ताधारी दल युवक काग्रेस पुलिस प्रशासन स लेकर छोट स छोट सरकारी अमला के माध्यम स जसे भीषण चक्र चले उसका पूरा खुलासा ११ राज्यो क ८७ स्थानो के सर्वेक्षण स नही हो सकता। लकिन इनस भी जो कुछ सामने आता है वह व्यापारी समाज पर हुए अत्याचार और उत्पीडन का एक दर्दनाक चित्र उपस्थित करता है। केवल दो चार राज्यो म यह स्थिति है ऐसा नही है।

क्या आपातकाल क दौरान व्यापारियो को सरकारी उत्पीडन का सामना करना पडा ? इस प्रश्न क उत्तर म तमाम सर्वेपत्रो का एक ही

उत्तर था। अलवत्ता उसका कारण अलग-अलग बताया गया। मख्या के अनुसार ये कारण इस प्रकार थे

(क) सरकार सारे समाज मे दहशत पदा करना चाहती थी। व्यापारी वग पर होने वाल दमन से भय तज गति स सक्रामक हो जाता है। क्योकि इसका समाज से राज रोज का सीधा नाता है।

(ख) जनता को सरकार की अनियन्त्रित सत्ता का प्रत्यक्ष एहसास करान क लिए।

(ग) यह बतान के लिए कि कीमतें व्यापारी वग की मुनाफाखोरी क कारण बढ़ता हैं और इमरजेंसी के अधिकार से कीमतो को रोका जा सका है। इसम सरकार न एक तरफ अपनी गलत कर-नीति वित्तीय नीति और उत्पादन की कमी आदि को छिपाकर सारा दोष व्यापारी समाज पर मढ़ने की कोशिश की।

(घ) टक्स इन्स्पेक्टर शाप इस्पेक्टर पुलिस सरकारी कारिंदो की उत्पीडन म जबरदस्त चुस्ती का कारण आपातकाल का फायदा उठाकर रिश्वत स बराक्टोक पैसा पदा करना था। भ्रष्टाचार का एसा आलम पहल शायद ही कभी रहा हो। भ्रष्टाचार की इस प्रेरणा से भी अमला वग ने व्यापारियो पर कहर ढाए।

(ङ) यह भी कारण बताया गया कि आम तौर पर सरकार की यह धारणा रही है कि व्यापारी विपक्ष के साथ है खास कर जनसघ के साथ। इस अपराध की सजा के तौर पर उन्हे सताया गया।

(च) स्थानीय काग्रसियो न आपसी वैरभाव का बदला इस मौके पर लिया।

सरकार की किस एजेंसी न सबस ज्यादा उत्पीडन आतक फैलाया है। सर्वे से सावदशिक तौर पर जो तस्वीर उभरती है उससे साफ है कि हर स्थान पर निम्नाकित म से कम स कम दो या तीन एजेंसिया सक्रिय रहीं —

(१) सेल्स टक्स या इनकम टैक्स इन्स्पेक्टर एक्साइज महकमा (२) पुलिस (३) काग्रेस और यूथ काग्रेस (४) नगरपालिका या निगम (५) वटस एण्ड मेजरमेंट महकमा (६) फड कलेक्टर।

इनकी कारवाइयो का व्यापक असर इसस ही समझा जा सकता है कि

केवल ८७ स्थानों में हुई व्यापारियों की गिरफ्तारियों की संख्या २७२१ रही। निश्चय ही देश भर में दस हज़ार से ज्यादा व्यापारी गिरफ्तार किए गए। फैज़ाबाद समस्तीपुर शिमला गया रोहतक विजयवाड़ा इन्दौर आदि बीसियों स्थानों के सर्वे फार्मों में ऐसे सौ से ज्यादा मामले हैं जिनमें किसी व्यापारी को सिर्फ इसलिए गिरफ्तार किया गया कि उसने कांग्रेस या यूथ कांग्रेस को चंदा नहीं दिया। गिरफ्तारियों और चालान के इनसे कहीं ज्यादा मामले ऐसे हैं जिन्हें महज़ रिश्वत न देने के लिए सताया गया।

सर्वे से एक स्पष्ट चित्र यह उभरता है कि कांग्रेस और यूथ कांग्रेस ने आपातकाल का फायदा उठाकर पुलिस व सरकारी महकमों के दबाव से लगभग सारे देश में पैसा इकट्ठा किया। सर्वे फार्मों में इस तरह के अनगिनत ब्यौरों को देखकर यह विश्लेषक इस निश्चित नतीजे पर पहुंचा है। अगर सिर्फ इस पैसा बटोरने के मामलों की एक एक स्थान पर पूरी जांच की जाए तो चौंकाने वाले तथ्य सामने आएंगे और आपातकाल की सड़ान और वीभत्सता का सही जायज़ा मिलने में मदद मिलेगी।

पैसा बटोरने के जिन तरीकों का इस्तेमाल किया गया उनका संक्षिप्त ब्यौरा इस तरह है— (१) नसबन्दी के नाम पर कैम्प लगाने इमदाद देने से लेकर यों ही प्रचार करने के लिए (२) ५० से लेकर सौ सौ रुपये तक कांग्रेस का झण्डा जबरन सब व्यापारियों को बेचा गया। (३) संजय गांधी के स्वागत, थैली स्वागत द्वार यूथ कांग्रेस के शिविर वगैरह के नाम पर। (४) कांग्रेसी नेताओं की सभा में जनता को ले जाने के लिए बसों या अन्य वाहनों के लिए। (५) कांग्रेस स्मारिकाओं के विज्ञापनों के लिए। (६) किसी बहाने छोटा-मोटा मेला करके उसमें जबरन स्टाल एलाट कर भारी रकमें ली गई।

बीस सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत स्वेच्छा से कीमतों में कटौती करने के सिलसिले में पूछे गए सवाल के उत्तर में प्रायः यह कहा गया कि भयानक दबाव के कारण जब तक स्टाक था तब तक कटौती की लेकिन फिर स्टाक लाए ही नहीं। आम जनता को काफी तकलीफें हुई। इसके कारण कीमतों में कुछ ही दिन कमी हुई। प्रायः यह भी हुआ कि बारह प्रतिशत कीमत बढ़ा कर दस प्रतिशत घटा दी गई।

नसबदी के सम्बन्ध म पूछे गए प्रश्नो पर निम्नलिखित तथ्य सामने आए

केन्द्र न राज्यो का कोटा बाध दिया, राज्या ने जिलो का। जिला अधिकारियो न मनमान ढग से थानो स्कूला, मार्केट एसासिएशनो वगरह के कोटे बाध दिए। छाटे बडे सब सरकारी काम मे नसबदी के केसो की जरूरत पडन लगी।

दिल्ली जसे अनक बडे शहरा से जबरिया नसबन्दी के डर से मजदूर काम छोडकर गाव भाग गए।

सर्वेक्षण से यह भी बात स्पष्ट हुई कि नसबन्दी कोई दो चार राज्या म जबरिया ढग से हुई हो, सो बात नही। सारे दश मे हुई। राज्य सरकारा मे सजय गाधी के समथन की होड लगी। मत्रिया से लेकर अमला तक न जबरिया नसबदी के अजीबोगरीब तरीकों के आविष्कार किए।

कुछ अन्य प्रश्नो के उत्तर क निष्कष इस प्रकार है

(१) आपातकाल म गुड चीनी तेल, डालडा खाद वगरह की कीमतें अनाप शनाप ढग स बढी। बीस सूत्री कायक्रम स कीमतें बढने से रुकी नही। (२) काग्रेस की लाकप्रियता म भारी गिरावट आई। आतक कभी लोकप्रिय नही हा सकता। (३) आपातकाल के बारे म आम घणा का वातावरण सारे मुल्क मे है। (४) इस सरकार का ज्यादा व्यापारी तानाशाही ही मानता है। आधे से अधिक कम अधतानाशाही मानत है। बहुत कम व्यापारी इस लाकतत्री मानत है। (५) विपक्ष के बारे म आम धारणा यह बनी है कि य लोकतत्री लडाई लड रहे है और इनकी मदद करनी चाहिए य भरोसा लायक है।

विभिन्न राज्यो के सर्वेफार्मों की कुछ छिटफुट जानकारिया

दिल्ली तिलक नगर मार्केट के प्रधान को जिनका किसी दल से ताल्लुक नही था काग्रसी नही चाहत थे। उन्हे प्रधान पद से हटान लिए १०८ १५१ धारा म जेल भिजवा दिया गया। (ऐसी सकडो अन्य घटनाए अनक स्थानो पर हुइ है)।

पालम कालानी के एक व्यापारी को बेकसूर पकडा गया और थाने मे नगा करके पीटा गया।

दिल्ली म दजनों कालोनियों म डिमालिशन' हुआ। अकेले तिलक नगर म १ ००० से ऊपर दूकानों पर बुलडोजर फर डाला गया। विदेशी पत्रकारो ने गफ्फार मार्केट का नुकसान कई करोड म आका।

शाहदरा म बहुत-से खोमचे वाला न अपना धधा ही बन्द कर दिया। पुलिस उनका खामचा उठाकर चलती बनती थी।

पजाब लुधियाना म पजाब के नेता सरदार एम० एम० गिल आए थे तो मार्केट एसासिएशन स जबरन पचास हजार से अधिक रुपया वसूल किया गया।

लुधियाना औद्योगिक बस्ती का एक कमचारी श्री सोहनलाल जबरिया नसबन्दी क बाद आज ६ महीन स बिस्तर पर बीमार पड़ा है।

पजाब क एक होजरी व्यापारी लिखत है मैंन जीवन भर काग्रस को वोट दिया है। पर अब यह भूल नही हागी।

बिहार गया क एक व्यापारी लिखत हैं—साहब, सजय गाधी क्लब ने जीना हराम कर दिया है। हर महीन उन्ह किसी न किसी बात क लिए मुहमागी रकम चाहिए।

पुरानी गोदाम गया के एक व्यापारी का चावल म मिलावट करन क नाम पर पकडा गया। आठ दिन कोतवाली म रखा गया। १५ ००० रुपये रिश्वत लेकर छोड दिया गया।

उत्तर प्रदेश फजाबाद के व्यापारियो क फार्मों म गुप्तचरो क भ्रष्टाचार के कई हवाल हैं—कचहरी रोड रायबरेली से एक व्यापारा लिखते हैं कि डिमोलिशन का नुकसान यहा कम स कम दस करोड का हुआ है।

प्रतापगढ म जबरिया नसबन्दी का इतना व्यापक प्रकोप रहा है कि गाव वाला जस ही नज़र आया उस पकडकर आपरेशन कर दिया जाता था। गाव वाला न शहर जाना ही बन्द कर दिया। लोगो ने घर से निकल बन्द कर दिया मानो कफ्यू लगा हो।

हिमाचल कसौली युवक काग्रेस रली और परमार साहब को थैली भेंट करने के लिए मनमाना पसा वसूल किया गया। मण्डी के गावो म नसबन्दी की टीम आने की खबर मात्र से सारा गाव (मय औरतो के) जगलों मे चला जाता था।

किशोर के गीत—क्यो दिन गए बीत ?

तानाशाही पागलपन का एक नमूना और सामने आया है। सिर्फ कुछ हफ्ते पहले तक आकाशवाणी के विविध भारती से हर दूसरा गाना लोकप्रिय पार्श्वगायक किशोरकुमार का बजता था। लेकिन इन हफ्तों में उनके गीतों पर पूर्ण प्रतिबन्ध लागू हो गया है। कारण ?

राजधानी में युवक कांग्रेस ने गीतों भरी शाम का आयोजन किया। किशोरकुमार की हिमाकत देखिए कि उसने बिना पैसा लिए आने से इनकार कर दिया। बस फिर क्या था युवक कांग्रेस क्रुद्ध हो गई। सरकार ने फैसला कर लिया कि किशोर के गीत रेडियो पर नहीं सुनाए जाएंगे।

इन्दिरा सरकार की जेलों में शहीद हुए व्यक्तियों की सूची

१ वैद्य बैजनाथ कपिल सदस्य दिल्ली प्रदेश जनसंघ कार्यसमिति मीसा के अंतर्गत २४ जून, १९७५ को गिरफ्तार हुए। १ फरवरी १९७६ को हृदय गति रुकने से मृत्यु। चिकित्सा की कोई उचित व्यवस्था उपलब्ध न कराई गई।

२ श्री तिलकराज नरूला शाहदरा जिला जनसंघ प्रधान डी०टी०यू० के भूतपूर्व अध्यक्ष २८ जून १९७५ को गिरफ्तार २५ अप्रैल १९७६ को मृत्यु। उन्हें प्राइवेट चिकित्सा कराने की अनुमति नहीं दी गई थी।

३ श्री मोहनलाल जाटव अध्यक्ष दिल्ली प्रदेश भारतीय लोकदल २५ जून, १९७५ को गिरफ्तार। १७ मई १९७६ को सी० बी० आई० के कार्यालय में दबाव के कारण मृत्यु।

४ श्री भैरूलाल सरवारा निवासी कनकरोली जिला उदयपुर राजस्थान २३ नवम्बर १९७५ को सत्याग्रह के समय पूर्ण रूप से स्वस्थ थे, २९ नवम्बर १९७५ को उनके पेट में दर्द हुआ था और उन्होंने अहमदाबाद में इसकी चिकित्सा के लिए प्रार्थना की थी परन्तु देर तक सुनवाई न होने के कारण १४ जनवरी, १९७६ को मृत्यु हो गई। वे एक गरीब दूकानदार थे। मृत्यु के समय उनकी आयु २५ वर्ष थी।

५ श्री बिरजू शाह निवासी सीतामढ़ी बिहार आयु ५५ वर्ष वे व्यापारी थे। उन्होंने सत्याग्रह किया जेल में लाठीचार्ज के कारण दरभंगा जेल में मृत्यु।

६ श्री मधुकर बोवादी निवासी बालापुर जिला अकोला महाराष्ट्र, आयु ४३ वर्ष। १४ जुलाई १९७५ को गिरफ्तार कर अकोला जेल में रखे गए जहां बीमार होने के कारण १६ जुलाई १९७५ को मुक्त कर दिए गए और १८ जुलाई १९७५ को उनकी मृत्यु हो गई।

७ श्री शंकरराव बोबाद पेशे से डाक्टर, काटला दीनागड महाराष्ट्र नगर संघ चालक हृदय रोग की चिकित्सा कराते हुए अस्पताल में मृत्यु आयु ७० वर्ष।

८ श्री केशवराव कुलकर्णी गोन्दिया ताल्लुका महाराष्ट्र के संघ चालक अस्वस्थता के कारण परोल पर रिहा एक मास पश्चात मृत्यु आयु ७४ वर्ष।

९ श्री डी० डी० पटवर्धन उरन जिला कोलाबा महाराष्ट्र के ताल्लुका संघ चालक उद्योगपति १८ फरवरी १९७६ को गिरफ्तार हृदय गति रुकने से २५ मार्च १९७६ को थाना जेल में मृत्यु।

१० श्री एम० आर० गुलयानी निवासी विटा जिला सांगली महाराष्ट्र राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ कार्यकर्ता पेट से दर्द विक्षेपन आयु ५२ वर्ष पूना अस्पताल में असफल आपरेशन के कारण कुछ समय पश्चात मुक्त, उसके एक सप्ताह बाद ३१ मई १९७६ को सतारा में मृत्यु।

११ श्री प्रभाकर राज निवासी कटनी मध्यप्रदेश एक सामाजिक कार्यकर्ता।

१२ श्री सोमनाथ हाडन निवासी सूनी मध्य प्रदेश विद्यार्थी सामाजिक कार्यकर्ता आयु १९ वर्ष।

१३ श्री कुलप्पा निवासी अनाकल तलाक बंगलौर जिला कर्नाटक हरिजन कार्यकर्ता तथा कृषक आयु २५ वर्ष।

१४ श्री हरिवल्लभ भाई भट्ट सूरत गुजरात के जनसंघ कार्यकर्ता आयु ६० वर्ष। १३ मार्च १९७६ को गिरफ्तार १४ अप्रल १९७६ को मृत्यु।

१५ श्रीमान रामानुजाचाय श्री महाराज आयु ५५ वष पीठाधीश लाताद्र मठ अयोध्या राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ के अयोध्या शाखा सघचालक फैजाबाद जेल म अस्वस्थ, खराब अवस्था होन पर छोड दिए गए बाहर आन पर स्वगवास।
१६ श्री वशधर यादव कृषक आयु ४० वष अस्वस्थ ज्वर स्वास कष्ट, गौंडा जेल म ७ ८ माच की रात म मत्यु।
१७ श्री विशनलाल मित्तल सहारनपुर सचालक राष्टीय स्वयसेवक सघ आयु ७५ वष सहारनपुर जेल मे अस्वस्थ स्वगवास।
१८ डाक्टर इन्द्रजीत सिंह डेंटस्ट भूपूव सघचालक बुलन्दशहर आयु ६८ वष।
१९ श्री कान्तिस्वरूप व्यापारी आयु ५० वष अनूपशहर म व्यापार भारतीय जनसघ ज़िला मत्री बुलन्दशहर।
२० श्री दौलीराम अतरौली जिला अलीगढ आयु ८० वष पुलिस ने मारा पीटा यातनाए दी जेल मे पहुचकर मत्यु।
२१ श्री चेतराम कृषक ज़िला बरेली।
२२ श्री नन्दीसिंह बुलन्दशहर।
२३ श्री प्रेमसिंह आयु ८५ वष अमतसर जेल मे बदी अकाली दल।
२४ श्री बाबूसिंह शाहजहापुर आयु ४० वष, राष्टीय स्वयसेवक सघ प्रचारक, अपने मित्र के बन्धुआ का सत्याग्रह कराकर वापस लौटत हुए दुघटना म मत्यु।
२५ डा० सत्यव्रत सिन्हा आयु ५० वष, इलाहाबाद म मीसा बदी। मत्यु ७ नवम्बर १९७६।

आपात्स्थिति म भारतीय समाज, जयनीति और राजतन्त्र की जो सचाइया लिखी उससे इस काल की प्रकृति और स्वरूप को समझने म बडी मदद मिल सकती है। इन सचाइया के खिलाफ अन्याय दमन और बबरता के खिलाफ यहा के लोगों न कैसे क्या किया यह दस्तावेज बहुत ही महत्त्वपूण है। भारतीय समाज और उसकी अपराजेय चेतना का अथपूण साक्ष्य है।

आपात स्थिति मे प्राप्त राजतन्त्र के पास जहा सारी शक्तिया उसकी मुट्ठी म हो जहा असहमति भी अपराध माना जाए जहा एक ओर ताना शाही तन्त्र हो सवशक्तिमान एक राजनीतिक दल का शासन हो शेप सारे विपक्षी दल के लोग जेल म डाल दिए गए हो वहा उस घोर अधकार म किसने जला रखा प्रकाश ?

अधकार के खिलाफ

यह घोर अधकार लाया ही गया था एक प्रकाश के खिलाफ—उसका नाम था जयप्रकाश। यह अधेरी रात अचानक आई ही थी उठती हुई लोक चेतना और लोकशक्ति के खिलाफ जिसके सेनानी थे छात्र गाव-शहर क निदलीय युवा लोग उन्होने ही मिलकर बनाई थी छात्र सघष वाहिनी तरुण शाति सेना युवा सघष वाहिनी। और सबके सेनानायक थे जयप्रकाश—जिन्हें पूरे भारत के छात्रो और युवको ने नाम दिया था—लोकनायक।

यह अधकार एक व्यक्ति एव दल की तानाशाही से आया था। एक ओर थी—राजसत्ता दूसरी ओर उसके खिलाफ हाथो म मशाल लिए लोकसत्ता। एक ओर बबर राजशक्ति दूसरी ओर सत्याग्रही प्रजाशक्ति।

एक ओर सवशक्तिमान प्रधान मत्री इन्दिरा गाधी दूसरी ओर तपस्वी त्यागी, वद्ध शरीर जयप्रकाश। एक ओर समूचा राज्य दूसरी ओर समूची जनता। एक ओर तानाशाही शक्ति, दूसरी ओर लोकनायक जयप्रकाश।

दरअसल यह युद्ध अधकार और प्रकाश के बीच था। यह सघष असत्य और सत्य क बीच था। यह लडाई एक निरकुश सत्ता और लोक सत्ता क बीच थी। ऐसी लडाइया ऐसे सघष हमारे यहा बार बार हुए हैं—हमारी अनेक पुराण कथाए इसी तरह के सघष की गौरव गाथाए हैं—कस और कृष्ण की कथा कौरवो और पाडवो की कथा राम और रावण की कथा हिरण्यकशिपु और प्रह्लाद की कथा आदि। आधुनिक स्वतत्रता सग्राम म अग्रेज सत्ता और महात्मा गाधी की कथा, इसीका उदाहरण है। स्वतत्र भारत मे एक दल के इतने लम्बे एकछत्र शासन के भीतर से पनपे एक व्यक्ति की तानाशाही के खिलाफ अब लोक-चेतना का सघष था।

इसी सघप क नायक थे—जयप्रकाश लोकनायक जयप्रकाश।

आपात् स्थिति की राजशक्ति इसी लोकनायक को समाप्त करने के लिए आई। सारी निरकुश शक्ति उसी उभरती हुई लोक चेतना प्रजा तात्रिक शक्तियों के खिलाफ उठ खडी हुई।

इसलिए २५ जून की आधी रात को आपात स्थिति लागू होने से पूव पहली गिरफ्तारी उसी लोकनायक जयप्रकाश की हुइ। और इस तरह अधकार के खिलाफ प्रकाश के सीधे विकट सघप का अभूतपूव अध्याय शुरू हुआ।

इदिराजी और उनक शासन न यह अभियोग लगाकर जयप्रकाश का गिरफ्तार किया कि उन्होने पुलिस और सेना को राज्य शासन के खिलाफ भडकान की कोशिश की। जे० पी० न इस अभियोग और आरोप को मिथ्या कहा — मैंने पुलिस या सेना के जवानो स यह कभी नही कहा कि व मौजूदा शासन के खिलाफ विद्रोह कर दें और हमारे आदोलन म शामिल हो जाए। इमरजसी के पहले अपन सावजनिक भाषणा और वक्तव्यो मे मैंने हमेशा इसी बात पर बल दिया था कि पुलिस के जवानो को गरकानूनी आदेशा का पालन नही करना चाहिए। यह पुलिस एक्ट म ही लिखा हुआ है कि अगर पुलिस का कोई आदमी गरकानूनी आदेश का पालन करता है, तो वह सजा का भागी हा सकता है। अपन भाषण म मैंने पुलिस एक्ट की ही बात दोहराई थी। इमरजेंसी के दौरान और उसके पहल भी पुलिस के लोगो न ऊपर के अधिकारिया के आदेश पर शातिपूण सत्याग्रही जनता और युवका पर जिस बेरहमी स प्रहार किए है उसे देखकर कोई भी कहगा *कि पुलिस को एस आदशो का पालन नही करना चाहिए और मैं मानता हू* कि यह कहना अपराध नही है। जहा तक सेना का सबध है मैंने यही बार बार कहा है कि सना को देश के प्रति राष्ट्रीय झडे क प्रति और सविधान क प्रति वफादार रहना चाहिए। अगर किसी दल की सरकार अपने दलीय हिता का आग बढाने या लोकतत्र का दबाकर अपन दल की तानाशाही कायम करन के लिए सेना को इस्तेमाल करना चाहे तो सना का कतव्य है कि वह लाकतत्र की रक्षा करे क्योंकि हमारा सविधान लोकतात्रिक है। यह कहने की जरूरत मुझे तब पडी जब मैंने अनुभव किया कि इदिराजी

सेना का इस्तेमाल नागरिक का मुचलन के लिए कर सकता है। सीमा सुरक्षा सेना (बी० एस० एफ०) का इस्तेमाल तो उन्होंने हमारे आन्दोलन को दबाने के लिए किया ही है। इसलिए मैंने सेना से और पुलिस से जो कुछ कहा है वह विद्रोह भड़काने के लिए नहीं बल्कि एक विद्रोही परिस्थिति से देश को बचाने के लिए कहा है। अगर यह कहना गुनाह है तो मैं उसे कबूल करता हूं। इन्दिराजी ने हमारे आंदोलन पर दजनों आरोप लगाए हैं और वे सारे आरोप निराधार और मिथ्या हैं यह मैं पूरी जिम्मेदारी के साथ कह रहा हूं। मुझे इस बात की खुशी है कि उनके लाख प्रयास के बावजूद बिहार की और भारत की जनता यही मानती है कि अपनी व्यक्तिगत तानाशाही का औचित्य सिद्ध करने के लिए इन्दिराजी ने मिथ्या आरोप लगाए हैं और मात्र अपने पद और सत्ता की रक्षा के लिए उन्होंने इमरजेंसी लगा रखी है और समाचारपत्रों का मुंह बंद कर दिया है।'

जे० पी० चंडीगढ़ अस्पताल के एक कमरे में परम एकाकी रूप में बंदी किए गए। उस कमरे से बाहर उस अंधकार के खिलाफ जो पहली प्रकाश किरन फूटा, वह था ज०पी० का यह शब्द जो २७ जुलाई १६७५ को चंडीगढ़ जेल में उनसे मिलने गए उनके भानजे अशोक के द्वारा बाहर आया—संपूर्ण क्रांति अब नारा है भावी इतिहास हमारा है—क्या अब यह इतिहास का एक व्यंग्य मात्र बनकर रह जाएगा? सब— जी हजूर कायर बुजदिल तो जरूर हंसते होंगे हम पर, आसमान के सितारे तोड़ने चले थे गिरे हैं अब जाकर नरक में। लेकिन दुनिया में जो कुछ किया गया है वह सितारे तोड़ने वालों ने ही किया है, चाहे भले ही उनके लिए उनको प्राणों का मूल्य चुकाना पड़ा हो।

संपूर्ण क्रांति के बदले आज तो सम्पूर्ण प्रतिक्रांति की घटाटोप बला है। इस समय तो उल्लू और गीदड़ बड़े प्रसन्न हैं। चारों तरफ—हुआ हुआ और हू हू की आवाज सुनाई देती है। लेकिन कालचक्र तो घूमता ही रहता है। रात चाहे कितनी ही अंधेरी हो प्रभात फूटकर ही रहता है।

तो क्या प्रभात आप से आप फूटेगा? और हम हाथ पर हाथ धरे प्रतीक्षा करते रहेंगे? नहीं। सामाजिक क्रांति यदि प्राकृतिक क्रांति का

अनुसरण मात्र करती तो मानव के पुरुषार्थ के लिए समाज की प्रकृति और परिवर्तन के लिए कोई स्थान ही नहीं रह जाता। तो फिर क्या करना होगा ? उत्तर है कि जो नारा लगाते और गीत गाते थे उन्हें बलिदान देना होगा और उनका जो अगुआ था, उसकी बलि पहली बलि होगी। सशय मिट चुके हैं। निश्चय हो चुका है। जयप्रकाश नारायण

(चडीगढ जेल की डायरी)

यह नन्हा सा प्रकाश बाहर आकर उस अधकार म आस्था जगाने लगा। कवि भवानीप्रसाद मिश्र क कठ से तब यह आस्था स्वर फूटा

तुम वह डूबे हुए तारे हो
जो फिर अधेरा होने पर
सबसे पहले आओग
आसमान म।
तुम्हारा ही वह नाम है
जो दीपित नहीं होगा मेरे गान म
पर दीपित करेगा गान को
और वह गान
अगर तुमने चाहा तो
सीमित करेगा आसमान को
व्यापक करेगा गीत को
अधेरे पर प्रकाश की जीत का
और करोडो कठ एक साथ कहेगा
जयप्रकाश !

जून १९७५ के बाद ये वे अधकारपूर्ण दिन थे जब सारा देश तानाशाही शिकजे मे जकडा हुआ था। सारा बिहार उत्तर प्रदेश मध्य प्रदेश, दिल्ली पजाब राजस्थान गुजरात और बगाल जल बन गया था।

इस प्रकार देश की सुरक्षा शांति और विकास क नाम पर सिद्धातहीन और भ्रष्ट राजनीति देश म चलाई जा रही थी और जनतत्र को कुठित कर सर्वसत्तावादी व्यक्तितत्र का निर्माण किया जा रहा था। इसको रोकने के

लिए इसके खिलाफ जो भूमिगत काय पम्फ्लेटस, हथपरचे, दीवारो पर पोस्टम लगाने और लिखने के जितने प्रयत्न हो रहे थे, उनम सवत्र जे०पी० के ये विचार उभर रह थे—इसको रोकन का एक ही उपाय है कि आप सजग और सगठित होकर अपनी आवाज बुलद करें और उन अधिकारो की माग करें जो छीने गए हैं और छीन जा रहे हैं। कहन हैं अधिकार दिया नही, लिया जाता है। इसलिए आपका भी अपना अधिकार लना होगा, *अपनी सगठित शक्ति स हासिल करना होगा। आज शासन की* तरफ से नागरिकों के कतव्य पर बहुत जोर दिया जा रहा है और सविधान म भी नागरिको के कुछ बुनियादी कतव्य दाखिल किए जा रह हैं। जाहिर है कि यह सब जनता के गल मे तानाशाही का शिकजा मजबूत बनान के लिए किया जा रहा है। जनता को कतव्य का उपदश दन वाला का पहला कतव्य यह है कि वे *जनता को उनके छीन गए अधिकार लौटा दें और* वह लोकतत्र वापस कर दें जो हमन राष्टीय आजादी क साथ हासिल किया था। कतव्य जनता के लिए और अधिकार इदिराजी क लिए या उनके मुट्ठीभर अलम-बरदारो के लिए यह तो नही चल सकता। जनता अपना कतव्य करेगी लकिन अपने अधिकार खोकर नही। अपने खोए हुए *अधिकारो को हासिल करना ही आज उसका सबसे महान और बुनियादी* कतव्य है।

अधिकारो की प्राप्ति के लिए हम सवप्रथम भय का त्याग करना होगा। हमने जिस तरीके से राष्टीय आजादी हासिल की थी, उसी तरीके से हम लोकतात्रिक आजादी नागरिक आजादी भी हासिल कर सकते हैं। गाधीजी क नतृत्व म आजादी क लिए लाखो लोग जेल गए और जेलें भर गइ। हमारे आदोलन के सिलसिल म भी डेढ-दो लाख लोग जेल गए। जानकार लोग बताते हैं कि आजादी की लडाई के दौरान भी एक समय मे इसम अधिक लोग जेल नही गए थे। लेकिन अब इतना ही काफी नही है। मौजूदा सरकार विदेशी अग्रेजी सरकार म भी ज्यादा जालिम है। अग्रेज सरकार पर ब्रिटिश ससद का अकुश था। वतमान शासन तो निरकुश है। एस शासन से अधिकार प्राप्त करन के लिए और भी कडी कुर्बानी करन क लिए तयार होना होगा। जल का भय त्यागना तो पहली शत है।

जे० पी० की रिहाई

सरकार ने जे० पी० को तब रिहा किया जब उसे विश्वास हो गया कि जे० पी० का रोग असाध्य है और वह कुछ थोड़े ही दिन जीवित रहने वाले हैं।

रिहाई के कुछ दिन सप्ताह पहले जे० पी० को बताया गया कि उनके दोनों गुर्दे (किडनी) बेकार हो गए हैं। गिरफ्तारी से पहले गुर्दे (किडनी) का कोई रोग उन्हें नहीं था। चण्डीगढ़ में चार महीनों की नजरबन्दी के दौरान डाक्टरों ने कभी नहीं बताया कि उनके गुर्दों में कोई खराबी है। पर एकाएक ५ नवम्बर १९७५ की आवश्यक जांच के बाद डाक्टरों ने घोषित किया कि उनके दोनों गुर्दे बिलकुल खराब हो गए हैं। जे० पी० बिहार-वासियों के नाम अपनी चिट्ठी में इस प्रसंग में लिखते हैं— आज तक मेरी समझ में नहीं आया है कि यह रोग मुझे कब कहां और कैसे लग गया? चंडीगढ़ में जो दवा दी गई वह मैंने ली जो खाना दिया गया वह मैंने खाया फिर मुझे क्या हो गया समझ में नहीं आता। मेरे बहुत सारे मित्रों को यह शंका है और मुझे भी कभी-कभी संदेह होता है कि कहीं जान-बूझकर तो मेरे गुर्दे खराब नहीं कर दिए गए। चंडीगढ़ अस्पताल के डाक्टरों का व्यवहार मेरे प्रति बहुत अच्छा था। इसलिए उन पर मुझे अविश्वास नहीं है। कोई डाक्टर ऐसा जघन्य काम कर भी कैसे सकता है? लेकिन मेरे रोग की पहचान करने में उनको बहुत देर हो गई। बम्बई के डाक्टरों का ख्याल है कि अगर पन्द्रह दिन पहले भी मैं जसलोक अस्पताल में पहुंच गया होता तो मेरे गुर्दे कम से कम आंशिक रूप से बचा लिए जाते। अब यह तो भगवान ही जाने कि अचानक मेरे गुर्दे कैसे बिलकुल खराब हो गए। एक बात निश्चित है कि मुझे छोड़ा तभी गया जब इन्दिराजी के शासन को यह विश्वास हो गया कि मैं अब कुछ ही दिनों का मेहमान हूं।

चंडीगढ़ में रिहा होकर जे० पी० पहले दिल्ली आल इंडिया इन्स्टीच्यूट आफ मेडिकल साइंसेज में आकर पांच छः दिन रहे। यहां पुलिस का कड़ा पहरा था। चारों तरफ सी० आई० डी० का जाल बिछा था। तीसरी मंजिल के जिस कमरे में जे० पी० को रखा गया था उसीके ऊपर चौथी

मंजिल पर श्री अटलबिहारी वाजपेयी अपनी बीमारी की अवस्था में नज़रबंद थे।

चारों तरफ कड़ी निगरानी थी फिर भी दिल्ली बिहार के भूमिगत कुछ लोग भेष बदलकर जे० पी० से मिलने आए थे। छात्र संघर्ष और युवा वाहिनी के भी कुछ युवक आए थे मिलने। जे० पी० को उस करुण और असहाय अवस्था में देखकर सभी रो पड़ते थे। श्रीमती नयनतारा सहगल (इंदिरा गांधी की बहन—श्रीमती पंडित की लड़की) ने जे० पी० को देखकर भरे कंठ से कहा था— दुख और शर्म से मेरा माथा झुका जा रहा है।

जे० पी० अर्धचेतन अवस्था में थे। जो उनके पास जाता देखने ही उसकी आंखों से आंसू ढुलक पड़ते। जे० पी० सबको फटी फटी आंखों से देखते। उनके हाथ-पैर सूज गए थे। पैरों की उंगलियां मुड़ गई थीं। आंखों के नीचे का भाग सूजकर नीचे लटक गया था। बिलकुल मरणासन्न थे।

जे० पी० के भाई राजा बाबू (श्री राजेश्वरप्रसाद) उन्हें लेकर वायुयान से बंबई भागे और वहां २२ नवम्बर को जसलोक अस्पताल में जे० पी० को भर्ती किया गया।

जसलोक अस्पताल के डाक्टरों की सूझबूझ और मेहनत के फलस्वरूप जे० पी० मौत से बच गए। डाक्टरों का कहना था—हमने तो आपको नहीं बचाया।

—क्यों?

—आप अपनी इच्छा शक्ति से बच गए।

—मैं मानता हूं कि ईश्वर की कृपा मुझ पर थी इसीलिए ही मैं बच पाया। पता नहीं वह और क्या काम मुझसे लेना चाहता है।

अब जे० पी० को मशीन के सहारे जिंदा रहना था इसलिए जे० पी० के साथियों ने तय किया कि निवास स्थान पर ही डायलिसिस की व्यवस्था की जाए। इसके लिए कृत्रिम गुर्दा-यंत्र (डायलाइजर) तथा अन्य यंत्र-पुर्जे आदि खरीदने के लिए काफी व्यय की जरूरत थी। अतः वयोवृद्ध सर्वोदय नेता, श्री रविशंकर महाराज दादा धर्माधिकारी श्रद्धेय केदारनाथ जी

तथा स्वामी आनन्द (अब स्वर्गीय) ने जनता से सहायता के लिए अपील की। कई धनिक सज्जनों ने स्वास्थ्य सहायता कोष में बड़ी बड़ी राशि देने की भी इच्छा प्रकट की। परन्तु मित्रों ने तय किया कि लोगों से एक एक रुपया या ऐसी ही छोटी रकम का दान लेना उचित होगा। सर्वप्रथम पूज्य विनोबाजी ने एक रुपया का दान देकर इस कोष का श्रीगणेश किया। इसके बाद तो देश के कोने कोने से दान की धारा बह निकली। जेलों में जो साथी बंद थे और हैं उन्होंने भी अपने भोजन का खर्च काटकर एक एक रुपया चिकित्सा कोष में भेजा। इस प्रकार देखते-देखते तीन लाख से भी अधिक रुपये इकट्ठे हो गए। यह रकम पर्याप्त मानी गई और इसीलिए सहायता कोष को बंद कर देने की घोषणा की गई। फिर भी रुपये आते रहे। तब मित्रों ने रुपये लौटाने शुरू किए और कुछ लौटाए भी गए।

उन्हीं दिनों प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने राहत कोष से नब्बे हजार रुपये जे० पी० के स्वास्थ्य सहायता कोष के लिए गांधी शांति प्रतिष्ठान के मंत्री श्री राधाकृष्ण के पास मई के प्रथम सप्ताह में भिजवाए थे। इस राशि को लौटाते हुए जे० पी० ने इंदिरा गांधी को पत्र लिखा

बम्बई

११ जून १९७६,

'प्रिय इन्दिराजी

मेरी चिकित्सा के लिए कृत्रिम गुर्दा मशीन (डायलाइजर) खरीदने हेतु आपने अपने रिलीफ फंड से जो नब्बे हजार रुपये भेजने की कृपा की है उसके बारे में यह पत्र लिख रहा हूं। कुछ सप्ताह पूर्व श्री राधाकृष्ण ने प्रोफेसर पी० एन० धर की सलाह पर मेरे पास एक मित्र को यह पूछने के लिए भेजा था कि अगर आप मेरी चिकित्सा के लिए कुछ देंगी तो मैं उसे स्वीकार करूंगा या नहीं। मैंने 'हां' कह दिया क्योंकि मुझे जानकारी नहीं थी कि आप जो रुपये देने वाली हैं वह प्रधान मंत्री राहत कोष के रुपये हैं। मैं तो यह मान बैठा था कि आप अपने निजी कोष से ही कुछ देंगी यद्यपि मैंने अगर जरा सोचा होता तो यह स्पष्ट हो जाता कि आपके लिए व्यक्तिगत रूप से इतनी बड़ी रकम देना संभव नहीं था। चाहे जो हो अब स्थिति यह है कि आपके कोष की रकम मिलने के पहले ही सर्वश्री रविशंकर

महाराज स्वामी आनन्द (अब स्वर्गीय), श्री केदारनाथ जी तथा दादा धर्माधिकारी की अपील पर जनता से तीन लाख से भी अधिक रुपये इकट्ठे हो गए थे। उस रकम में से एक डायलाइजर मशीन और उसके पुर्जे तथा सालभर के लिए अन्य आवश्यक सामग्री खरीदी जा चुकी थी। एक दो साल के लिए माहवार खर्च हेतु काफी रुपये बच भी गए हैं।

इस विषय से संबंधित दो और बातों का जिक्र मैं यहां करना चाहूंगा। एक तो यह कि समिति ने तय किया था कि केवल छोटी छोटी रकमें ही स्वीकार की जाएंगी। कुछ मित्र बड़ी रकमें भी देना चाहते थे परन्तु उन्हें स्वीकार नहीं किया गया और उन मित्रों से भी छोटी रकमें ही ली गई। दूसरी बात यह है कि श्री राधाकृष्ण को आपके रुपये मिलने के पहले ही समिति ने सार्वजनिक घोषणा करके कोष बंद कर दिया था क्योंकि आवश्यकता से अधिक चन्दा आ चुका था।

"ऐसी परिस्थिति में मैं आपके राहत कोष से इतनी बड़ी रकम स्वीकार करूं यह ठीक नहीं है। राहत का काम इतना अधिक है कि राहत कोष का एक एक पैसा वहीं खर्च होना चाहिए जहां उसकी सबसे अधिक जरूरत है। इसलिए मैं श्री राधाकृष्ण को सलाह दे रहा हूं कि वह ड्राफ्ट जो उन्हें मिला है, लौटा दें। मैं आशा करता हूं कि आप मुझे गलत नहीं समझेंगी और यह नहीं सोचेंगी कि मैं अकृतज्ञ और अशिष्ट हूं। अशिष्टता का ख्याल बिलकुल मेरे मन में नहीं है। आपने मेरे स्वास्थ्य के लिए इतनी चिंता दिखाई है इसके लिए मैं आभारी हूं।

हार्दिक शुभेच्छाओं के साथ

आपका सस्नेह
जयप्रकाश नारायण"

श्रीमती इन्दिरा गांधी
भारत की प्रधान मंत्री नई दिल्ली।

२६ जून १९७६ को भारतीय जनता पर काग्रेसी शासन द्वारा थोपी गई तानाशाही का एक वर्ष पूरा हो गया। इस बीच हजारों बहादुर साथी जेल गए और दूसरे प्रकार की यातनाए झेली हैं। उनका अपराध यह था कि भ्रष्ट तानाशाही के सामने झुकने से इकार किया। भारतीय जनता के गले मे नई गुलामी का यह शिकजा दिनोदिन मजबूत बनाया जा रहा था।

इस अवसर पर जयप्रकाश ने आवाहन दिया

प्रिय साथी,

२६ जून, १९७५ स्वतत्र भारत के इतिहास मे सबसे काले दिन के रूप मे याद किया जाएगा। २५ जून, १९७५ तक भारत एक कार्यशील लोकतत्र था और रातोरात वह एक वैयक्तिक तानाशाही मे बदल दिया गया। तानाशाह श्रीमती इदिरा गाधी का अब यह दावा है कि भारत एक लोकतत्र है और वे ही उसकी सर्वोत्तम रक्षक हैं। मेरा सुझाव है कि जनता, खासकर युवा वर्ग श्रीमती गाधी के इस दावे की कसौटी के तौर पर अगले २६ जून को सार्वजनिक सभाए करें और जुलूस निकाल कर अपनी स्वतत्रता की घोषणा करें।

सभाओ के साथ-साथ मेरा सुझाव है कि सभी प्रकार की प्रकाशित सामग्री पर्चों से लेकर पुस्तिकाओ तक देश की विभिन्न भाषाओ मे यथा सभव व्यापक पैमाने पर वितरित की जाए। २६ जून को लोक शिक्षण दिवस के रूप मे मनाया जाए और उस दिन जनता को नागरिक स्वतत्रताओ का अर्थ एव मूल्य समझाते हुए यह बताया जाए कि ये स्वतत्रताए न केवल लोकतत्र की, बल्कि मानव सभ्यता मात्र की बुनियाद हैं।

मेरी समझ मे इस दिन को मनाने का यही सबसे अच्छा ढग होगा।

जयप्रकाश नारायण

सारे देश मे २६ जून १९७६ का दिन काला दिवस के रूप मे मनाया गया। बिहार के मुगेर जिले और शहर मे कई सौ लोगो की भीड एस० डी० ओ० कोर्ट पर पहुची। भीड ने ऐलान किया कि आज

वाला दिवस है। आज इस तिरंगे की जगह काला झंडा फहराना होगा। काला झंडा लगा। इसी तरह बतिया जिला कार्यालय पर भी काला झंडा फहराया गया। ऐसा बिहार में अनेक जगहों पर हुआ। इस सिलसिले में काई पाच सौ कार्यकर्ता गिरफ्तार किए गए।

• तानाशाही का लोकतांत्रिक विकल्प

२५ मई, १९७६ को बबई में एक पत्रकार सम्मेलन आयोजित हुआ जिसके मुख्य आकर्षण थे जयप्रकाशजी जिन्होंने उस दिन कांग्रेस के विकल्प में एक 'राष्ट्रीय लोकतांत्रिक राजनीतिक दल' की स्थापना की घोषणा की। सम्मेलन में साठ पत्रकारों ने भाग लिया और आपात स्थिति की घोषणा के बाद शायद पहली बार इतनी संख्या में पत्रकारों को जे० पी० के विचार सुनने का मिला। आरंभ में नाना साहब गोरे ने सम्मेलन के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला फिर बबई पत्रकार संघ के अध्यक्ष सुदर राजन ने बबई और देशभर के पत्रकारों की ओर से जयप्रकाशजी के स्वास्थ्य के प्रति शुभेच्छा व्यक्त की। उन्होंने कहा बहुत समय बाद बहुत सारी घटनाओं के बाद जयप्रकाशजी के खराब स्वास्थ्य के बीच यह पत्रकार सम्मेलन हो रहा है अत इसका विशेष महत्त्व है।' सम्मेलन में पत्रकारों के अलावा नाना साहब गोरे, एस० एम० जोशी शांतिभूषण मुहम्मद करीम छागला दिग्विजयनारायण सिंह एस० के० पाटिल, उत्तम राव पाटिल बसतकुमार पडित (जनसघ) उपस्थित थे। जयप्रकाशजी ने संक्षिप्त किंतु स्पष्ट शब्दों में नये दल की स्थापना की बात कही। इसके बाद उनसे कुछ प्रश्न पूछे गए। प्रश्नों के उत्तर जे० पी० के अलावा गोरे और जोशी ने भी दिए। प्रस्तुत है उस अवसर पर व्यक्त किए गए जे० पी० के विचार

'इस पत्रकार सम्मेलन में इतनी बड़ी संख्या में पत्रकार उपस्थित होंगे इसकी आशा नहीं थी। फिर भी आप सब यहा आए इसके लिए धन्यवाद है।

मेरे राजनीति के प्रति दृष्टिकोण से आप परिचित हैं। भारतीय राजनीति में दलों की बड़ी संख्या एक बड़ा सवाल बन गई है। यह

सवाल किसी ढग मे सुलझाना ही चाहिए । आज तक का हमारा अनुभव यह है कि दो बराबर शक्ति वाल दलो पर आधारित ससदीय लोकतत्र का विकास हमारे देश मे नही हो सका । निकट भविष्य म या सुदूर एसी स्थिति वन पाएगी एसा नही लगता । फिर भी समान विचार वाल दलो का एकसाथ आना चाहिए । इसकी शुरुआत की जा रही है । दलो के इस एकीकरण म आज सगठन काग्रेस भालाद भारतीय जनसघ समाजवादी दल शामिल हो रहे हैं । इनके अलावा कुछ एस प्रमुख लोग भी हैं जो आज म पहल इनम स किसी दल म नही थ । य लोग इस नय दल म शरीक होगे । इस प्रकार इस नय दल की जो स्थापना हो रही है, उसकी मैं बडे हष क साथ घोषणा करता हू । इसके बाद दल का नाम तय करन, पदाधिकारी चुनने दल का सविधान तयार करन, आदि काम यथासमय पूरे होगे । कुछ दलो को इकट्ठा करके नया दल बनान की दष्टि स नाना साहब गोर के सयोजकत्व म एक सुझाव समिति बनाई गई थी । एसी ही एक छोटी समिति द्वारा कुछ पूव तयारिया की जाएगी । फिर जून के तीसर या अतिम सप्ताह मे बबई म कायकर्ताओ का एक सम्मलन बुलाया जाएगा । इस सम्मलन म सभी औपचारिक बातें पूरी होगी और तब स ही दल प्रत्यक्षत अस्तित्व म आएगा । आज मैं इसे श्लोच मात्र कर रहा हू ।

अभी एक सबल विरोधी पक्ष नही है—यह अपन लोकतत्र की एक कमी है । इसका अनुभव सभी को होता था । इस कमी को दूर करने का प्रयत्न किया जा रहा है । इस सदभ म मैं युवको का आवाहन करता हू । पिछल कुछ वर्षों स युवकों से मर अत्यत घनिष्ठ सबध बन हैं । इसलिए जिन्ह शासक दल के विरोध म काम करन की रुचि है एस सभी युवको को इस नय दल म शामिल होन का मैं आवाहन करता हू । जिनको शासक दल के साथ सघष की इच्छा है व अवश्य इस नय दल म शरीक हो ।

किसी भी दल की ओर से चुनाव लडवान और चुनाव की राजनीति म पडने का मेरा ध्येय नही । आज तक मैं किसी ग्राम पचायत क चुनाव म भी नही उतरा हू यह आपको मालूम है । इस नय दल को मेरा यही

सुभाव है कि इस केवल चुनाव की राजनीति म नही उलभना चाहिए। समाज परिवतन अपना उद्देश्य होना चाहिए और नय दल को इसी दिशा म काम करना चाहिए। ससद के कामो की अपक्षा बाहर समाज म लोगो के साथ काम करना उन्ह सगठित करना राष्ट्रीय प्रश्नो पर उन्ह साथ लेकर चलना ग्रादि बातो पर ज्यादा जोर रहना चाहिए। जनता को भी वास्तव म ऐसा ही विरोधी दल चाहिए।'

इसके बाद पत्रकारो न कुछ प्रश्न पूछे। एक प्रश्न था बाहर यह विलयन हो रहा है क्या ससद ग्रोर विधानसभाग्रो म भी इसी प्रकार एक दल की स्थापना की जाएगी? उत्तर म जे० पी० न कहा ग्रभी जनता मोर्चा के रूप म ग्रनक स्थाना पर ग्रोर ससद म भी काम हो रहा है। यह काम एकतापूवक हो रहा है। नय दल की स्थापना ग्रोप चारिक रूप स होन ही तज गति स वहा भी विलयन होगा। दलो की पुरानी पहचान खत्म होन पर यह नया दल बना है इसम पुरान दलो की पहचान नही रहगी—एसा सभापति को सूचित किया जाएगा ग्रोर विभिन्न दल नही रहगे।

एक दूसरे प्रश्न पर कि क्या ये दल ग्रापात स्थिति के कारण एक हो रह हैं जे० पी० न कहा— दलो के विलयन का सवाल ग्रापात स्थिति स सबधित नही है। बराबर बन वाले दलो क ग्राधार पर लोकतत्र को विकसित करना ही महत्त्व की बात ह ग्रोर इस प्राप्त करन की दिशा मे यह पहला कदम है। ग्रापातकाल रह या नही यह प्रक्रिया तो चल ही रही थी। मेरी गिरफ्तारी क पहले एक बठक मे इस विषय पर विस्तार म चर्चा की जा चुकी थी। समान विचारो वाल दलो का एक मच पर ग्राना चाहिए यह बात पहले स ही चली ग्रा रही है।

प्रश्न क्या ग्राप इस नय दल क प्रधान होग? उत्तर म जे० पी० न कहा— मैंने सलाह देना ही मान्य किया है ग्रोर मेरा विचार विनिमय करना इस नये दल की सीमा म मर्यादित है। किसी बात के सबध म श्रीमती इदिरा गाधी न भी कुछ ग्रगर पूछा ता इस दल की तरह उनसे भी खुले दिल स विचार विनिमय सलाह मशविरा करने को मैं तयार हू (तज हसी)।'

यह पूछे जाने पर कि आपात स्थिति की घोषणा के बाद जनता ने कोई संगठित विरोध नहीं प्रदर्शित किया जे० पी० ने बताया— लोगों ने विरोध नहीं व्यक्त किया, यह कहना सरासर गलत है। विरोध व्यक्त किया गया लेकिन वह कहीं भी प्रकाशित नहीं होने दिया गया। सैकड़ों जगह स्वतः स्फूर्त ढंग से हड़तालें हुई छात्र कालेजों से बाहर आ गए बहिष्कार किया लेकिन ये समाचार कहीं भी प्रकाशित नहीं हो सके।

एक पत्रकार ने पूछा— क्या आपात स्थिति शिथिल की जा रही है? गोरे ने कहा—'मुझे इसके कोई चिह्न नजर नहीं आते।' लेकिन जे० पी० बोले— मैं नाना साहब की अपेक्षा अधिक आशावादी हूं। जिस प्रकार से अभी काम चल रहा है उसे ज्यादा दिनों तक टिकाए रखना संभव नहीं ऐसा मुझे लगता है।

पत्रकारों ने लगभग एक साल के बाद किसी सम्मेलन में ताजगी का अनुभव किया। उनके सिरों पर कम से कम उस क्षण सेंसर की तलवारें नहीं लटक रही थी और वे मुक्त भाव से उस व्यक्ति से बातें कर रहे थे जो उनके लिए हमेशा से एक आदर्श बना रहा है। उनके मन में एक सवाल जरूर था—क्या यह मुक्ति के क्षण स्थायी रह सकेंगे?

६ जुलाई को अशोक मेहता, एन० जी० गोरे और ओमप्रकाश त्यागी के संयुक्त हस्ताक्षरों से यह परिपत्र अपने दलों के कार्यकर्ताओं के नाम जारी किया गया

फिलहाल ऐसा लगता है कि भारतीय लोकदल चारों दलों के संयुक्त और समायोजित कार्य करने के बारे में राजी नहीं है और वह तत्काल एक दल बनाने का आग्रह कर रहा है। हमारी हमेशा यह कोशिश रहनी चाहिए कि हम भारतीय लोकदल के साथ कार्य करने का आग्रह करते रहें। राज्य स्तर के संयुक्त कार्यक्रमों का सामना करने की आदत डालें। हम एक कठिन दौर से गुजर रहे हैं और अगर हमने मिलजुलकर सामूहिक रूप से कार्य नहीं किया तो कठिनाइयां विकट हो जाएगी। हमारे मिलकर काम करने से एक दल बनाने की प्रक्रिया तेज होगी, जिसके लिए हम सब सहमत हैं।

यह उल्लेखनीय है कि ८ जुलाई को संयुक्त बैठक में जिसमें चौधरी

चरणसिंह भानुप्रताप सिंह, प्रद्युम्न प्रमोद महता, मनुभाई पटेल, एन० जी० गोरे ओमप्रकाश त्यागी और सत्यप्रकाश शामिल थे, चौधरी चरण सिंह ने कहा—"मैं पक्के तौर पर मानता हूं कि नये दल में स्वयं सेवक संघ का कोई भी स्वयंसेवक सदस्य नहीं बन सकता। ना हो नये दल का कोई सदस्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का स्वयंसेवक बन सकता है। नये दल में दोहरी सदस्यता को गुंजाइश नहीं हो सकती। मैं व्यक्तिगत तौर पर कभी भी मिल सकता हूं लेकिन संयुक्त बैठक का मैं अब कोई अर्थ नहीं देखता। जब आप तीनों दल मिल जाएंगे तो हम मिलेंगे। सामूहिक रूप से काम करने के भी पक्ष में नहीं हूं। मुझे इसका बड़ा तजर्बा है।

रोहतक जेल में

पर रोहतक जेल में सर्वथा एक दूसरे आयाम से, तानाशाही के खिलाफ लोकतांत्रिक विकल्प के रूप में सहज ही जनता पार्टी का जन्म हो रहा था। सुरेन्द्रमोहन श्री आडवानी सिकंदरबख्त, पीलू मोदी भरतसिंह शेखावत एस० एन० मिश्र और श्री मलकानी के मानस मंथन से यह एक दल उदित हो रहा था। जेल के बाहर क्या हो रहा था बंबई में क्या कुछ घट बढ़ रहा था, जेल के भीतर इन्हें कुछ मालूम नहीं हो रहा था। पर वायुमंडल में ऐसा कुछ जरूर था, जिसकी चेतना इन्हें थी। उसी चेतना से जेल के भीतर मानस यज्ञ हो रहा था। यज्ञ की उस अग्नि में अलग अलग दलों की इकाइयां पिघलकर एक आकार ले रही थीं। जैसे यज्ञ की अग्नि से द्रौपदी का जन्म हुआ था और उसे याज्ञसेनी की संज्ञा मिली थी ठीक उसी प्रकार जेल के मानस यज्ञ से द्रौपदी के समान जनता पार्टी का जन्म हो रहा था। द्रौपदी एक शक्ति थी जिसके पांच पति थे जनता पार्टी भी उसी तरह एक लोकशक्ति थी।

प्रवासी भारतीयों का लंदन सम्मेलन

सम्मेलन का मूल स्वर था—तानाशाही की समाप्ति तक चैन नहीं लेंगे। भारत में लोकतंत्र को पुनः वापस लाने के लिए २४ २५ अप्रैल,

१९७६ को लंदन में हुए प्रवासी भारतीयों के एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन ने श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा भारत की जनता पर थोपी गई आपात स्थिति की कटु निन्दा करते हुए राजनीतिक बंदियों एवं विरोधी दलों के कार्यकर्ताओं को दी जाने वाली अमानवीय यातनाओं पर घोर चिन्ता व्यक्त की है। अदालतों को पंगु बनाकर विचार-स्वातन्त्र्य को समाप्त करके संविधान प्रदत्त समस्त मौलिक अधिकारों को स्थगित करके इन्दिरा गांधी इस समय भारत में जिस लोकतंत्र को चलाने का दावा कर रही हैं सम्मेलन ने उस राजनीतिक ढोंग और देश की जनता के साथ दगा बाजी की संज्ञा देते हुए कहा है कि इन्दिरा गांधी जिस राह पर चल रही हैं वह लोकतंत्र की नहीं हिटलर मुसोलिनी और स्टालिन की राह है जो तानाशाही की मंजिल पर पहुंचकर ही समाप्त होती है।

सम्मेलन ने विश्व भर के समस्त प्रवासी भारतीयों का आह्वान किया है कि वे भारत सरकार द्वारा समस्त नजरबंद एवं मानवाधिकारों से वंचित बंधुओं की सहायता हेतु एकजुट होकर खड़े हो जाएं और सभव साधनों का उपयोग करके अंतर्राष्ट्रीय जनमत को प्रशिक्षित करने के लिए यथोचित उपाय करें।

लाई करोड़ से भी अधिक प्रवासी भारतीयों द्वारा इन्दिरा गांधी की तानाशाही के विरुद्ध आयोजित यह प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन था, जिसमें इंग्लैंड अमरीका भारत कनिया मारीशस तंजानिया, वेनजुएला कनाडा, डेनमार्क पश्चिमी जर्मनी सिंगापुर, जाम्बिया और त्रिनिदाद आदि अनेक देशों से आए ३०० से भी अधिक प्रतिनिधियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

भारतीय जनसंघ के सांसद श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी की अध्यक्षता में सम्पन्न इस सम्मेलन में गुजरात की जनता मोर्चा सरकार के भूतपूर्व मंत्री श्री मकरंद देसाई विशेष रूप से उपस्थित थे। फ्रेंड्स ऑफ इंडिया सोसायटी के तत्वावधान में आयोजित इस सम्मेलन में आए प्रतिनिधियों का, सोसायटी के अध्यक्ष श्री कमलेश के० शास्त्री ने हार्दिक स्वागत किया। इस अवसर पर प्रकाशित एक स्मारिका द्वारा भारत की सरकार द्वारा किए जा रहे दमनपूर्ण कृत्यों एवं

एव तथ्यात्मक प्रकाश डाला गया है। इस स्मारिका म गत २५ जून, १६७५ को दिल्ली के रामलीला मैदान की जनसभा म लोकनायक जयप्रकाश नारायण द्वारा दिया गया अंतिम सावजनिक भाषण भी प्रकाशित है। इसके अतिरिक्त श्री डी० डी० शाह द्वारा लिखित इमरजेंसी एंड आर० एस० एस० और श्रीमती गांधी के नाम एक खुला पत्र विशेष रूप मे पठनीय हैं। इसमे पुलिस अत्याचार से पीडित तथा घायलो के चित्र भी छापे गए हैं।

रूस द्वारा सत्ता हथियाने की आशका

सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी ने अपने उदघाटन भाषण म कहा कि अनेक पीढियो स विदेशो मे रह रहे ढाई करोड स भी अधिक प्रवासी भारतीयो का भारत म घटित होने वाली घटनाओ से बेहद बेचैन होना स्वाभाविक है। उनकी इस बेचैनी का कारण बताते हुए श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी ने कहा कि विदेशो म रहने वाले प्रत्येक भारतीय हृदय म भारत के प्रति कल्याणकारी भावना निहित है। साथ ही वे जिस समाज म रहते हैं वह उन्हे भारत म उत्पन्न स्थिति के लिए उत्तरदायी मानता है। इतना ही नही विदेशस्थ भारतीयो का सम्मान एव महत्त्व भारत की अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा और महत्त्व के साथ सबद्ध है।

श्री स्वामी ने कहा कि सभव है प्रारंभ म कुछ भारतीय सरकार के प्रचार के शिकार हो गए हो। किंतु धीरे धीरे सत्यता उनके सामने प्रकट होने लगी। यही कारण है कि आज बहुसख्यक प्रवासी भारतीय भारत की आतरिक स्थिति से बेचैन है और वहा लोकतंत्र को पुन वापस लाने के लिए केवल इच्छुक नही अपितु प्रयत्नशील भी है। प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी द्वारा अपने वाद स नित्य मुकरते जाना जैसे कि यह कहने के बाद भी कि आपातकालीन स्थिति अस्थायी है, फिर भी उसे स्थायी बनाने की कोशिश और यह कहना कि केवल मुट्ठी भर लोग ही गिरफ्तार किए गए हैं तथा उन्हे छोड भी दिया गया है स्थिति सामान्य है सरासर झूठा प्रचार है जबकि पौने दो लाख स भी अधिक व्यक्ति बिना मुकदमा चलाए जेल मे बद कर दिए गए। बदी बनाए

जाने वाला की यह सख्या भारत क अब तक के इतिहास म सर्वाधिक है। यहा तक कि अग्रेजो के शासन-काल मे भी यह सख्या पैंतालीस हजार स अधिक कभी नही हुई। यह भी प्रवासी भारतीयो के लिए गभीर चिन्ता का विषय बन गया है।

श्री स्वामी न कहा कि इमरजेंसी के कारण भारत की आतरिक एव अतर्राष्ट्रीय स्थिति की स्थिरता गभीर रूप से क्षतिग्रस्त हो गई है। देश क अदर अपने विचार व्यक्त करन के सभी रास्त बद कर दिए गए ह। फलस्वरूप जनता विद्रोह की ओर बढने लगी है। समाचारपत्रो पर सेसरशिप लागू होने, प्रमुख व्यक्तियो एव नेताओ सहित हजारो व्यक्तियो की नजरबदी और सत्ता शक्ति एक ही व्यक्ति क हाथो म केद्रित हो जान के कारण अतराष्ट्रीय क्षेत्र म विशेषकर रूस द्वारा भारतीय शासन का तख्ता पलटकर उसपर अपना एकाधिकार जमाने की योजनाए पूर्ण करना आसान माना जा रहा है।

अपन भाषण क अत म श्री स्वामी न प्रतिनिधियो का आह्वान करत हुए कहा कि व समय की गति पहचानें और अपनी सपूर्ण शक्ति, बुद्धि लगाकर इस बात को गहराई स समझने का प्रयत्न करें कि भारत की वास्तविक स्थिति क्या है और वहा इस समय किस प्रकार की गति-विधिया चल रही हैं ? आपन प्रतिनिधियो स अपील की कि व भारत की तानाशाही तथा लोकतत्र की रक्षा के लिए अपनी योग्यताओ तथा प्रभाव का पूरा पूरा उपयोग करें।

गुजरात सरकार कैसे गिराई गई

गुजरात की मग जनता मोर्चा सरकार के भूतपूर्व मत्री, श्री मकरद देसाई न कहा कि आपातकालीन स्थिति के कारण प्राप्त राक्षसी अधिकारो का उपयोग इदिरा गाधी भारत म एक दलीय शासन की स्थापना करन क लिए कर रही हैं। जनता द्वारा निर्वाचित गुजरात का विधि-सम्मत जनता मोर्चे की सरकार को इन्दिरा गाधी न नौकरशाही का दुरुपयोग करक अपदस्थ कर दिया। सत्तारूढ जनता मोर्चे के विधायको को दल-बदल करने के लिए मजबूर किया गया। उन्ह धमकियां दी गइ

कि यदि उन्होने मोर्चे से अपना सबध विच्छेद नही किया तो उन्हे 'मीसा' के अतगत गिरफ्तार करके जेल भेज दिया जाएगा। विधायको के सामने दो विकल्प रखे गए या तो व जनता मोर्चा सरकार का समथन बद करके उसस अलग हो जाए या फिर केन्द्र द्वारा राज्य सरकार को भग कर दिए जान के बाद जल जाने के लिए तयार रह। गुजरात सरकार को भग करने के लिए पहले स ही मनगढत आधार तयार किए जान लगे। आकाशवाणी द्वारा केन्द्रीय मत्री काग्रेस नेता तथा उसके समथक यह प्रचार करने लगे कि देश की आतरिक सुरक्षा को सकट म डालने की साजिशें गुजरात मे की जा रही हैं। राज्य सरकार के प्रमुख व्यक्तियो के विरुद्ध समाचारपत्रो के माध्यम से आरोप लगाए जान लगे। किंतु आज जब कि राज्य सरकार अपदस्थ कर दी गई है, इस प्रकार के समाचार न जान क्या स्वयमेव बद हो गए हैं।

श्री देसाई ने कहा कि राज्यसभा के लिए नियमानुसार निर्वाचित सदस्यो को अपने पद की शपथ लेने स रोक दिया गया। गुजरात विधान सभा स सदस्यो को गिरफ्तार किया जा रहा है। यह सब काम श्रीमती इदिरा गाधी की सरकार द्वारा लोकतत्र की रक्षा के नाम पर किए जा रहे हैं। इस प्रकार गुजरात सरकार को भग किए जाने के साथ ही १२ माच, १९७६ को भारत म लोकतत्र का अतिम अवशेष भी समाप्त हो गया। अब अपनी समस्त बुराइयो के साथ भारत म तानाशाही का दौर चालू हो गया है। श्री देसाई ने उपस्थित प्रतिनिधियो के माध्यम स विदेशो म रहने वाले ढाई करोड प्रवासी भारतीयो से अपील की कि व अपनी मातभूमि की आजादी और लोकतत्र की रक्षा हेतु एक विश्व यापी आदोलन प्रारम्भ करें।

प्रतिनिधियो के भाषण

सम्मेलन म उपस्थित प्रतिनिधियो द्वारा 'इमरजेंसी के परिणाम' विषय पर दिए गए भाषणो का साराश

डा० फारोक प्रस वाला (यूयाक सिटी) आपने कहा कि धनियों की अपक्षा गरीबों के लिए लोकतत्र अधिक आवश्यक है। गरीबो की

समस्याग्रो को सुधारन एव हल करने की जरूरत होती है। जबकि धनिक वग अपनी समस्याए किसी भी प्रकार की सरकार मे स्वय हल कर लेत हैं। यही कारण है कि भारत जस अविकसित देश के लिए लोक तन्त्र की अति आवश्यकता है।

राजन सानी (कोले विश्वविद्यालय) आपने यह आशका व्यक्त की कि गत कई वर्षों स पतन की प्रक्रिया प्रारभ हो जाने से हमने अपनी आजादी खो दी है। यही कारण है कि इमरजेंसी के विरुद्ध किसी भी कोने प कोई शक्तिशाली स्वर सुनाई नही दिया।

डा० डी० के० हरदास (सजन, वोल्टव) इमरजेंसी की प्रशसा करने वाले एस लोग हैं जो तथ्यो से सवथा अनभिज्ञ और सरकारी प्रचार के कारण गुमराह हो चुके हैं। आपन पूछा कि क्या हम केवल खाने के लिए ही जि दा हैं। उन्होंने कहा कि अब तो मेरा धय समाप्त हो रहा है, मैं इस परिस्थिति का समाप्त करन के लिए कुछ करना चाहता हू।

श्री विनयचद (छात्र इलफाड) आपने अत्यत ही भावपूण एव ओजस्वी शब्दो म कहा कि राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ और जनसघ से सबधित लोग देशद्रोही नही हैं। वे ही वास्तव म देश म एकता स्थापित कर सकते हैं। आपन इस बात पर बल दिया कि इस सम्मेलन क कारण प्राप्त अवसर का उपयाग हमे विश्व भर म फले भारतीयो को सगठित करन के लिए करना चाहिए। आपने भारत म लाकतत्र की वापसी और बदियो की रिहाई की जोरदार माग की।

नितिन मेहता आपने कहा कि आजादी मिलन के बाद से ही भारत की मूलभूत सस्कृति और उसके समथको का दमन शुरू हो गया। यह प्रक्रिया तत्काल बद होनी चाहिए।

जयती भाई (केनिया) आपने यह विश्वास व्यक्त किया कि हम समय की माग क अनुरूप नेतत्व उत्पन्न करन म अवश्य सक्षम हाग। आपने कहा कि हम इस सम्बन्ध मे शीघ्र कायवाही करनी चाहिए क्योंकि भारत का मस्तक समस्त विश्व म कलकित हो रहा है।

डा० गणेशवरदयाल (म्यूनिच पश्चिमी जमनी) आपने कहा कि एक झूठ का छिपाने के लिए अनेक झूठ बोलने पडते हैं। आज

इं दिरा गाधी यही कर रही हैं। आपने प्रतिनिधियो का आह्वान करते हुए कहा कि वे महात्मा गाधी का अनुसरण करें उन्होंने कहा था कि निर्भय बनें। उन्होंने कहा कि शब्दों में शक्ति होती है। सामान्य स्थिति उत्पन्न करने में जनमत की शक्ति की महत्त्वपूर्ण भूमिका है आपने कहा कि विदेशी समाचारपत्र भी भारत में लागू आपातकालीन स्थिति से प्रभावित हैं।

इकबाल दत्त (केनिया) आपने कहा कि लोकतान्त्रिक पद्धति को बिगाडने के लिए किए कृत्यों को सुधारने हेतु हम सगठित होना पडेगा। हम १९४२ की तरह का एक आन्दोलन शुरू करेंगे।

श्री महतानी (पश्चिमी जर्मनी) आपने कहा कि भारतीय संस्कृति हिंसा का निषेध करती है। किन्तु यदि हमने दृढ़तापूर्वक आज की परिस्थिति का प्रतिरोध न किया तो शारीरिक और मानसिक दोनो तरह से नपुसक माने जाएगे।

श्रीमती राजन कुलकर्णी आपने इस बात पर गहरी चिन्ता व्यक्त की कि चुनाव में साडियां शराब और धन का वितरण करके चुनाव जीतने के भ्रष्ट तरीकों द्वारा लोकतान्त्रिक प्रक्रियाए नष्ट की जा रही हैं। देश के युवा वर्ग पर इसका अत्यन्त ही विनाशकारी परिणाम होता है। हम लोकतन्त्र को उसके सही परिप्रेक्ष्य में स्थापित करना होगा।

श्री जे० एन० ग्रेव (छाय लोसेस्टर) भारतीय गौरव और लोकतंत्र की पुन प्रतिष्ठा के लिए एक दृढ और लोकप्रिय नेतृत्व की आवश्यकता है।

खुले अधिवेशन मे हुई बहस का समापन करते हुए सभापति श्री मकरन्द देसाई ने सम्मेलन के प्रतिनिधियो के विचारार्थ निम्नलिखित मुद्दे प्रस्तुत किए

(१) यदि इमरजेंसी को अधिक दिनो तक चलने दिया गया तो क्या सत्तारूढ काग्रेस में वह सामर्थ्य इच्छा शक्ति और समर्पण की भावना है।

(२) क्या इमरजेंसी का उपयोग देश की जटिल एव बडी बडी समस्याओं यथा बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और नौकरशाही की अकुशलता

आदि को दूर करने के लिए किया गया ?

(३) भारत जैसे देश की विशालता एवं विविधता को देखते हुए क्या वहां तानाशाही की स्थापना होने की परिस्थितियां उपलब्ध हैं ?

सम्मेलन में प्रस्तुत दस्तावेज

उक्त सम्मेलन में दो विषयों पर गवेषणापूर्ण प्रबन्ध पढ़े गए। पहला प्रबन्ध भारत में लोकतंत्र की पुनर्प्रतिष्ठा विषय पर मारीशस के श्री देव रामचरण ने और दूसरा भारत में इमरजेंसी के परिणाम विषय पर श्री महेश मेहता और अनिल मेहता ने प्रस्तुत किया।

डा० रामचरण ने अपने प्रबन्ध में कहा कि भारतमाता को अपमानित करने वाली इस भयंकर स्थिति को समाप्त करने के लिए प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को भी उतना ही चिंतित होना चाहिए जितना कि अन्य लोग परेशान एवं चिंतित हैं।

श्री अनिल मेहता ने कहा कि श्रीमती इन्दिरा गांधी ने भारतीय आस्था की मर्यादाओं का उल्लंघन किया है। किन्तु भारतीय जनता इस एकाधिकारवादी शासन से अपनी मुक्ति के लिए, वीर भारतीय उसी प्रकार संघर्ष करेंगे जिस प्रकार उन्होंने विदेशी सत्ता की गुलामी आजाद होने के लिए की थी।

'न्यूयार्क टाइम्स' की टिप्पणी

अपने २८ अप्रैल १९७६ के अंक में 'न्यूयार्क टाइम्स' ने लन्दन सम्मेलन के सम्बन्ध में प्रकाशित एक रिपोर्ट में लिखा :

विदेशस्थ भारतीयों ने आज इन्दिरा गांधी द्वारा लागू की गई इमरजेंसी का विरोध करते हुए यह घोषणा की कि भारत में लोकतंत्र की पुनः वापसी के लिए विश्वव्यापी अभियान चलाएंगे।

इस सम्मेलन में लगभग तीन सौ प्रतिनिधि उपस्थित थे जिनमें समाज के प्रबुद्ध वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले एडवोकेट, प्राध्यापक, व्यापारी तथा छात्रों की उपस्थिति उल्लेखनीय थी। इसमें इंग्लैंड के अतिरिक्त अमरीका, कनिया, वेनेजुएला, पश्चिमी जर्मनी और अन्य

यूरोपीय देशो के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। सम्मेलन मे जिन विषयो पर विचार हुआ उनमे भारत की आर्थिक राजनीतिक स्थिति और मानवाधिकारो का हनन किए जाने की समस्या प्रमुख विषय थे।

सम्मेलन का समर्थन करने वाले जो सदेश भारत से प्राप्त हुए उनमे श्री एन० जी० गोरे टी० एन० सिंह चौ० चरणसिंह और श्री नम्बूदरी पाद के नाम उल्लेखनीय है।

सम्मेलन द्वारा पारित प्रस्ताव

फ्रीडम आफ इडिया सोसायटी द्वारा आयोजित इस सम्मेलन मे भारत की आतरिक स्थिति पर गभीर चिता व्यक्त करते हुए जो प्रस्ताव पारित किए गए उनमे कहा गया है कि विदेश स्थित हम भारतीय वहा की जेलो मे और बाहर भी पुलिस द्वारा किए जा रहे अत्याचार एव यातना के समाचारो से बहुत ही आतकित हैं। इस प्रकार की घटनाए मानवाधिकारो का खुला अपमान और उल्लघन है। समाचारपत्रो पर सेंसर लागू होने और गुप्तता की कडी व्यवस्था के भी जो समाचार प्राप्त हुए हैं, वे उस असीम अत्याचार के अश मात्र हैं जो भारत की जनता को नित्य प्रति झेलने पड रहे हैं। भारत की जनता पर इस प्रकार का जुल्म ढाने वाली इदिरा गाधी की सरकार की हम कटु निन्दा करते हैं। इस प्रकार के अमानुषिक कृत्य करने वालो को जब तक उनके किए का प्रतिफल नही मिल जाता हम चैन की सास नहीं लेंगे। साथ ही हम यह भी सकल्प करते हैं—इदिरा सरकार द्वारा मानवाधिकारो के प्रति किए जा रहे इस जघन्य अपराध का प्रतिकार करने के लिए हम हर सभव प्रयत्न करेंगे। इस प्रथम कदम के रूप मे हम कल २६ अप्रल को भारत की जेलो मे नजरबद बन्धुओ के समर्थन मे एक दिन का उपवास एव प्रार्थना करेंगे।

इसी प्रकार इमरजेंसी की अवधि बढाई जाने की निन्दा समाचार पत्रो पर सेंसर, चुनावो के निरतर स्थगन पर, मूलाधिकारो के हनन पर चिता व्यक्त करते हुए उसे अलोकतान्त्रिक कदम बताकर पारित किए गए प्रस्तावो मे कहा गया है कि इस सम्बन्ध मे इदिरा गाधी द्वारा दिए

जाने वाले भाषण तर्कहीन हैं। भारत म लोकतन्त्र की पुन वापसी के लिए ढाई करोड प्रवासी भारतीयो सहित सपूण अतर्राष्ट्रीय जनमत को प्रशिक्षित करने का भी सम्मलन म सकल्प व्यक्त किया गया।

'आब्जवर' की रिपोट

'आब्जवर (लदन) द्वारा प्रकाशित समाचार म सम्मलन म भाग लेने वाले जिन प्रमुख व्यक्तियों के नाम दिए गए हैं उनमे नोबुल पुरुस्कार विजेता, सत्तासी वर्षीय फिलिप नोयल बेकर और उनके अडतालीस वर्षीय सचिव, श्री एन० एम० हाडा भी हैं। श्री हाडा अतर्राष्ट्रीय वकर फेडरेशन के महामन्त्री और सोशलिस्ट इटरनेशनल के तीसरे विश्व विभाग के अध्यक्ष भी हैं। श्री बेकर गत जुलाई म गठित को गई श्री जे० पी० मुक्ति अभियान समिति के अध्यक्ष हैं।

'आब्जवर' ने लिखा कि जे० पी० के स्वास्थ्य की गभीरता एव अतर्राष्ट्रीय दबाव के कारण उन्हें गत नवम्बर मे रिहा कर दिया गया था किन्तु अनुमानत अब भी ७० ००० से, १,४०,००० तक व्यक्ति भारत की विभिन्न जेलों म बिना मुकदमा चलाए नजरबद हैं। अभी कुछ महीने पूव तमिलनाडु और गुजरात की सरकारें भग किए जाने के बाद अनुमानत १६, ००० से भी अधिक व्यक्तियो को जेलों म नजरबन्द कर लिया गया है। भारत म भय एव आतक का वातावरण छाया हुआ है। इस सम्बन्ध म भारत म आने वाले पत्रों पर लीडर अपने हस्ताक्षर करने म घबराते हैं।

'समाचार'

'बिल द न्यूज । गत २१ माच को बबई म प्रमुख विरोधी दलों की बठक जे० पी० के साथ हुई। इन दलों ने एकीकरण का प्रस्ताव पारित किया तथा यह समाचार सभी समाचार ऐजेंसियों को भेज दिया। समाचार सभी प्रमुख समाचारपत्रो म छपने के लिए तैयार हो गया। टलिप्रिटर पर समाचार पूरे देश मे प्रसारित हो गया, परन्तु भारतीय लोकतन्त्र की सजग प्रहरी श्रीमती गाधी के आदेश पर महाराष्ट्र के मुख्य मन्त्री ने तुरन्त टेलिफोन म सभी एजेंसियों को सूचना भेजी— किल दिस न्यूज'

इस समाचार को खत्म करो। और इस प्रकार लोकतन्त्र के नये ढांचे में जिसे श्रीमती गांधी ने खड़ा किया है विरोधी पार्टियों की महत्त्वपूर्ण गतिविधि (जिसे किसी भी तरह देशद्रोही नहीं कहा जा सकता) के समाचार को खत्म कर दिया गया।

परन्तु बम्बई के स्थानीय साहसी एवं निर्भीक गुजराती दैनिक 'जन्मभूमि' ने इस प्रस्ताव को छाप दिया और वह वितरित हो गया। दूसरे दिन वहां के सेंसर बोर्ड ने आदेश जारी किया कि उसे सारी सामग्री छापने से पहले प्री सेंसरशिप में देना होगा, तब से 'जन्मभूमि' प्री सेंसरशिप के बाद ही छपता रहा।

> जयप्रकाशजी १८ जुलाई को पटना के लिए रवाना होंगे। राह में १६ तारीख को वे विनोबाजी से भेंट करेंगे।
>
> एक अंदाज के अनुसार पिछले एक वर्ष में भारत की विभिन्न जेलों में एक सौ लोगों की मृत्यु हुई। ताजा समाचार नीचे लिखे लोगों के अवसान के हैं
>
> १ श्री मरव भारती ट्रेड यूनियन नेता मध्य प्रदेश, की किसी जेल में।
>
> २ दिल्ली के भालाद पक्ष के उपाध्यक्ष श्री मोहनलाल जाटव जिनको बीमारी के कारण परोल पर छोड़ा गया था लेकिन गुप्तचर दफ्तर में बातचीत करने के लिए बुलाया गया तभी उनकी मृत्यु हुई।
>
> ३ शाहदरा के जनसंघ के अध्यक्ष वैद्य बैजनाथ कपिल की मृत्यु तिहाड़ जेल में हुई।
>
> ४ दिल्ली के जनसंघी म्युनिसिपल कौंसलर तिलकराज नरूला की मृत्यु तिहाड़ जेल में हुई।
>
> ५ उरण के श्री पटवर्धन की मृत्यु महाराष्ट्र की थाना जेल में हुई।

मध्य प्रदेश की विभिन्न जेलों से लाठीचार्ज तथा अन्य अत्याचारों के समाचार आते रहते हैं। जार्ज फर्नांडीज की ७० साल की माता श्रीमती एलिस फर्नांडीज ने राष्ट्रपति के नाम एक विस्तृत पत्र में अपने दूसरे

पुत्र श्री नारेंस पर कर्नाटक पुलिस द्वारा किए गए क्रूर अत्याचारो की काली कहानी लिखी है। लारेंस फर्नाडीज को २० दिनों तक लगातार यातनाए दी गई जिसके कारण उनका बाया अग सुन्न पड गया। उनको जाज के बारे म जानकारी न दन पर रेल के तले कुचलने की धमकी दी गई। राष्ट्रपति, गवनर चीफ मिनिस्टर आदि से श्रीमती फर्नाडीज के पत्र की पहुच तक नही मिली है।

अमरीका म इडियन फार डेमोक्रेसी नामक सस्था ने सयुक्त राष्ट्र सस्था के मानवीय अधिकार कमीशन के पास १८ मई १९७६ को भारत म मानवीय अधिकारो पर होन वाले आक्रमण के बारे म जाच करन का अपील की है।

अग्रेजी की 'ओपिनियन पत्रिका के सपादक श्री ए० डी० गारवाला से २,५०० रुपय का डिपाजिट मागा गया। किन्तु बबई हाईकोट न उस आदेश को फिलहाल रोक दिया है। पद्रह साल स यह पत्रिका जहा स छप रही थी उस प्रेस के मुद्रक पर दबाव पडने के कारण उन्होंन अपने यहा म मुद्रण करन की असमथता प्रकट की है। अत अब ओपिनियन' साइक्लोस्टाइल होता है।

गुजराती के भूमिपुत्र दनिक की गुजरात हाईकोट मे जीत होन के बाद केन्द्रीय सेंसर सुप्रीम कोट म गए हैं। इस बीच अलग अलग कारणो स दूसरी चार नोटिसें 'भूमिपुत्र के सपादक या मुद्रक पर आई हैं। लकिन अभी तक तो 'भूमिपुत्र का प्रकाशन निर्भीकता स हो रहा है।

१९ २० जून को बबई म जनतत्र परिषद की वार्षिक सभा श्री एम० एम० जोशी की अध्यक्षता म हुई। दश के विभिन्न प्रदेशो स खासी सस्या म प्रतिनिधि उपस्थित थे। अध्य त क अलावा सवश्री जयप्रकाश नारायण मुहम्मद करीम छागला मीनू मसानी विमनलाल शाह सानी सारावजो, चद्रकात शाह कृष्णाबाई नीमकर, ए० बी० शाह आदि क प्रेरक प्रवचन हुए। परिषद म पारित प्रस्तावो का साराश निम्नलिखित है

१ भारत की लोकसभा के चुनाव माच, १९७७ म पहले होन चाहिए और इन चुनावो को सफल करन क लिए चुनाव १५८

(i) सारे राजनैतिक बंदियों को मुक्त करना, (ii) प्रेस की पाबंदयों को दूर करना तथा (iii) आम सभाओं से प्रतिबंध हट जाना चाहिए।

२ लोकसभा के सदस्यों की अवधि समाप्त हो गई है तब उनके द्वारा राष्ट्र के संविधान में परिवर्तन की चेष्टा की परिषद भर्त्सना करती है। नये सदन में संशोधन हो तब आंतरिक विद्रोह की संभावना के बिना इमरजेंसी घोषित न हो।

(i) इमरजेंसी की घोषणा और राष्ट्रपति शासन की घोषणा दोनों के खिलाफ न्यायालयों में जाने की छूट होनी चाहिए।

(ii) केवल इमरजेंसी में ही मूल अधिकार स्थगित किए जा सकते हैं।

(iii) लेकिन इससे सामान्य न्याय व्यवस्था स्थगित नहीं मानी जानी चाहिए।

परिषद ने इसी प्रस्ताव में यह भी आग्रह किया कि संविधान की मूल रचना में परिवर्तन सर्व सामान्य रेफरेंडम के बिना नहीं होना चाहिए।

(३) जनतंत्र के सुचारु रूप से चलने के लिए प्रेस मुक्त होना चाहिए। आपत्तिजनक साहित्य के प्रकाशन वाले कानून को संविधान की ९वीं सूची में दाखिल करने का भी परिषद ने घोर विरोध किया।

(४) स्वतंत्र न्याय व्यवस्था का परिषद ने आग्रह किया और यह भी कहा कि जजों का स्थानांतर उनकी सम्मति के बिना न किया जाए।

(५) इमरजेंसी के बाद भ्रष्टाचार बढ़ा है क्योंकि आजकल अधिकारियों को असीम अधिकार दे दिए गए हैं।

(६) कैदियों तथा डिटेन्युओं के साथ होने वाले बर्ताव के बारे में परिषद ने चिंता व्यक्त की और मीसा बंदियों के परिवारों को आर्थिक सहायता देने की माग की।

(७) जनतंत्र परिषद के कार्यक्रम के प्रस्ताव में छोटी सभाएं, समाचार पत्रिका निकालना, पुस्तिकाएं प्रकाशित करना, अभ्यास वर्तुल चलाना तथा युवकों के शिविर लेना मुख्य था।

(८) संगठन संबंधी प्रस्ताव में केवल बुद्धिजीवियों तक मर्यादित न रहते हुए ग्रामों तथा शहरों में मुहल्लों तक प्रवेश करने का संकल्प किया

गया।

कलकत्ता की प्रेसिडेंसी जेल म ७०० वंदियो न उनको दी जाने वाली सुविधाए बंद हो जान के कारण चार दिना तक अनशन किया।

कुछ मीसा' बंदियो को इसक कारण ऐसी जेलो म हटाया गया जहा कोई सुविधा नही थी। सवश्री स्वराज बधु भट्टाचाय, सुशील घोडा विमान मित्र की बीमारी के समाचार मिले हैं।

गावरी पत्रिका म विनोबा जी का अनशन सकल्प छापन के कारण उनस २५००० रुपय का जमानत मागी गई।

मुगेर जिल म मत्रियो की सभाओ का बहिष्कार किया गया।

आरा म १० मई का एक मशाल जुलूस निकाला गया।

छात्रो क विरोध क कारण बिहार क मुख्य मत्री पटना म एक जगह सभा न कर पाए।

एक वष पच्चीस दिनो बाद

बम्बई स १८ जुलाई, १९७६ को प्रात साढ़ सात बजे हवाई जहाज स जे० पी० नागपुर के लिए रवाना हुए। कडी पाबदी क बावजूद हजारों लोगो ने जयघोष के साथ लोकनायक को भावभीनी विदाई दी। नागपुर म काफी बडी सख्या म लोगा क साथ आर० के० पाटिल न जे० पी० का स्वागत किया। कुछ लोग जो अब तक भूमिगत थ, गिरफ्तार भी हुए।

सुबह आठ बजकर पतालिस मिनटका समय था नागपुर स कार द्वारा जे० पी० पवनार आश्रम विनोबा भाव से मिलन क लिए रवाना हुए। आचाय भाव म लोकनायक जे० पी० का मिलन बडा मार्मिक था। उनस मिलत ही विनोबाजी की आखो स अश्रुधारा फूट पडी और बहुत दर तक कुछ बात नही सके। जे० पी० का भी गला भर आया। दोनो एक-दूसर को बहुत दर तक मूक, किन्तु आद्र आखों स एकटक देखत रहे। फिर जे० पी० क निवास-स्थान पर विनोबाजी और जे० पी० म काफी दर तक वार्तालाप हुआ। विनोबा न कहा—हम तो आजकल मौन जल म हैं, लेकिन अगर इन्दिराजी हमस मिलन आएगी तो हम उनसे

जरूर कहग कि देश म सत्य का हनन हो रहा है और कायरता बढ रही है, इसस नतिक अध पतन हो रहा है। वार्तालाप काफी आशाजनक रहा। वार्तालाप के समय श्रीमती कुसुम देशपाडे सवश्री नारायण दसाइ, कृष्णराज मेहता आदि लाग उपस्थित थ। १८ जुलाई की रात जे० पी० ने पवनार म ही बिताई। १६ जुलाई की सुबह कार स नागपुर के लिए विदा हुए। नागपुर स ६ १० बजे सुबह विमान द्वारा कलकत्ता के लिए रवाना हुए और वहा पौने ग्यारह बज दिन म पहुचे। कलकत्ता के दम दम हवाई अड्डे पर पश्चिम बगाल के राजनीतिक और सर्वोदय नताओ ने उनका हार्दिक स्वागत किया। कलकत्ता म ज० पी० के आगमन की खबर ने वहा के जन जीवन म काफी हलचल पदा कर दी इसलिए सना को सतक कर दिया गया। ज० पी० के कलकत्ता आगमन पर बहुत-स लोग गिरफ्तार कर लिए गए।

१६ जुलाई की रात को जे० पी० कलकत्ता म अपन साल श्री शिवनाथ प्रसाद क यहा ठहरे। दूसरे दिन सवर २० जुलाई को विमान द्वारा पटना क लिए रवाना हुए। सुबह ६ बजे पटना हवाई अड्डा पर उतरे। उनक साथ उनके छोट भाई श्री राजेश्वरप्रसाद जसलाक अस्पताल क मुख्य गुर्दा विशषज्ञ डा० एन० के० मणि कुमारी जानकी पाडेय (जिन्होन डायलाइजर यत्र चलाने की ट्रेनिंग ली है) और गुलाब (जे० पी० के व्यक्तिगत सेवक) भी थ। पटना हवाई अड्डा पर सव श्री गगाशरण सिंह समाजवादी नता प्रणव चटर्जी जे० पी० के निजी सचिव सच्चिदानद (जो परोल पर जेल स छूटे हुए हैं) ललित बाबू जयनारायण सहाय आदि लोगो न सी० आर० पी० के कडे पहरे म जे० पी० का स्वागत किया। बिहार क कोन कोने स आए हजारो लोगा को तानाशाही सरकार न हवाई अड्डे क अन्दर जाने नही दिया बल्कि एक हजार स ज्यादा लोगा का गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। हवाई अड्डा स कदम कुआ के बीच सात आठ जगहा पर तरुणो न लोकनायक जयप्रकाश—जिंदाबाद के नारे लगाए। पुलिस ने उन्हें भद्दी भद्दी गालिया सुनात हुए गिरफ्तार कर लिया। कुछ लोगो को लाठी स पीटा भी गया।

जे० पी० के आगमन के तीन चार दिनो पूव ही सरकार द्वारा यह

धुआंधार प्रचार करवाया जा रहा था कि जो भी जे० पी० के स्वागत के लिए जाएगा उसे दो या तीन वर्षों की कैद की सजा मिलेगी। इस आतंक के वातावरण मे भी युवको ने पटना शहर की दीवारो को लोकनायक जिंदाबाद के नारो से रंग दिया। जे० पी० ?? अप हावडा दिल्ली एक्सप्रेस से जाने वाले थे किन्तु सरकार ने उनका ट्रेन से जाने का कार्यक्रम रद्द करवाकर विमान से जाने दिया। हावडा और पटना स्टेशनो के बीच बहुत से स्टेशनो पर हजारो व्यक्तियो को रात भर इतजार कर निराश होकर लौट जाना पडा। पटना जिलाधीश का यह आदेश दिया गया था कि २० जुलाई को जे० पी० के स्वागत के लिए कोई भी पटना नही आ सके। बिहार के विभिन्न स्टेशनो पर जिन लोगो पर शक हुआ, उन्हें टिकट रहने के बावजूद नही आने दिया गया।

करीब एक सौ से ज्यादा जीप और ट्रको के बीच जिनमे संगीन धारी सी० आर० पी० और सरकारी पदाधिकारी 'वायरलेस के साथ बैठे थे लोकनायक की जीप थी। उन्हें रास्ते मे कही रुकने नही दिया गया और न ही उनकी गाडी की गति ४० किलोमीटर प्रति घंटे से कम होने दी गई।

इस तरह लोकनायक कदम कुआ स्थित अपने निवास स्थान महिला चर्खा समिति पहुचे जहा की बहनो ने उनकी आरती उतारी। सकडो युवको ने उनके घर के अहाते मे घुसकर लोकनायक जिन्दाबाद के नारे लगाए। वे लडके जब जे० पी० के घर के बाहर निकले तो उनमे से बहुतो को गिरफ्तार कर लिया गया। जे० पी० के निवास स्थान के पास पुलिस और सी० आई० डी० का कडा पहरा बठा दिया गया।

जे० पी० के निवास स्थान पर पटना मे प्रथम बार जे० पी० का डायलेसिस हुआ और बहुत ही सफल रहा। डा० मणि की देखरेख मे डायलेसिस का आपरेशन हुआ जिसमे जे० पी० के सचिव श्री टी० अब्राहम जिन्होंने कृत्रिम गुर्दा यंत्र सचालन का प्रशिक्षण प्राप्त किया है और जिसमे सिद्धहस्त हो गए हैं ने कुमारी जानकी पाडेय के सहयोग से उक्त यंत्र का संचालन सफलतापूर्वक किया, जिसकी प्रक्रिया सात घंटे मे पूरी हुई।

पटना पहुचते ही अगले दिनो लोकनायक को छात्र युवा संघर्ष

वाहिनी का यह पत्र मिला सेनानायक के नाम वाहिनी का खुला पत्र

आदरणीय सेनानायक

वाहिनी की ओर से आपको क्रांतिकारी का सलाम।

आप बिहार आ गए। वाहिनी के कई सैनिक आप तक नहीं पहुंच सके कि आपके शुभागमन पर आपका सेनानायक के अनुरूप स्वागत करते, गणवेश में आपको सलामी देते क्योंकि सैनिक युद्ध के मैदान में हैं, बिहार के कोने-कोने में संघर्षरत हैं। वाहिनी के सैनिक युद्धक्षेत्र से ही आपको सलाम भेजते हैं (कई सैनिक आप तक भेज गए लेकिन वे तानाशाह के द्वारा बंदी बना लिए गए)।

सेनानायक हम खुश हैं। आप हमारे बीच आ गए हैं हमारा साहस हमारी शक्ति द्विगुणित हो उठी है।

आप और वाहिनी के बीच के तेरह महीनों का फासला किस तरह तय हुआ यह अब इतिहास की बात हो गई है। आपकी अनुपस्थिति में वाहिनी किन किन यंत्रणाओं और आक्रमणों के बीच लड़ती रही यह तो अब बीते कल की बात हो गई। फिर भी कल की बाबत वाहिनी के सैनिक आपको विश्वास दिलाते हैं—अपने आंसुओं को हमने अपनी आंखों में संजोकर रखा उन्हें खोया नहीं। उसी तरह जिस तरह हम अपने हृदय में संघर्ष की आग को प्रज्वलित रखे हुए हैं। आपकी सीख—क्रांति की आग (का) करुणा का नेह—हम भूले नहीं कठोर से कठोर यातनाओं के बीच भी।

आपके आदेश के अभाव में भी वाहिनी के सैनिक गलत नहीं रहे संघर्ष के क्षेत्र में पीठ नहीं दिखाई आंखें नहीं झुकाई। हम जिंदा रहे। पूरी ईमानदारी के साथ पूरी निष्ठा के साथ हमने उन मूल्यों को जिंदा रखने का प्रयास किया जिनको आपके नेतृत्व में हमने देखा परखा पहचाना सीखा। उन मूल्यों के लिए संघर्ष करते रहे, जिनको देश में पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए हमने आपके समक्ष कसम खाई थी।

सन १९७५ वाहिनी के संगठन का प्रारंभिक दौर था। सारे सैनिक बिखरे हुए थे। वे जुड़ने के प्रयास में थे, सभी अप्रशिक्षित अथवा अर्द्ध-

प्रशिक्षित। फिर भी वाहिनी तानाशाही के विरुद्ध संघर्ष में कूद पड़ी। बिहार की जेलें वाहिनी का प्रशिक्षण शिविर बनी। आज भी सैकड़ों सैनिक जेलों में बंद हैं। उनका जोश और आक्रोश लगातार कायम है कि हम कैद हैं, गुलाम नहीं। न हम गुलाम हैं न गुलाम रहेंगे। देश में हम लोकतंत्र अवश्य लाएंगे स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व से सजा लोकतंत्र।

सेनानायक, आज सैकड़ों सैनिक, बिहार के कोने कोने में भूमिगत होकर संगठन और संघर्ष में तत्पर हैं। सभी सैनिकों को आपके आदेश की प्रतीक्षा है। नए आदेश की नयी गर्जना की।

आप आदेश दें। वाहिनी आपको विश्वास दिलाती है कि वह एक नहीं हजारों तानाशाहों के विरुद्ध संघर्ष करने को तैयार है। वाहिनी के सैनिक का यह प्रण है कि जब तक वाहिनी का एक भी सैनिक जिंदा है क्रांति की आग धधकती रहेगी।

संपूर्ण क्रांति जिंदाबाद।

आपके आदेश की प्रतीक्षा में,

छात्र-युवा संघर्ष वाहिनी

इस 'भूमिगत क्षेत्र' से आए पत्र के जवाब में ३० जुलाई को जे० पी० ने लिखा—" गत २० जुलाई को मैं बिहार लौटा हूं। बंबई के डाक्टरों की अब भी इच्छा नहीं थी कि मैं यहां आऊं क्योंकि उन्हें भय था कि अगर बीच में मेरी तबियत कुछ खराब हुई तो यहां आवश्यक उपचार नहीं हो सकेगा। परन्तु वहां मुझे चैन नहीं था। मैं अपने स्थान पर लौटना चाहता था इसलिए लौट आया।

लेकिन मैं कोई सक्रिय रूप में आंदोलन का संचालन करने के लिए बिहार नहीं लौटा हूं। एक घायल सिपाही की तरह बिस्तर पर पड़ा हूं। थोड़ा बहुत घूम फिर सकता हूं। मेरे दोनों गुर्दे खराब हो जाने के कारण कृत्रिम गुर्दा मशीन के सहारे जिन्दा हूं और इस मशीन से बंधा होने के कारण बिहार का भी दौरा नहीं कर सकता।

ऐसी स्थिति में आंदोलन के साथियों के लिए क्या संदेश दूं? यह आंदोलन तो बिहार के छात्रों और युवकों ने शुरू किया था। मैं तो बाद में इसमें शामिल हुआ और उनके आग्रह से इसकी बागडोर हाथ में ली।

आगे चलकर उनकी आकांक्षाओं के अनुरूप इस आंदोलन को संपूर्ण क्रांति की संज्ञा मैंने दी। समाज और व्यक्ति के जीवन के हर पहलू में क्रांतिकारी परिवर्तन हो और व्यक्ति और समाज का विकास हो दोनों ऊंचा उठें इसके लिए यह आंदोलन है। यह आन्दोलन केवल शासन बदलने के लिए नहीं है व्यक्ति और समाज को बदलने के लिए है। इसलिए मैंने इसको संपूर्ण क्रांति का नाम दिया है। आप इसे समग्र क्रांति भी कह सकते हैं। समग्र और संपूर्ण में अर्थ की भिन्नता तो जरूर है लेकिन मेरे लिए दोनों एक ही हैं। समग्र क्रांति भी संपूर्ण में क्रांति हो सकती है। इसमें अगर पूर्णता जोड़ दी जाए तो संपूर्ण समग्र क्रांति हुई। यह कोई एक दिन में या एक दो साल में होने वाली बात नहीं है। इसके लिए लम्बे अर्से तक संघर्ष चलाना होगा जूझना होगा और बलिदान करने होंगे।

'अभी तो ऐसी परिस्थिति है कि जनता भयभीत है और नेता तथा कार्यकर्ता हजारों की संख्या में जेलों में बन्द हैं तो संभव है कि पिछले साल जिस रूप में क्रांति चल रही थी उस रूप में उसे चलाने वालों की अनुपस्थिति में वह न चले। परन्तु चूंकि हर क्षेत्र में यह क्रांति करनी है इसलिए मेरा तो सबसे निवेदन है कि अगर आप देश और समाज के लिए सोचते हैं तो आपको इस क्रांति में योगदान देना चाहिए। शिक्षा का ही क्षेत्र लीजिए। प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय तक की शिक्षा में आमूल परिवर्तन होना चाहिए ऐसी एक आम राय है। शिक्षा शास्त्रियों की भी राय है। कोठारी कमीशन की भी राय थी। लेकिन इस दिशा में बहुत थोड़ा ही काम हुआ है और विद्यार्थियों में घोर असंतोष है क्योंकि वह शिक्षा दोषपूर्ण और उनका भविष्य अंधकारमय है। इनके असंतोष को अभी दबा दिया गया है। लेकिन वह असंतोष तो इनके मन में छिपा हुआ है। वह फिर कभी न कभी समय पाकर उभरेगा। इससे समस्या का हल हो जाएगा ऐसी बात नहीं है। लेकिन इस प्रकार की बातें इस प्रकार के विस्फोट जब होते हैं तो समाज को, समाज के नेताओं को एक चेतावनी मिलती है कि अब संभल जाओ। सर्वनाश होगा रास्ता अपना बदलो। कुछ सोचो समझो, कुछ करो।

अभी तो मैं देखता हूं कि इस दिशा में जो कुछ कर सकते थे वे जेल

म हैं और बाकी जो बाहर है और शासन मे है वे चाह इदिरा गाधी हो या और कोई हो, यहा समझत है कि जनता को दबाकर रखना चाहिए, जनता पर शासन करना चाहिए हम शासक है इसलिए जनता को हमारा आदेश पालन करना चाहिए शातिमय रहकर। जनता का सहयोग प्राप्त करन की बातें बहुत होती है। लेकिन इस प्रकार जनता को गुलाम रखकर उसका सहयाग प्राप्त करना असभव है। स्थिति प्रत्यक्ष है, सामन है।

' अब यह स्थिति कब तक चलेगी मैं नही कह सकता। अभी लाकतत्र का सपूण वध तो नहीं हुआ है लेकिन वह सिसक रहा है दम तोड रहा है, एसा लगता है। फिर भी मुझे विश्वास है 'लाक' के ऊपर जनता के ऊपर। मैं मानता हू कि यह स्थिति असह्य होगी उसके लिए। और आज हो या कल हो या परसो हो, निकट भविष्य मे ही जन आदालन फिर उभरेगा। चाहे वह विस्फाट के रूप मे हो या उसका शातिमय रूप हो *आदालन फिर से छिडन वाला है और परिवतन होन वाला है।*

जहा तक शासन की बात है वह जो कुछ ठीक समझेगा, वही करगा। हम तो अपनी राय ही दे सकते हैं। लेकिन जहा तक जनता की बात है उस जाग्रत होना चाहिए। युवको को जाग्रत हाना चाहिए कि देश किधर जा रहा है और उनकी क्या जिम्मेवारी है ? ये सब बहुत गभीर बातें हैं जिन पर उनको ध्यान दना चाहिए। अगर देश के युवक, दश की जनता शहर की और देहात की ग्राम जनता—जाग्रत हो और सगठित हो तो परिस्थिति बदल सकती है और वह बदलकर रहेगी एसी आशा और विश्वास मुझे है।

हवा कसी थी ?

दक्षिण भारत का एक कारागार,
१५ अगस्त, १९७६

जनसघ कायकर्ता के नाम दल के वरिष्ठ अधिकारी का पत्र

प्रिय बधु / बहिन,

आपात स्थिति की घोषणा का एक वष से अधिक समय **बीत चुका है।**

इस कालावधि में अन्य विरोधी दलों की भांति भारतीय जनसंघ की भी सामान्य गतिविधियां अवरुद्ध पड़ी हैं। जनसंघ के हजारों कार्यकर्ता 'मीसा' के अधीन बन्दी हैं। कई हजार और हैं जिन पर डी० आई० आर० के अधीन मुकद्दमे चल रहे हैं।

कुछ थोड़े-से लोग, नाना प्रकार के कष्ट और खतरे उठाते हुए बाहर का कार्य संभाल हुए हैं। उन बंधुओं ने सुझाया है कि देश भर में फैले जनसंघ कार्यकर्ताओं के नाम एक पत्र लिखूं। तदनुसार ही ये कुछ पंक्तियां लिपिबद्ध कर रहा हूं।

वर्तमान संकट को हमें स्पष्ट पहचानना चाहिए। सरकार का कहना है कि श्री जयप्रकाश नारायण और उनके साथ कार्य कर रहे विरोधी दलों ने विशेषत भारतीय जनसंघ ने भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए गंभीर संकट उपस्थित किया हुआ है और इसी निवारण के लिए आपात स्थिति की घोषणा की गई है।

जनसंघ से जिनके वैचारिक मतभेद भी रहे हैं उन्होंने भी जनसंघ कार्यकर्ताओं की देशभक्ति और राष्ट्रनिष्ठा की सदैव प्रशंसा की है। जे० पी० या जनसंघ देश की सुरक्षा के लिए संकट हैं, इससे बेहूदा बेबुनियाद शायद ही कोई आरोप हो सकता है।

इस आरोप को नकारते हुए भी मैं एक गुनाह (यदि यह गुनाह है तो) स्वीकार करना चाहता हूं। जून १९७५ में जे० पी० और जनसंघ और अन्य विरोधी दल कुल मिलाकर एक संकट अवश्य बन गए थे। यह संकट देश की सुरक्षा के लिए अपितु कांग्रेस दल की राजनीतिक सुरक्षा के लिए था। जून १९७५ के गुजरात के चुनावों ने शासक दल को ऐसे 'संकट' का तीव्र आभास करा दिया। उन्हें लगने लगा कि जो सत्ता परिवर्तन आज अहमदाबाद में हुआ है कल नयी दिल्ली में होगा। इसी संकट' को टालने के लिए केन्द्रीय सरकार ने अधिनायक-वादी अधिकार संभाल लिए।

हमारी सुविचारित मान्यता है कि शासन की कमियों और दुर्नीतियों पर प्रबल प्रहार करते रहना और ठीक प्रकार से काम न करने वाले शासक दल को असुरक्षित अनुभव करवाना एक स्वस्थ विरोधी दल का

अधिकार ही नहीं, यह उसका लोकतंत्रीय कर्तव्य है।

इस गत वर्ष में कार्यकर्ताओं ने जितना कष्ट सहा है वह वास्तव में इसी लोकतंत्री मान्यता के लिए दी गई कीमत है। स्थान-स्थान पर उन्हें शारीरिक यातनाएं सहनी पड़ी हैं। अनेकों बंधुओं ने सींखचों के पीछे प्राण गंवाए हैं। सैकड़ों छात्र परीक्षाओं में नहीं बैठ पाए हैं। बहुतों को स्कूल कालेज में प्रवेश से वंचित कर दिया गया है। सहस्रों परिवार आर्थिक दृष्टि से बरबाद हो गए हैं। लोकतंत्र की पुनर्स्थापना के लिए चल रहे वर्तमान यज्ञ में हमारे कार्यकर्ताओं ने जो बलिदान किया है उसपर हम गर्व कर सकते हैं। जनसंघ के संस्थापक डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी लोकतंत्र के अनन्य उपासक थे। उनके अनुयायी तानाशाही के साथ समझौता नहीं कर सकते।

आज ऐसे सहस्रों कार्यकर्ता हैं (जेलों के भीतर और बाहर) जो सर्वस्व की बाजी दांव पर लगाकर मैदान में उतरे हुए हैं। हो सकता है, आप भी उनमें से हों। यदि अब तक नहीं हैं अब इन क्षणों में भी शामिल हो सकते हैं तो आपका सहर्ष स्वागत है।

इस पत्र द्वारा मैं इस बात पर बल देना चाहता हूं कि अपनी मर्यादा में रहते हुए आप भी कई प्रकार से लोकतंत्र की सेवा कर सकते हैं। लोकतंत्र की सबसे बड़ी सेवा है, चारों ओर फैले भय के वातावरण को विदीर्ण करना। भय और आतंक तानाशाही के प्रमुखतम स्तंभ हैं इन्हें प्रयासपूर्वक तोड़ डालें। अपने मित्रवर्ग में अपने व्यावसायिक क्षेत्र में सदैव सत्य, साहस और स्वाभिमान की भाषा बोलें ऐसा वातावरण निर्माण करें जिसमें चापलूसी और चाटुकारिता के लिए लोगों के मन में सहज ग्लानि पैदा हो।

इसके अतिरिक्त मर्यादा में रहकर कार्य करने वाले बंधुओं से अपेक्षा है कि वे संघर्षरत कार्यकर्ताओं का तन मन धनपूर्वक सहयोग करें। सहयोग का रूप आप स्वयं निश्चित कर सकते हैं। आपसे संपर्क करने वाले प्रमुख कार्यकर्ता बंधुओं को आप अपनी मर्यादा स्पष्ट बताएं और उस मर्यादा के अन्दर रहते हुए अधिकाधिक योगदान की भूमिका के बारे में परामर्श करें। मुझे विश्वास है कि यह य

सिद्ध होगा।

आदर व स्नेह के साथ, आपका—एक परिचित कार्यकर्ता बंधु

फिर भी डा० स्वामी पकड़े न जा सके

जनसंघ सांसद सदस्य सुब्रह्मण्यम स्वामी का एकाएक संसद में आना और गिरफ्तार करने की तमाम सरकारी कोशिशों के बावजूद बच निकलने की चमत्कारपूर्ण घटना आज आश्चर्य का विषय बनी हुई है। जहां आम जनता इस घटना की तुलना सुभाषचंद्र बोस और वीर सावरकर की ऐतिहासिक घटनाओं से कर रही है वहां कम्युनिस्ट और सरकारी क्षेत्रों में भारी क्षोभ व्याप्त है।

लोकसभा में एक कम्युनिस्ट नेता श्री इंद्रजीत गुप्ता ने व्यंग्यपूर्वक कहा—हमारी सरकार अरबों रुपये पुलिस प्रशासन पर खर्च करती है। लेकिन पुलिस किस कदर निकम्मी साबित हुई है यह प्रो० स्वामी की घटना से समझा जा सकता है। आपात स्थिति के तुरंत बाद से भारत सरकार प्रो० स्वामी को गिरफ्तार करने की कोशिश करती रही। प्रो० स्वामी भूमिगत रहकर सरकार के खिलाफ काम करते रहे। भारत सरकार की हर संभव कोशिश के बावजूद यह व्यक्ति हिंदुस्तान से नियमित पासपोर्ट दिखाकर निकल गया। विदेशों में भारतीय दूतावासों के भरपूर प्रयासों के बावजूद यह व्यक्ति आपात स्थिति के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय आयोजन करता रहा। विदेशों में आपात स्थिति तानाशाही के खिलाफ और नागरिक व मौलिक मानव अधिकारों की वापसी के लिए प्रचार करता रहा। भारत सरकार की तमाम कारवाई के बावजूद प्रो० स्वामी हिंदुस्तान आ गए। इतना ही नहीं जहां बिना सरकारी इच्छा के परिंदा भी नहीं घुस सकता, उस संसद में प्रो० स्वामी अचानक उपस्थित हुए और सिर्फ घुस ही नहीं गए बल्कि ओम मेहता (गृह मंत्रालय के राज्यमंत्री) के देखते देखते और गिरफ्तार कर लेने की हिदायतों के बावजूद प्रो० स्वामी गायब हो गए।

कामरेड इंद्रजीत गुप्ता का क्षोभ स्वाभाविक है। सरकार द्वारा वाच एंड वार्ड के जिम्मेदार लोगों के खिलाफ निलम्बन वगैरह की कार

वाई भी समझ मे नही ग्राती है। लेकिन एक बात जो सरकार की समझ में नहा ग्रा रही, यह है कि ग्राखिर प्रो० स्वामी इतने जबरदस्त बदो-बस्त के बावजूद कस ग्राए ग्रौर कसे चले गए !

इंदिरा सरकार प्रो० स्वामी के द्वारा तानाशाही के पर्दाफाश के देशव्यापी ग्रभियान से काफी परेशान हो चुकी है। इस हद तक परेशान हुई कि जून के पहले सप्ताह मे गह मत्रालय का 'सेल प्रो० स्वामी को लदन से ग्रपहरण करके भारत लाने के लिए भेजा गया।

चूकि यह खबर ग्रादोलन के नेताग्रो का भी ग्रपने सूत्रो से मालूम हो चुकी थी इसलिए प्रो० स्वामी को लन्दन मे इस बार म सूचित कर दिया गया था। लदन म २६ जून की शाम का प्रो० स्वामी ग्रपने कुछ साथियो के साथ उत्तनगरीय क्षेत्रो म काला दिवस' के ग्रायोजन के सिल-सिले मे जा रहे थे, तब एक कार से चार गुडों ने तीन बार हमला करने की कोशिश की। ग्रतिम बार जब प्रो० स्वामी ग्रौर उनके साथ जवाबी कारवाई के लिए झपट तो कार रफूचक्कर हो गई। स्काटलड याड को सूचित किया गया। कोई दस मिनट बाद स्काटलड याड ने प्रो० स्वामी को सूचित किया कि वह कार मलावी की थी। उसके गुडा को भारतीय दूतावास ने हायर' किया था।

ग्रपने गुप्तचरा से भारत सरकार को प्रो० स्वामी के लौटन की योजना की जानकारी मिल चुकी थी। इसलिए २ ग्रगस्त का पुलिस प्रो० स्वामी के बम्बई स्थित ससुराल के पास गई ग्रौर पूछताछ करती रही पर व्यथ। उसके बाद सरकार न हवाई ग्रड्डे पर पूरी नाकेबदी कर दी थी।

प्रो० स्वामी ६ ग्रगस्त को भारत ग्रा गए थे। १० ग्रगस्त को ससद शुरू होने ही ठीक समय पर राज्यसभा म गए। रजिस्टर पर हस्ताक्षर किया। सदन म पहुचे। एक सदस्य म पाइट ग्राफ ग्रार्डर' उठाया। राज्यसभा के सभापति श्री जत्ती साहब चकित हुए। देखने वाले ग्रन्य ससद सदस्य प्रो० स्वामी की उपस्थिति देखकर चकित थे। ग्रोम मेहता निकले, इधर स्वामी भी निकल गए। दरवाजे पर प्रो० स्वामी का श्री गौड मुराहरि मिल। व हलो हेलो' के बाद बात भी करने की मुद्रा म थे, लेकिन प्रो० स्वामी तुरत लौटकर मिलने की बात कहकर चलते बने। ग्रो

महता की कारवाई का काई असर नही हुआ और प्रो० स्वामी ठीक ससद क बीच स निकल गए।

बीस सूत्री के प्रचार प्रसार इदिरा के समथन म सवत्र लिखावट के बीच दिल्ली पटना, इलाहाबाद कानपुर, चडीगढ, रायपुर जयपुर, कलक्ता की दीवारो पर एकाएक सुबह पढ़ने को मिल जाता

शहीद तरी मौत ही मेर वतन की जिंदगी,
तरे लहू स जाग उटेगी इस चमन की जिंदगी।
दम है कितना दमन म तर
दख लिया और देखेंग।
सघप जारी रखा —लोकनायक की ललकार।
कहो ना खुदा स कि लगर उठा दे
मैं तूफा की जिद देखना चाहता हू।
सपूण क्राति अब नारा है
भावी इतिहास हमारा है।
हर जोर गुल्म के टक्कर म
सघप हमारा नारा है।

सकल्प

टूट सकते है मगर हम झुक नही सक्त,
दाव पर सब कुछ लगा है रुक नही सकते।
—अटलबिहारी वाजपेयी

प्रभाकर शर्मा का आत्मदाह

लन्दन टाइम्स (दिसम्बर ७ १९७६) ने समाचार छापा श्रीमती गाधी की तानाशाही के विरोध म प्रथम आत्मदाह की घटना। यह सत्य समाचार भारत से अमेरिका, फिर इगलड पहुचाया गया। ऐसा समाचार पत्र न छापा।

गाधीवादी पसठ वर्षीय प्रभाकर शर्मा ने, जो गत इकत्तीस वर्षों से

सर्वोदय प्रादोलन क सक्रिय कार्यकर्ता रहे हैं, सुरगाव (वधा) के सरपच के घर के सामन ३ दिसम्बर की रात को श्रीमती गांधी की तानाशाही के खिलाफ विरोध प्रकट करने के लिए प्रात्मदाह किया।

प्रात्मदाह स पहले श्री शर्मा ने श्रीमती गाधी और महाराष्ट्र के मुख्य मत्री श्री चह्वाण को देश की सही कफियत देते हुए पत्र लिखे।

हजारा लाग, सरकार की कडी प्राज्ञा के बावजूद शमा की प्रतिम यात्रा म शामिल हुए।

और खबरें आने लगी

जमीन के नीचे से शब्द आने लगे। भूमिगत प्रेस चले। शब्द साक्षी हुए।

एक का नाम था 'यकीन' जिसके ऊपर छपा है—सत्यमेव जयते न अनृतम। यह शुद्ध गांधीवादी धारा का पत्र था—जिसमें कहीं भी कुछ गुप्त नहीं रखा गया। हर अंक के अंत में बाकायदा छपता

मुद्रक, प्रकाशक और मालिक नानु मजूमदार

बडेली खो भरुच तारीख मुद्रण-स्थल,

'यकीन' छापाखाना, बारडोली ३९४६०१

पत्राचार का पता यकीन कार्यालय

हुजरात यागा, बडोदरा ३९०००० ।

सहयोग राशि, चालीस पैसे, प्रतियां तीन हजार।

सबसे ज्यादा नियमित, सघर्षरत महत्त्वपूर्ण थी आपातकालीन संघर्ष बुलेटिन जो मूलत अपने केन्द्रीय कार्यालय से साइक्लोस्टाइल होकर बाहर आती थी

केन्द्रीय संघर्ष कार्यालय (भूमिगत) भागलपुर विद्यालय एवं प्रमंडल द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित।

इसके हर अंक में ऊपर कोई एक विशेष नारा, बात संदेश छापा जाता था। नवम्बर ३१ में सरकारी नारे के जवाब में यह नारा उल्लेखनीय है एक ही जादू—

१ कड़ी मेहनत—असत्य प्रचार के लिए

२ दूर दृष्टि—रिश्वतखोरी के लिए

३ अनुशासन—दमन के लिए

४ पक्का इरादा—गद्दी बचाने लिए।

'तरुण क्रांति' बिहार प्रदेश छात्र जन संघर्ष समिति की बुलेटिन थी।

यह पटना से (भूमिगत) प्रकाशित होती थी। इसमे पखवारे की खबरें होती। समाचार टिप्पणिया होती। जे० पी० के लेख, सवाद, पत्र, डायरी, आदि के अंश। आठ पेजी फुलिस्केप साइज का।

'जनवाणी' दिल्ली प्रदेश सघर्ष समिति द्वारा प्रकाशित होता था। यह जनसघ का मुख पत्र था। इसमे खबरें सूचनाए टिप्पणिया जेल मे बद नेताओं के पत्र नियमित रूप से छपते थे। अटलबिहारी वाजपयी की प्रसिद्ध कविता सकल्प वर्ष दो के अक छ मे पहली बार प्रकाशित हुई थी। क्वाटर साइज, चार पृष्ठो के जनवाणी म जनतत्र की चेतना जगाने के लिए राष्ट्र और विश्व के विचारको के कथन उद्धरित होते थे।

दिल्ली दनिक 'विद्रोही' जनता पार्टी के कार्यकर्ताओ द्वारा प्रकाशित होता था। खबरो के अलावा इसमे उत्तेजक सम्पादकीय विचारपूर्ण लेख और कुछ ऐसी सामग्री छपती थी जो सघर्ष-चेतना जगाने मे महत्त्व-पूर्ण प्रभाव डालती थी। उदाहरण के लिए—

इन्दिरा सरकार के २० सूत्री अत्याचार

(१) शहरो की सजावट सफाई और सुन्दरता के नाम पर लगभग एक करोड व्यक्तियो को उजाडकर आबादी से दूर फेंक दिया। इतना ही नहीं, फुटपाथों पर बठकर अपनी रोजी रोटी चलाने वाले इन इन्सानो को बेरोजगारी और भुखमरी की भट्ठी मे ढकेल दिया गया।

(२) महगाई भत्ता, बोनस और 'ओवर टाइम' की धनराशि प्राप्त न होने के कारण लघु उद्योगो में बने माल की बिक्री बद हो गई। परिणामस्वरूप दस लाख फक्टरिया बन्द हो जाने से पाच करोड मजदूर बेरोजगार हो गए—उनके परिवार भूखा मर रहे हैं।

(३) पावर लूम द्वारा बनाए गए सूती कपडे पर मिलो द्वारा बनाए गए कपडे के बराबर टक्स लगा दिए जाने के कारण पावर लूम बद हो गए और आज एक करोड मजदूर बेकार भटक रहे हैं।

(४) किसानो के ऊपर पाच से दस गुना तक लगान बढाकर उनकी कमर तोड दी गई।

(५) परिवार नियोजन कार्यक्रम को पूरा करने के बहाने करीब जनता और कर्मचारियो पर किए गए अत्याचारों ने नादिरशाही को मात

ताज़ा कर दी ।

(६) इलाहाबाद उच्च न्यायालय का निर्णय न मानकर कानून का उल्लघन एव न्याय की सरेग्राम हत्या की गई ।

(७) ग्रपनी निरकुशता की स्थापना के लिए सविधान म सशोधन करके उसका गला घाट दिया ग्रौर चुनाव टाल दिए गए ।

(८) मकानो ग्रौर झुग्गी झोपडियो का ताडन के काय म जनता द्वारा दिए करोडो रुपय पानी की तरह बहाकर बरबाद कर दिए गए ।

(९) सावजनिक उद्योगो स पचास करोड रुपय काग्रेस क चुनाव कोष म जमा कराया गया ।

(१०) काग्रेस पार्टी ने स्मारिकाए प्रकाशित करके उद्योगपतियो स विज्ञापन के रूप मे पाच करोड रुपये बडी बरहमी स वसूला ।

(११) छोटे दुकानदारो कुटीर उद्योग वाला को धमकी देकर गरकानूनी ढग स प्रत्येक स क्रमश पाच सौ से दो हजार रुपय तक की धनराशि काग्रेस पार्टी के लिए वसूल की ।

(१२) ग्रपनी जिद ग्रौर ग्रहकार की रक्षा करने के लिए सरकारी खजाने का करोडो रुपया झूठ प्रचार मे खच किया गया ।

(१३) काग्रेस पार्टी के ग्रदर इन्दिरा गाधी की तानाशाही ग्रौर एकतन्त्र का विरोध करने वालो को भी विरोधी दलो के नेताग्रो तथा कायकर्ताग्रो के साथ जेलो मे बद कर दिया गया । विरोधियो का दमन करने के लिए ग्रापात्कालीन स्थिति का खुलकर दुरुपयोग किया गया ।

(१४) ग्रापात्कालीन स्थिति को भ्रष्ट ग्रौर ग्रपराधियो की रक्षा करने के काम मे लाया गया ।

(१५) काग्रेस पार्टी क लिए ग्रार्थिक ग्रपराध करन वालो को 'मीसा' म बद करके काग्रस नेताग्रों न ग्रपने पापो पर परदा डाल दिया ।

(१६) काग्रेस पार्टी का विरोध करन वालो को ग्रार्थिक ग्रपराध के नाम पर नजरबद कर दिया गया ।

(१७) युवा काग्रस ने हर नाजायज तरीका ग्रपनाकर जबरन रुपये इकट्ठा किए ।

(१८) युवा काग्रेसी नादिरशाह और हिटलर के रूप म मैदान मे उतर आए, सरकार ने उनकी सहायता की तथा जनता पर किए गए अत्याचारा का काग्रेसी मत्रिया एव प्रधान मत्री ने भी खुलकर समथन किया।

(१९) लोकतत्र और व्यक्ति की आजादी के लिए लडन वाल सत्याग्रहिया को भयकर यातनाए दी गइ और लगभग सौ व्यक्ति विभिन्न जेलो म शहीद हो गए।

(२०) पिछड और कमजोर वर्गों के लोगा को सहायता तथा सहूलियतें देन के नाम पर भोले लोगा और गरीबा का धोखा दिया गया। उनकी गरीबी हटान के नाम पर उन पर एसे अत्याचार किए गए कि आज व दाने-दाने के लिए मोहताज हैं।

इन्दिरा शासन का पाच सूत्री नसबदी कायक्रम

(१) समाचारपत्रा की नसबदी

(२) समाचार एजेंसियो की नसबदी

(३) सविधान की नसबदी,

(४) ससद की नसबन्दी

(५) न्यायपालिका की नसबदी।

इसके हर अक के अत म छपा होता— विद्रोही' मिल-बाट कर पढ़िए।

सत्याग्रह समाचार' केंद्रीय लोक सघष समिति का एकपन्नी लम्बी पैम्फलेट पत्र था। यह कभी अतर्देशीय सरकारी पत्र पर छपता कभी सादे कभी रगीन कागज पर।

सत्य समाचार एक ऐसा साइक्लोस्टाइल हुआ फुलिस्केप साइज का पत्र था जो सरकारी समाचार एजेंसी के जवाब म दिल्ली म निकल कर पूरे देश म फलता।

प्रतिरोध उत्तर प्रदेश का प्रमुख भूमिगत पत्र था जो कभी लखनऊ स निकलता तो कभी इलाहाबाद स।

सबस अधिक पत्र बिहार स निकलत थ जस

(१) तरुण क्रांति (निदलीय युवा छात्र द्वारा)

(२) 'लोकवाणी (जनसघ)
(३) 'लोक सघष (समाजवादी)
(४) 'मुक्ति सग्राम' (लोहिया मच)
(५) 'हमारा सघष (निदलीय)

अग्रेजी पत्र-पत्रिकाओ म सर्वाधिक उल्लेखनीय है स्वराज्य' जो इग्लड स प्रकाशित होता था। इसके पीछे मुख्य भूमिका थी—जाज फर्नांडीज की, जो काफी अरसे तक भारत और भारत से बाहर रहकर इसकी योजना म कायरत थे। इग्लड म 'स्वराज्य के प्रकाशन स सबधित थे—डी० एन० सिंह एस० के० सक्सेना एम० टाडा और धमपाल जी। भारत स इसके लिए समाचार भेजन वाला म थे—ब्रजमोहन 'तूफान जो अत तक भूमिगत ही रह और पुलिस उन्ह पकड नही सकी। जाज के उत्तजक विचार, चुनौतिया, भारत की सघषपूण घटनाए इसीमे छपती थी।

दिल्ली न्यूज लेटर एक दूसरा महत्त्वपूण भूमिगत प्रकाशन था जो साइक्लोस्टाइल रूप म आता था। आपात् स्थिति की हुकूमत को सबसे ज्यादा डर था विचारो का। आपात स्थिति के थोपने वालो न भी विचार का महत्त्व आरभ स समझा था। इसीलिए आपात् घोषणा के कुछ घटो के बाद ही पूव सेंसरशिप का आदश हुआ। इस आदेश की स्पष्टता के लिए जो मागदशक दिशा सूचन किया गया वह सेंसरशिप से भी अधिक प्रमाण मे विचार का दुश्मन था और जिन लोगो के सिर इन नियमो को चरिताथ करने की जिम्मेवारी आई व तो मानो विचार के पीछे लटठ लिए ही पड गए। स्वतत्र भारत म रवीन्द्रनाथ ठाकुर महात्मा गाधी और पडित नेहरू के उद्धरण देना जुम माना गया। और सूचना व प्रसारण मत्री ने तो यहा तक कह दिया कि खुद प्रधान मत्री का भी कोई वचन यदि आपात घोषणा स पूवकाल का होगा तो उस सेंसर कराना होगा। जगत के इतिहास मे तारीख बताने का तरीका है ईसा से पूव और ईसा स बाद का काल बस हमारे इतिहास मे तारीख बतान का तरीका हो गया—'मीसा से पूव और मीसा' के बाद का काल। इस एक वप म भारत के अखबारो पर जितने प्रतिबध लगे, उतने

समाज के जीवन के किसी अन्य क्षेत्र पर नहीं लग होंगे। अखबारो ने इसके लिए जो प्रतिक्रिया दिखाई वह भी कुल मिलाकर दब्बू-सी ही मानी जाएगी। जहा अग्रजो के सामने कई अखबारो ने सिर उठाया था, वहा आपात स्थिति के आगे अधिकाश अखबारो ने सिर झुका दिया।

ऐसा मुख्यत इसलिए हुआ कि हमारे ज्यादातर अखबार राज्याश्रित हो गए थे। कागज के कोटा के लिए, विज्ञापनो के लिए वे राज्य पर निर्भर थे। दूसरा कारण यह भी था कि अखबारो से सबध रखने वाले लोगो के जीवन ऐसे सुखभोगी हो गए थे कि उस जीवन को छोडकर कुछ त्याग करने का उनका साहस ही नहीं हुआ। एक तीसरा कारण शायद यह भी था कि दूसरे क्षेत्रो मे सघर्ष चलता हुआ न पाकर उन्होने भी बालू मे मुह गाड लेने की शतुरमुर्ग नीति अपनाई।

लेकिन भारतमाता बाझ नही थी। इस सकट काल मे भी उसके कुछ ऐसे सपूत निकले जिन्होने विचार स्वातत्र्य का झडा फहराए रखा। गुजराती का 'भूमिपुत्र', मराठी का 'साधना' अग्रेजी का 'ओपिनियन', आदि ऐसे सामयिकों में थे जिन्होंने निर्भीकता से साल भर अपना प्रसारण जारी रखा। दूसरे भी कुछ ऐसे अखबार थे जिन्होने इतने खुले तौर पर नहीं, लेकिन कुछ विवेकपूर्वक लडाई जारी रखी। इस लडाई म उनको आमतौर पर हाई कोर्टों स समर्थन मिला, जिन्होंने यह फैसला दिया कि सेंसर का काम विचारो को दबोचना नही है। हेबियस कापस के बारे मे सुप्रीम कोर्ट के फसले के बाद और ४०वें सविधान सशोधन के बाद अब यह लडाई और भी विकट बन गई। लेकिन जब कभी प्रजातत्रात्मक भारत का इतिहास लिखा जाएगा तब उसमे उन हाई कोर्टों की कार्रवाई अमर स्थान पाएगी जिनके फसले म स कुछ के उद्धरण हम नीचे दे रहे हैं—

आपात स्थिति स पहले ही बम्बई हाई कोर्ट ने श्री अनन्त करदीकर के केस म यह कहा था— प्रेस-स्वातत्र्य मे यह अर्थ निहित है कि हरेक को ऐसे विचार प्रकट करने का अधिकार हो जो लोकप्रिय या रुचिकर न हो। मतभेद का अधिकार तो जनतत्र का सार तत्त्व है। रूढिगत विचारों से चिपके रहना यह तो हमेशा विचार-स्वातत्र्य का

रहा है।"

श्री मीनू ममानी के केस मे यायमूर्ति आर० पी० भट्ट ने कहा—'अगर किसी सरकारी कृत्य की तारीफ करने वाला प्रकाशन हो सकता है तो उसकी रचनात्मक आलोचना करने वाला प्रकाशन भी अवश्य हो सकता है।'

कुछ भूतपूर्व यायाधीशो को सभा करने से रोकने वाले हुकम के खिलाफ हुए केस म न्यायमूर्ति तुलजापुरकर ने कहा— आजकल जो आपात स्थितिया जारी हैं उनमे भी किसी भी नागरिक के लिए यह कहना पूरा जायज है कि आपात घोषणाओ के लिए कोई कारण नही था। और वे उपयुक्त भी नही हैं। किसी नागरिक के लिए यह कहना भी जायज है कि प्रजातत्र म मतभेद को कुचलन के लिए आपात स्थिति टिकाई जा रही है और वह तुर त खत्म होनी चाहिए और यह कहना भी जायज है कि इन आदेशो को अमान्य करने के लिए तुरत पार्लियामट की बठक होनी चाहिए। हा यह सब कहते समय किसी प्रकार हिंसा नही उकसानी चाहिए। दूसरे शब्दो म वह तो विचार प्रचार समझावट आदि रचनात्मक तरीको से आपात स्थिति के खिलाफ जन मानस बनाना पूरी तरह जायज बात है।'

मीनू मसानी के केस मे कोट ने यह भी कहा कि प्रेस केवल जानकारी दने का साधन नही है। वह प्रचार द्वारा जनमत बनाने का एक शक्तिशाली साधन भी है। सही जनतत्र तो परस्पर स्पधा करने वाली राजनीतिक आर्थिक और सामाजिक विचारधाराओ तथा दशनो के बीच ही पनपता है और उसमे अखबारो का एक महत्त्वपूण योगदान हो सकता है। सेंसर का काम यह नही है कि यह देखे कि हर अखबार एक ही राग अलापता हो हर किश्ती एक ही दिशा म बहती हो। जिस दिन मुक्त विचारो का यह लेन देन खत्म हुआ, उस दिन जनतत्र की मत्यु की घटी बज गई समझिए। सेंसर का काम जनता की दिमागी धुलाई करने का नही है। सेंसर तो जनतत्र की दाई है उसकी कब्र खोदने वाला नही। बहुसख्यक लोगो के विचारो से मतभेद और सत्ताधारी पक्ष के काय-कलापो की आलोचना तो राजनीति की एक तदुरस्त हवा

पदा करती है। ग्रौर सेंसर को यह नही चाहिए कि जबदस्ती स स्वीकार करवाई गइ रूढि से उस जीवनविहीन बना दे। मतभेद, ग्रसहमति या ग्रालोचना कडी भाषा म की गई हो इसमे प्रकाशन बद नही कराया जा सकता है।'

'भूमिपुत्र' के श्री चुनाभाई वद्य के केस म न्यायमूर्ति श्री सठ न कहा—'सरकारी नीतियो के बारे म फैसला दन का लागों को ग्रक्षुण्ण ग्रधिकार है ग्रौर इसलिए सरकार को उसकी गलतिया दिखान का भी ग्रधिकार है ताकि वह उनम सुधार कर सके ग्रौर ग्रगर गलत रास्त पर गई हो तो सही रास्त चल सके। सुधार करने वाली इन टिप्पणियो के मूल म ग्रनत सत्ताधारी जनता का ग्रपने दलाल शासन को सुधारन का हक तो है ही साथ ही साथ जनतत्र का वह जरूरत भी है जिसस सरकार ग्रपनी गलती समझकर उन्ह जनता के मतानुसार सुधार ले। कभी दोषी न होन वाली सरकार ग्रौर जनतत्र य दोनो साथ नही चल सकत। कभी दोषी न होन का माना हुग्रा गुण तो हमशा एकाधिपत्य के साथ ही हाथ म हाथ मिलाकर चलता है।

इस प्रकार के फसले न एक साल तक भारत म जनतत्र क चिराग को जलाए रखा।

साहस और सामना

बिहार छात्र युवा सघर्ष वाहिनी के पत्र के जवाब म जे० पी० ने सभी स्वतत्रता प्रेमियो के नाम अपने बयान म कहा था कि व्यक्ति के रूप म और सरकारी तत्र मे भी सभी स्वतत्रता प्रेमी भारतीयो को साहस के साथ श्रीमती गाधी की तानाशाही का सामना करना चाहिए कि किस तरह इतिहास का उलटा प्रतिगामी प्रवाह फिर सही दिशा म मुडे और अपनी खोई हुई स्वतत्रता वापस पाए और अपनी लोकतात्रिक सस्थाए फिर स्थापित करें। अगर सविधान के रास्ते से करना हो तो जब लोकसभा के मुक्त शुद्ध और पक्षपातरहित चुनाव हो जिसम काग्रेस की हार हो और प्रतिपक्ष विजयी होकर अपनी सरकार बनाए।

इस लक्ष्यपूर्ति के लिए जे० पी० ने राष्ट्र को तीन कायक्रम दिए

(१) पूरे देश म सभाए हो, आम जनता की तथा विभिन्न सस्थाओ और सगठनो की ओर स उनम माग की जाए कि इमरजेंसी उठाई जाए, राजनीतिक बदी छोडे जाए लोकसभा के चुनाव कराए जाए तथा प्रस *और बोलने की विचार प्रकट करने की स्वतत्रता वापस दी जाए।*

(२) जो लोग व्यक्ति की स्वतत्रता तथा स्वतत्र लोकतात्रिक सगठनो म विश्वास करते है वे फौरन जाहे जिस तरह सभव हो, तीन तीन, चार चार की टोली बनाकर जनता म घुस जाए और लोगो को बताना शुरू कर दें कि क्या हो रहा है और कौन स बुनियादी सवाल पदा हो गए हैं ? श्रीमती गाधी की तानाशाही का रथ बढता चला जा रहा है क्योकि लोग चुप हैं कुछ कर नही रहे हैं। लोग चुप और निष्क्रिय इसलिए है कि समझ ही नही रहे हैं कि क्या हो रहा है ? एकतरफा प्रचार के कारण बहुत स लोगो न मान लिया है कि जो हुआ है उनकी भलाई के लिए हुआ है। इसलिए सबस पहला और जरूरी काम यह है कि लोगो को एक बार फिर बताया जाए कि स्वतत्र और लोकतात्रिक

समाज के आधार क्या हैं बुनियादी तत्त्व क्या हैं ? यह काम समझदारी के साथ करना है। उसके लिए जरूरी है कि सरल भाषा म जानकारी के साथ और यह बताते हुए कि क्या करना है, पर्चे, फाल्डर, पुस्तिकाए आदि तयार की जाए। जाहिर है कि इनका प्रकाशन और प्रचार गर-कानूनी ढग स ही हो सकेगा। बहुत से लोग इन लिखित चीजो का पढ और समझ भी नही सकेंगे, लेकिन य टेस्ट बुक का काम करेंगी। इन्ह छोटी छोटी गोष्ठिया मे पढा जाए जिनम ज्यादातर छात्र तथा अन्य युवक और युवतिया शरीक हो।

कहने की जरूरत नही कि जो लोग इस तरह के निर्दोष शक्षणिक काम म शरीक होगे वे भी पकडे जाएगे जेल भेजे और पीटे जाएगे, और उन्ह यातनाए दी जाएगी उन्हें इन सबके लिए तयार रहना होगा। लकिन मुझे विश्वास है कि इस देश म ऐसे काफी युवक और युवतिया हैं जो इन खतरो को जानते हुए भी पीछे नही हटेंगे।

(३) जनता के शिक्षण के साथ-साथ जनता के सगठन का काम भी होना चाहिए। बिहार आदोलन मे जन सघष समिति के रूप म सगठन हुआ था। मेरा सुझाव है कि बिहार क बाहर पूरे देश मे जो सगठन बनें उन्हें केवल नव निर्माण समिति कहा जाए। पहचान क लिए नाम के पहले ग्राम', 'नगर, 'छात्र आदि शब्द जोडे जा सकत हैं।

पहल कुछ लोगो को यह कायक्रम फीका लगा क्योकि इसमे तानाशाही तत्र से सीधे टकराने का तत्त्व पहली नजर म नही दिखा। पर जस-जस लोग इस कायक्रम की गहराई मे गए उन्ह अनुभव होने लगा कि पूरे बिहार आदोलन ने भी तो अपना लक्ष्य सरकार से टक्कर लना नही माना था। टक्कर तो आदोलन से या ही सहज ही निकल आई और निकल आई तो टक्कर ली गई और उसकी पूरी जिम्मेदारी हुई समाज और देश की उन प्रतिक्रियावादी शक्तिया पर जो सरकार के नेतत्व म जनता की शाति का कुचलने की कोशिश कर रही हैं—ऐसा बिहार आन्दोलन म हुआ और ऐसा अब भी होगा।

यही थी वह मूल वचारिक भूमि जहां स उन तीनों कायक्रमों द्वारा समूचा सघष हुआ।

दिल्ली केन्द्र

राष्ट्रीय सघष समिति की ओर से राष्ट्रीय स्तर पर सवप्रथम नानाजी देशमुख ने जे० पी० के बताए हुए कायक्रमो को कायरूप देना शुरू किया।

बाहर भूमिगत सघष काय सचालक के रूप म नानाजी ने पहला काम यह किया कि अपना सफद बाल काला कर लिया। धोती कुर्ता की जगह दूसरी पोशाक। कभी मूछ कभी दाढी। हर हफ्त अपना नाम बदल देना, हर रात अपना नया निवास स्थान। कहीं जाना हो तो रास्ते म कई सवारी बदलत हुए पहुचना। दिल्ली मे जाना हो बगाली मार्केट तो बताना गाजियाबाद। हर प्रात के लिए अपना निजी दूत। छोटे छोटे व्यापारियो के सामान के साथ दिल्ली स बाहर साहित्य का भेजा जाना बडा ही दिलचस्प ढग था। हर काम के लिए गुप्त सकेत, 'कोडस' विकसित किए गए। सत्याग्रह कराना जनता को उदासी और निराशा से हटाकर सघष के चेतना स्तर पर रखना—यही था मुख्य काय। आठ महीने बाद नानाजी गिरफ्तार किए गए, तब तक सघष का बुनियादी ढाचा तयार कर दिया था।

नानाजी के बाद नेतत्व सभाला केरलवासी सगठन काग्रेस के रवीन्द्र वर्मा ने। छ महीने बाद वह भी बदी। फिर काय सभाला दत्तोपत ठोगडी ने। इस सघष के दौरान 'अहिसक' गोरिला युदध विचार सहज ही पनपा था।

सघष के बीस बिन्दु भी तयार हुए थे।

देशव्यापी स्तर पर दूसरी ओर जाज फर्नांडीज सघष का नेतत्व कर रहे थ। जाज की सघष योजना अपने ही ढग की थी। वह कई मामलो मे राष्ट्रीय सघष की नीतियो से असहमत थे। उनका काय-क्षेत्र था—कलकत्ता बम्बई बडौदा दिल्ली पटना। वह तानाशाही हकूमत के सीधे टक्कर लेने म विश्वास रखते थे—इसके लिए प्रचार प्रसार यातायात तथा अन्य जितने सघष साधनो की अनिवायता थी सबकी प्राप्ति के लिए वह अन्त तक प्रयत्नशील थे। इसीके बदले सरकार के हाथो जब

व बंदी हुए तो उन्हें 'बड़ौदा डाइनामाइट' अभियोग में डाला गया।

दिल्ली में युवा, छात्र संघर्षों में समाजवादी युवजन, विद्यार्थी परिषद, सी० पी० एम० और निर्दलीय युवा छात्र संघ की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी।

बिहार

आपात स्थिति के विरोध में, खासकर इमरजेंसी के आतंक को तोड़ने के लिए २७ जून को 'पटना बंद' के कार्यक्रम से बिहार का नया संघर्ष शुरू हुआ। इसके लिए पटना की पाटलिपुत्र कालोनी में २६ की रात को गुप्त बैठक हुई। इसमें भाग ले रहे थे—रामानंद तिवारी, जगबंधु अधिकारी, किशन पटनायक, त्रिपुरारी सरन और छात्र संघर्ष की ओर से रघुनाथ गुप्त, नरेन्द्र सिंह, सुशील मोदी, नीतिश, गोपाल सरन सिंह, विजयकृष्ण और ब्रह्मदेव। इस बैठक में जनसंघ, सर्वोदय, सी० पी० एम० समाजवादी, निर्दलीय, संगठन कांग्रेस आदि सभी दलों के सजग लोग एकमत थे। इस बैठक में तय हुआ कि महामायाजी, रामानंद तिवारी, जगबंधु और तकी रहीम गांधी मैदान में इमरजेंसी के खिलाफ सत्याग्रह करेंगे और आतंक के खिलाफ बिहार को उठाएंगे।

अगले दिन बिहार के इन्हीं नेताओं की गिरफ्तारी से बिहार के संघर्ष का श्रीगणेश हुआ। इसके संचालक थे, सर्वोदय के त्रिपुरारी सरन।

भाग लेकर सारा संघर्ष कार्य लोक संघर्ष समिति, जन संघर्ष समिति, छात्र संघर्ष समिति और नव निर्माण समिति द्वारा पूरे बिहार और उसके बाहर उत्तर प्रदेश तक होने लगा।

१८ नवम्बर १९७५ से लेकर २६ जनवरी १९७६ तक कुल नौ हजार लोग जेल गए। अंत तक बिहार में बंदी सत्याग्रहियों की संख्या एक लाख तक पहुंची।

मुजफ्फरपुर, आरा, बक्सर, हजारीबाग, भागलपुर, इत्यादि जेलों में सभी प्रमुख कार्यकर्ता और सभी संघर्ष समितियों के नेता बंदी थे। हजारीबाग और बक्सर में दोनों जगह यातना शिविर के

वुख्यात थे।

तरुण सघप सघ छात्र सघप समिति जन सघप समिति, छात्र युवा सघप वाहिनी जसी सघप सस्थाए, तरुण शाति, तरुण सघप, लोकवाणी मुक्ति सग्राम, हमारा सघप, जसी भूमिगत पत्रिकाए—सबने मिलकर जिम रूप म सघप किए, वह नि चय ही गौरवपूण है। इस सघप अग्नि म बिहार की जाति, सम्प्रदाय और दल की सारी दीवारें जल गइ और इसीम स निकली वह नयी चेतना जिसका स्वरूप निद लीय है और जिसका चरित्र शुद्ध जनतात्रिक है। विनावा जे० पी०, डा० लोहिया और सबसे ऊपर महात्मा गाधी के विचार और कम का यही वाहक है।

मूलत जिस एक व्यक्ति के खिलाफ आपात स्थिति लागू हुई उसका नाम था—जयप्रकाश। जिस आदोलन के विरोध म यह स्थिति लाई गई थी उसका नाम है बिहार आदोलन। जिस शक्ति को कुचलने के लिए यह तत्पर थी उसका नाम है लोक शक्ति। जिस सघप के खिलाफ यह आई थी, उसका नाम है युवा छात्र सघप।

इस सबके पीछे वही बिहार भूमि बिहार प्रदेश। मूल म वही जय प्रकाश। सघप मे तीनो वग

प्रतिपक्ष के पुरान नेता कायकर्ता मुख्यत समाजवादी सर्वोदयी

सगठन काग्रेस और जनसघ

प्रतिपक्ष के नये युवक नेता और कायकर्ता

निदलीय युवा, छात्र वग।

इन तीनो वर्गों के सनानियो ने जिस निष्ठा और वलिदान भाव से सघप किया है वह अनेक अर्थों म मूल्यवान है। भौतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक—इन तीना स्तरो पर बिहार भूमि न सघप किया। जितना आतक कुर्बानी अपार कष्ट, दु ख और यातनाए बिहार के सेनानियो ने उनके घर-परिवार सबधी लोगो ने सह है उतना शेप भारत मे अन्यत्र कही नही। इस सघप और बलिदान स जो नयी चेतना फूटी है वही प्रकाश देगी आन वाले भारत को।

इस चेतना का नाम है—युवा शक्ति। इसकी पहचान है—यह नदलीय है। सहयोग और सघष म समान और एक साथ आस्था है। जिसका विश्वास है कि राजसत्ता स स्वतत्र व्यक्ति की अपनी भूमिका है आत्मसम्ता है उसकी। जिसका सकल्प है कि राजसत्ता पर दवाव हरदम बना रहे। जनता देख रही है—यह बोध राजसत्ता को हर क्षण रहे।

जिस रोज़ आपात काल की घोषणा हुई उस दिन पटना बद था। जगह जगह सारे लाग नारे लगाते हुए नज़र आए। रात से पुलिस की पेट्रोलिंग तेज़ हुई, पर २७ का विहार बद का आह्वान था जो करीब करीब पूर्णत सफल रहा। पटना म पुलिस ने जगह जगह बद दूकानो को खुलवाने के लिए धमकी देना शुरू किया। २७ तारीख को ही छात्र नेता टोटनसिंह पटना मार्केट में गिरफ्तार कर लिए गए। २७ की रात स अधाधुध पुलिस के छापे पडने लगे। छात्र सघष समिति के लोग इन दिनो मुख्यत हाथ स पेपर पर लिखकर कालेजो चौराहो मुहल्लो म तानाशाही विरोधी पोस्टर रात म चिपकाने लगे। जिस मुहल्ले मे पोस्टर चिपका होता उस मुहल्ले म पुलिस तैनात कर दी जाती थी। उस मुहल्ले के सक्रिय साथियो के घर पर छापा अवश्य पडता था। एक बार इसी तरह स्टेशन पर पोस्टर चिपका हुआ था उसे एक आदमी पढ़ने लगा बस उसे पुलिस पकडकर ले गई। दिन म आन्दोलन सम्बन्धी पर्चा देने पर कोई आदमी डर से लेता तक नहीं था। अगर किसीके घर पर पर्चा या पोस्टर लगा होता था तो पुलिस उस घर वाले को काफी डराती धमकाती थी। यहाँ तक कि गाली भी देती थी। इस आतकपूर्ण वातावरण म किसीको पर्चा देना बडा मुश्किल सा हो गया। तब इन लोगों ने रात म दो-तीन बजे, घर घर खिडकी दरवाज़े म पोस्टर गिरा देने का काम शुरू किया। यही तरीका अन्त दिनो तक चलता रहा। अगर रात म कोई घर वाला जगा होता था

हाथ म हीं द दिया जाता था। ये सब काम राज्य के प्रत्यक जिले म चलता रहा। पटना म सक्रिय मुहल्ला चान्मारी राड चिडयाताड कुकडगाग कालोनी गदनीबाग गेखपुर राजवशी नगर पुनाईचक जक्कन पुर गोलघर योगिया टोली दरियापुर गोला मुसल्लपुर पटना सिटी आदि।

सिनेमा मला भीड आदि जगहो पर पर्चा लुटाने का काम किया जान लगा। ६ अगस्त को बिहार बद का पास्टर यू मार्केट एव अन्य बाज़ारो मे चिपकान का निणय किया गया। ६ अगस्त को मुहल्ल मुहल्ल रात भर पुलिस तनात थी। यह आठ आदमियो की टाली थी जिमम हरिनारायण चौधरो, किनारप्रसाद गत्रुघ्न प्रमाद ओमप्रमाद लाला सिन्हा श्रीराम यादव आदि थ। स्टेशन पर हा हामन खा पान के दूकान वाले साथी का घर रहने के लिए चुना गया। एक बिना पढा लिखा और गरीब आदमी होत हुए सारा डर भय भूलकर उसन इन लागा की काफी मदद की। तीन बज रात क बाद जब कुछ पेटोलिंग कम हुई तब हम लोगो न साटना (चिपकाना) शुरु किया। उस समय पास्टर ही साटना समझिए बहुत बडा काम था। बडी सतकता स चारा तरफ पास्टर साट (चिपका) दिए गए।

६ अगस्त के पहल ही जिलाधिकारी ने सभी दूकानदारा को नोटिस द रखा था कि अगर कोई दूकान बद करेगा तो उसकी दूकान का लाइसेंस रद्द कर दिया जाएगा एव डी० आई० आर० म बद कर दिया जाएगा। अत दुकानदारा का डरना स्वाभाविक था। सार मुहल्ले म सी० आर० पी० बी० एस० एफ० के जवान बठा दिए गए। फिर भी चिडयाटाड चादमारी रोड पटना सिटी की बहुत सारी दूकानें एक बजे दिन तक बद रही बाद म उन्ह पुलिस ने खुलवा दिया।

२८ जून १९७५ को रामानन्द तिवारी, जगबधु अधिकारी तकी रहीम एव छात्र सघप समिति के रघुनाथ गुप्ता गाधी मदान स गिरफ्तार कर लिए गए।

६ अगस्त को कल्पना कुटीर, राजेन्द्र नगर पर जहा आदोलन सम्बधी काय होता था रेड किया गया। सार कागज और साइक्लो

स्टाइल मशीन पुलिस ले गई।

६ अगस्त स २० अगस्त तक कम स कम पाच बार इन लागो के डेरो पर छापा मारा गया। इनम स एक के पिता चपरासी हैं उन्हे काफी धमकी दी जाने लगी। मगर उन्होंन काफी धय स काम लिया। इन्हीं के डर की बगल म एक सि हा साहब रहते थे जिनकी लडकिया आदोलन म थी वहा भी इन्हे खोजन क लिए छापा मारा गया।

इन लोगो न सम्पक के लिए सघप सल का सगठन किया। एक सेल म दो तीन चार मुहल्ले होत थ। एक सेल मे कम से कम पाच साथी होत थे। उसी सल के जिम्मे उस क्षेत्र के आदोलन सम्ब धी जिम्मदारिया होती थीं।

इतना होत हुए भी य लोग बठक करत थे। बठक का स्थान अक्सर कोई पाक, मैदान पिछडा इलाका चुना करते थ। एक जगह क बाद फिर काफी दिना पर वहा बठक हुआ करती थी।

२ अक्टूबर को ता सम्पूण दश म सत्याग्रह का कायक्रम था। २ अक्टबर के पहले जनता का भय दूर करन क लिए बिहार म पहला जुलूस कामस कालज से निकला जिसम कम से कम पाच सौ साथी थे। बाकीपुर जेल तक वह जुलूस आया, जहा पुलिस ने लाठीचाज किया। सुमन कुमार श्रीवास्तव अश्वनीकुमार के साथ अन्य पन्द्रह साथी गिरफ्तार कर लिए गए।

२ अक्टूबर को इस दल के तीन बहुत ही सघपशील साथी गिरफ्तार हो गए जिनकी गिरफ्तारी पर दु ख भी हुआ क्याकि ये लोग भूमिगत काय करते थ। हरीनारायण चौधरी राजेश क्रातिकार दिनेश। उसी दिन सनत कुमार दस वप के बालक न भी गिरफ्तारी दी जो काफी बाद तक फुलवारी शरीफ कम्प जेल म रहा। उसन निश्चय कर लिया था कि मैं बेल पर नहीं निकलूगा। एक बार उसके भाई ने बेल करा लिया तो इसपर उसन जेल म अनशन कर दिया कि हम बाहर नही जाएग। आखिर उसके भाई का ही हार माननी पडी। उसके पिताजी सर्वोदय के हैं वे भी साथ ही जेल मे रहे।

हर जिल म बोस स लेकर तीन सौ लागा ने यों न गिरफ्ता-

रिया दी। दरभगा म समाजवादी नेता रामनन्दन मिश्रा के नतत्व म ८० लोगा ने गिरफ्तारिया दी। इसके बाद लोगा का भय बहुत कम हो गया था। बहुत से व्यक्ति सल के साथियो स शिकायत करत थ कि अभ्र की बार पत्रिका अब तक नही दे गए। १५ अगस्त का धनबाद म सरकार की ओर स झण्डा फहराने की यवस्था की गई थी। पुलिस की सारी सतकता के बावजूद तिलेश्वर कौशिक न झडात्तोलन कर दिया। लोकनायक जयप्रकाश जिन्दाबाद एव तानाशाही विद्रोही नारे लगाए। उस बेहोशी तक मारा गया। पानी तक नही दिया गया। धनबाद जल म मेल म रखा गया, बाद म भागलपुर जेल स्थानान्तरण कर दिया गया।

४ नवम्बर को दमन विरोधी दिवस का कायक्रम था। ४ नवम्बर १९७५ को जे० पी० को लाठी मारते हुए चित्र खींचा गया था। उसी चित्र का पोस्टर बनाया गया था जिसे जगह जगह चिपकाया गया। ४ नवम्बर को जिस स्थान पर ज० पी० को लाठी प्रहार किया गया था उसी स्थान स सत्याग्रह का कायक्रम था। करीब ३ या चार बज १८ साथिया न गिरफ्तारी दी।

६ स ७ नवम्बर तक फासिस्ट सम्मेलन के विरोध क लिए काय क्रम। पटना शहर मे पुलिस की विशेष जमघट मानो कश युद्धस्थल। फासिस्ट विरोधी सम्मलन के लिए छात्र सघप समिति की तरफ स जगह जगह वाल पेंटिंग हाथ स लिखे पोस्टर का व्यापक कायक्रम।

५ दिसम्बर को बी० एन० कालेज म कम्युनिस्टो द्वारा छात्रा पर हमला। पुलिस द्वारा लाठीचाज। बालमुकुन्द शर्मा सहित १८ व्यक्ति गिरफ्तार। कालज एरिया म काफी तनाव।

कम्युनिस्टो द्वारा किए गए प्रहार के विरोध म साइस कालेज, इजि नीयरिंग कालेज बी० एन० कालेज क छात्रो द्वारा क्लास का बहिष्कार। बी० एन० कालेज मे लाठीचाज।

९ दिसम्बर १९७५ को पटना क तमाम कालेजो के छात्रो न क्लास का बहिष्कार किया। बिहार के प्रमुख जिलो क महाविद्यालया मे काय-क्रम हुआ। बहिष्कार का मुख्य कारण था कि अफवाह जोरो पर फली हुई थी कि जे० पी० की मत्यु हो गई।

२६ जनवरी, १६७६ को जगह जगह झंडोत्तोलन हुआ। झंझारपुर म मधुबनी जिला के कमठ साथी लालबहादुर सिंह क नेतत्व म जुलूस निकला। झंझारपुर मुख्य मन्त्री जग नाथ मिश्र का क्षेत्र है। उन लोगा की काफी पिटाई की गई एव उनकी गिरफ्तारी का एफ० आई० आर० मुख्य मत्री के क्षेत्र से नही बल्कि दूसरे जगह मधेपुर स लिखा गया। एक बडी आतकपूर्ण घटना हुई। उन गिरफ्तार आठ यक्तियो मे एक नौजवान था। उसके पिता थानापुर अपन बेटे का देखने गए और ढाढस के लिए अपन बेटे की पीठ ठोकी। बस इतना पुलिस स देखा नही गया और बेट के साथ पिता को भी जेल भेज दिया गया। नौ महीने बाद बाप बेटा छूटे। इन लोगा की जेल म काफी पिटाई की गई। बाद मे मधुबनी जल से भागलपुर जेल स्थानान्तरण कर दिया गया।

१२ माच को कक्षा बहिष्कार का कायक्रम था। १८ माच शहीद दिवस क रूप म मनाया जा रहा था। पटना के ए० एन० कालेज म मैं स्वय गया वग म जाकर वाल बोलकर सारे क्लास का बहिष्कार करवाया। कुछ दूर तक नारे लगाते हुए जूलूस के रूप मे ले गए। सी० आर० पी० एव पुलिस के नौजवान आ गए। दो साथी कृष्णकुमार सिंह उर्फ केदार एव उमाशकरप्रसाद गिरफ्तार कर लिए गए। नौ साथियो पर गिरफ्तारी का वारट निकाला गया।

१ मई, १६७६ को इन्दिरा गाधी का पटना मे भाषण हुआ था। इसके विरोध के लिए हम लोगो की तरफ से जोर शोर स तयारी शुरू हो गई। सरकार की तरफ से भी जोर शोर स तयारी थी। करीब पन्द्रह दिन मे जो साथी इमरर्जेंसी के बल पर सक्रिय थे, उनके यहा भी छापा मारा जाने लगा। सकडा साथी गिरफ्तार किए गए। इस कायक्रम का मुख्य भार रामविलास पासवान जो अब ससद सदस्य हैं अब्दुल बारी सिद्दीकी नीतिश कुमार, ब्रह्मदेव सिंह एव अख्तर हुसन पर था। यह सारा कायक्रम वणन करने म काफी लम्बा लिखना पड जाएगा। सार लोगो का सभास्थल पर बठ जान का कायक्रम था। श्री अब्दुल बारी सिद्दीकी प्रमाद नामक सक्रिय साथी क साथ, पर्चों क साथ सभास्थल म पहुच गए। जान के बारे मे सारे साथियो म अफसोस था

रिया दी। दरभगा म समाजवादी नेता रामनन्दन मिश्रा के नेतत्व म ८० लोगो ने गिरफ्तारिया दी। इसके बाद लोगो का भय बहुत कम हो गया था। बहुत से यक्ति सल के सायियो स शिकायत करत थ कि अब की बार पत्रिका अब तक नही दे गए। १५ अगस्त को धनबाद म सरकार की ओर से झण्डा फहराने की व्यवस्था की गई थी। पुलिस की सारी सतकता के बावजूद तिलेश्वर कौशिक न झडात्तोलन कर दिया। लोकनायक जयप्रकाश जिन्दाबाद एव तानाशाही विद्रोही नारे लगाए। उसे बेहोशी तक मारा गया। पानी तक नही दिया गया। धनबाद जल म सेल म रखा गया बाद म भागलपुर जल स्थाना तरण कर दिया गया।

८ नवम्बर को दमन विरोधी दिवस का कायक्रम था। ४ नवम्बर १९७५ को ज० पी० को लाठी मारते हुए चित्र खीचा गया था। उसी चित्र का पोस्टर बनाया गया था जिसे जगह जगह चिपकाया गया। ४ नवम्बर को जिस स्थान पर जे० पी० को लाठी प्रहार किया गया था उसी स्थान स सत्याग्रह का कायक्रम था। करीब ३ या चार बज १८ साथियो न गिरफ्तारी दी।

८ स ७ नवम्बर तक फासिस्ट सम्मेलन के विरोध के लिए काय क्रम। पटना शहर मे पुलिस को विशेष जमघट मानो बना युद्धस्थल। फासिस्ट विरोधी सम्मलन के लिए छात्र सघष समिति की तरफ स जगह जगह वाल पेंटिंग हाथ स लिखे पोस्टर का यापक कायक्रम।

३ दिसम्बर को बी० एन० कालेज म कम्युनिस्टो द्वारा छात्रा पर हमला। पुलिस द्वारा लाठीचाज। बालमुकुन्द शर्मा सहित १८ व्यक्ति गिरफ्तार। कालज एरिया म काफी तनाव।

कम्युनिस्टो द्वारा किए गए प्रहार के विरोध म साइस कालेज, इजि नीयरिंग कालज बी० एन कालज के छात्रो द्वारा क्लास का बहिष्कार। बी० एन० कालज म लाठीचाज।

९ दिसम्बर १९७५ को पटना के तमाम कालेजो के छात्रो ने क्लास का बहिष्कार किया। बिहार के प्रमुख जिलो क महाविद्यालया म काय-क्रम हुआ। बहिष्कार का मुख्य कारण था कि अफवाह जोरो पर फली हुई थी कि ज० पी० की मत्यु हो गई।

२६ जनवरी, १६७६ को जगह जगह झंडोत्तोलन हुआ। झंझारपुर म मधुबनी जिला के कमठ साथी लालबहादुर सिंह के नेतत्व म जुलूस निकला। झंझारपुर मुख्य मंत्री, जगन्नाथ मिश्र का क्षेत्र है। उन लोगो की काफी पिटाई की गई एव उनकी गिरफ्तारी का एफ० आई० आर० मुख्य मंत्री के क्षेत्र से नहीं बल्कि दूसरे जगह मधेपुर से लिखा गया। एक बडी ग्रानक्पूण घटना हुई। उन गिरफ्तार आठ यक्तियो में एक नौजवान था। उसक पिता थानापुर अपने बेटे को देखन गए और ढाढस के लिए अपने बेटे की पीठ ठोकी। बस इतना पुलिस स देखा नही गया और बेट क साथ पिता को भी जेल भेज दिया गया। नौ महीन बाद बाप-बेटा छूटे। इन लोगो की जेल म काफी पिटाई की गई। बाद म मधुबनी जेल से भागलपुर जेल स्थानान्तरण कर दिया गया।

१२ माच को कक्षा बहिष्कार का कायक्रम था। १८ माच शहीद दिवस के रूप म मनाया जा रहा था। पटना के ए० एन० कालेज म मैं स्वय गया वग म जाकर बाल-बोलकर सारे क्लास का बहिष्कार कर-वाया। कुछ दूर तक नारे लगात हुए जत्थे के रूप में ले गए। सी० आर० पा० एव पुलिस के नौजवान आ गए। ला साथी कृष्णकुमार मिश्र उप केदार एव उमाशकरप्रसा गिरफ्तार कर लिए गए। नौ साथियों पर गिरफ्तारी का वारट निकाला गया।

रिया दी। दरभगा म समाजवादी नेता रामनन्दन मिश्रा के नतत्व मे ८० लोगो ने गिरफ्तारियां दी। इसके बाद लोगा का भय बहुत कम हो गया था। बहुत मे यक्ति सल क साथियो स शिकायत करत थ कि अब की बार पत्रिका अब तक नही दे गए। १५ अगस्त को धनबाद म सरकार की ओर स भडा फहराने की यवस्था की गई थी। पुलिस की सारी सतकता के बावजूद तिलश्वर कौशिक ने भण्डात्तोलन कर दिया। लोकनायक जयप्रकाश जिन्दाबाद एव तानाशाही विद्रोही नारे लगाए। उस बेहोशी तक मारा गया। पानी तक नही दिया गया। धनबाद जल म सेल म रखा गया बाद मे भागलपुर जल स्थाना तरण कर दिया गया।

४ नवम्बर को दमन विरोधी दिवस का कायक्रम था। ४ नवम्बर १९७५ को जे० पी० को लाठी मारते हुए चित्र खीचा गया था। उसी चित्र का पास्टर बनाया गया था जिस जगह जगह चिपकाया गया। ४ नवम्बर को जिस स्थान पर जे० पी० को लाठी प्रहार किया गया था उसी स्थान स सत्याग्रह का कायक्रम था। करीब ३ या चार बजे १८ साथियो न गिरफ्तारी दी।

६ स ७ नवम्बर तक फासिस्ट सम्मेलन के विरोध के लिए काय क्रम। पटना शहर म पुलिस को विशेष जमघट मानो कश युद्धस्थल। फासिस्ट विरोधी सम्मलन के लिए छात्र सघष समिति की तरफ स जगह जगह वाल पेंटिंग हाथ से लिखे पास्टर का यापक कायक्रम।

३ दिसम्बर को बी० एन० कालेज म कम्युनिस्टो द्वारा छात्रा पर हमला। पुलिस द्वारा लाठीचाज। बालमुकुन्द शर्मा सहित १८ व्यक्ति गिरफ्तार। कालज एरिया म काफी तनाव।

कम्युनिस्टो द्वारा किए गए प्रहार के विराध म साइस कालेज, इजिनीयरिंग कालज बी० एन० कालज के छात्रा द्वारा क्लास का बहिष्कार। बी० एन० कालज म लाठीचाज।

६ दिसम्बर १९७५ को पटना के तमाम कालेजो के छात्रो ने क्लास का बहिष्कार किया। बिहार के प्रमुख जिलो के महाविद्यालया म कायक्रम हुआ। बहिष्कार का मुख्य कारण था कि अफवाह जोरा पर फली हुई थी कि जे० पी० की मृत्यु हो गई।

मुवाया जा रहा था। कौश्रों से बचाव के लिए गट्टू वाले आंगन ने एक 'लकड़ी' में काला न्याऊज टांग दिया था। बस बारह बजे दिन म चारा तरफ स उसको पुलिस ने घेर लिया। मकान वाले आश्चर्य म पड गए तब पुलिस ने काला झण्डा फहराने की बात कही। उस घर वालो ने समझाया कि कौश्रा स बचाव के लिए एसा किया गया पर पुलिस नहीं मानी एव ब्लाऊज को उतरवा दिया तथा धमकी दी।

एक दूसरी घटना चान्मारी रोड छात्र सघष समिति के सक्रिय सदस्य, श्री श्यामप्रसाद के घर रात मे छापा पड़ा। वे किसी तरह भाग गए। पुलिस ने चारा तरफ खोज की। एक किरायदार का ताला तोडवा कर अंदर देखा। जब कही नहा मिला तो आगन के कुए में टाच मार कर दखा गया। दरोगा न कहा कुए मे तो नहीं लग रहा है मगर कुए का पानी क्यो काला है ? तब श्रीम जी की मा ने बताया कि काम म नहीं आने के कारण ऐसा है पर दरोगा मान ही नहा रहा था।

चादमारी रोड गदनीबाग आदि मुहल्लो म मौन की घडी का काय क्रम सफल रहा।

२० जुलाई का जे० पी० पटना लौट रहे थे। उनके स्वागत के लिए कायक्रम बनाना था। गाधी शांति प्रतिष्ठान म छ मुख्य लोगा की काय क्रम की रूप रेखा तय करने के लिए बठक थी। उसम रामविलास पासवान भी थे। हम लोग एक ही साथ रहते थे। गाधी शांति प्रतिष्ठान म पुलिस पहले ही आ गई थी हम लोगों को कुछ भी भनक नहीं लग सकी। ३ जुलाई को रामविलास पासवान के साथ गिरफ्तार होकर फुलवारी शरीफ जेल भेज दिए गए। जेल मे चार रोज के रिमाड पर पुलिस लेने आई। पर व अस्पताल मे भर्ती हो गए। किसी तरह एक महीना बाद बेल पर छूटे।

२० जुलाई को काफी बडी सख्या में गिरफ्तारिया हुइ। उसके १५ रोज पहले स ही लोग पकडे जाने लग। २० जुलाई को जेल म ही था। फिर भी सारी खबर मालूम होती रहती थी। जगह जगह भीड को हटाने के लिए लाठीचाज किया गया। मिनी बस टैम्पू सारे यातायात बद कर दिए गए।

कि गिरफ्तार हो जाऊंगा। सारे लोग मना भी कर रहे थे मगर व आडिग थ। अन्दर दो आदमी निश्चिन्ततापूर्वक सतर्कता से बैठ रहे। सी० आई० डी० की भरमार थी। गर्मी के दिन थे इसलिए तौलिया मुह मे लपेट हुए थ। जसे ही इंदिरा गांधी आई और बहना वाली कम उम्र बाद तीन मिनट तक उन्हे शांत रह जाना पड़ा। हम लोगों ने इन्कलाब जिन्दाबाद फासिस्ट इंदिरा वापस जाओ, लोकनायक जय प्रकाश जिन्दाबाद सम्पूर्ण क्रांति जिन्दाबाद अमर शहीद जिन्दाबाद के नारे लगाए एवं पर्चे उछालना शुरू कर दिया। भगदड़ हुई बस मैं भी भीड़ से निकल गया। सारे लोग निकलने शुरू हो गए बस महज २० या २२ मिनट में इन्दिरा गांधी को भाषण समाप्त कर देना पड़ा। जनता लौट रही थी। जगह जगह लोकनायक जयप्रकाश का नारा गूंजने लगा। उस रोज सारे ऑफिस कालेज, स्कूल बन्द कर दिए गए। छ सौ बसें बाहर से लोगों को लाने के लिए था। बसें कितनी खाली थीं दो-तीन आदमी ही उसके अंदर होते थे।

२६ जून को काला दिवस मनाने का कार्यक्रम छात्र संघर्ष समिति ने तय किया था। पूरे बिहार स्तर पर कार्यक्रम बनाने के लिए समन्वय समिति थी जिसमे प्रत्येक पार्टी से दो सर्वोदय से दो एवं छात्र संघर्ष समिति से नरेन्द्रकुमार सिंह अब्दुल बारी सिद्दिकी, मनोजकुमार सिंह, अख्तर हुसन, सुबोध कान्त सहाय ब्रह्मदेव सिंह थे।

२६ जून का कार्यक्रम पटना में अभूतपूर्व हुआ। तानाशाही विरोधी नारे सारे शहर में रंग दिए गए। विशेषत उन जगहों में जहां अधिक सुरक्षा की व्यवस्था थी, जैसे विधायकों के निवास स्थान, सचिवालय, स्टेशन एरिया एवं अन्य सार्वजनिक स्थान। पुलिस एक तरफ मिटाती थी तो दूसरी ओर लिखा जाता था। बडी सावधानी से यह काम किया जाता था। २६ जून को जगह जगह काला झंडा फहराया गया। गांधी मैदान मे भी काला झंडा फहराया गया। इमरजेंसी में पटना नगर के संघर्ष वाहिनी संयोजक हरिनारायण चौधरी दूसरी बार गिरफ्तार कर लिए गए। चौधरी जिस मुहल्ले के है (चांदमारी रोड) वहां दो बडी दिलचस्प घटनाएं घटी। २६ जून को चांदमारी रोड के दोमहले मकान पर गेंहू

१५ अगस्त को जगह जगह छात्र सघर्ष समिति के लोगो ने झडा फहराया।

२६ अगस्त को बिहार, उत्तर प्रदेश एव कुछ अन्य जगहो के प्रमुख साथियो की बठक श्री कपूरी ठाकुर ने बुलाई। बडी सतकतापूवक बठक के स्थान डालमिया अतिथिशाला मे पहुचा गया। वहा रातभर बहस होती रही, विशेषत बिहार सबधी बातें हुइ। पार्टी के एका पर भी विभिन्न दलो पर दबाव डालने की बात छात्र सघर्ष समिति ने बनाई। वही २ अक्टूबर से १२ अक्टूबर तक का कायक्रम तय हुआ। उसी कायक्रम को बिहार की समन्वय समिति द्वारा पारित कर बिहार म सफल बनाया गया। बनारस म बिहार के मुख्य साथियो म थे डा० विनयन, सच्चिदानद सिंह त्यागपत्रित विधायक रामअवधेश सिंह मुनीलाल राय आदि एव छात्र सघर्ष समिति के नरेन्द्रकुमार सिंह अब्दुल बारी सिद्दीकी विजय सिंह (जमशेदपुर) देवेन्द्रकुमार (मधुबनी) अशोककुमार सिंह।

२ अक्टूबर का कायक्रम काफी सफल रहा। सहरसा हाजीपुर, मगेर पटना म गिरफ्तारी हुई। डा० विनयन जयप्रकाश जयती से लौटते समय गिरफ्तार कर लिए गए।

४ नवम्बर १९७६ को काला दिवस के रूप म मनाया गया।

पटना नगर के सघर्ष वाहिनी के सजोजक की आपातकाल मे तीसरी बार गिरफ्तारी हुई। उन्हे पुलिस ने चोर चोर चिल्लाकर बडी मार मारी। आठ जगह सिर मे टाके आए।

३१ दिसम्बर को जे० पी० पुन बम्बई से वापस आ रहे थे। पुन जे० पी० के स्वागत के लिए खड नौजवानो पर पुलिस का लाठीचाज।

भूमिगत आन्दोलन का सचालन मुख्यत दो स्थानो से होता था। पहला प्रणव चटर्जी एडवोकेट साहब का मकान दूसरा ललित बाबू एडवोकेट का मकान, जो 'ह्वाइट हाउस' के नाम से जाने जाते थे इन दो स्थानो पर महत्त्वपूर्ण मुख्य लोगो की बठक होती थी। कुछ दिन भुसल्ले-पुर एव कृष्णनगर बोरिंग रोड से भी काय हुआ था परन्तु इन जगहो पर पुलिस का छापा पड जाने पर छोड दिया गया।

पारस होटल से भी संचालन का काम हुआ है। इस होटल में कुछ भूमिगत लोग बाहर के आते थे उन्हें ठहराने की व्यवस्था थी।

संघर्ष की एक धारा और बह रही थी बिहार में जिसका नेतृत्व कर रहे थे कर्पूरी ठाकुर। २ अक्टूबर को कलकत्ता में महात्मा गांधी की मूर्ति के सामने चर्खा चलाने वालों और रामधुन गाने वालों को गिरफ्तार कर लिया गया। इसके साक्षी (गवाह) बंगाल के भूतपूर्व मुख्य मंत्री अठहत्तर वर्षीय श्री प्रफुल्लचन्द्र सेन हैं। दिल्ली में महात्मा गांधी के समाधिस्थल राजघाट पर प्रार्थना सभा नहीं करने दी गई और श्री हरिविष्णु कामथ समेत दर्जनों लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया। इसके साक्षी वयोवृद्ध गांधीवादी नेता आचार्य कृपलानी और डा० सुशीला नायर हैं। प्रार्थना सभा और आम सभा नहीं करने दी जाए, सामूहिक रामधुन नहीं गाने दिया जाए, सामूहिक चर्खा नहीं चलाने दिया जाए, जुलूस और प्रदर्शन नहीं निकलने दिए जाएं, अखबारों की आजादी छीन ली जाए, मौलिक अधिकार और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को कुचल दिया जाए, पार्लमेंट और अदालतों को बधिया कर दिया जाए, संविधान के अनुसार निश्चित समय पर चुनाव कराने से इनकार किया जाए, स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव का नामोनिशान मिटा दिया जाए, असत्य, आतंक और भय का साम्राज्य स्थापित कर दिया जाए और फिर भी कहा जाए कि देश में जनतंत्र है तो उससे बढ़कर फासिस्टी झूठ और क्या हो सकता है? एक तरफ तो सन्त विनोबा का आशीर्वाद लेने के लिए उनकी खुशामद पर खुशामद की जाए और दूसरी ओर महात्मा गांधी के जन्म दिवस के अवसर पर कलकत्ता में उनकी मूर्ति के सामने बैठे-बैठे सामूहिक रामधुन करने वाले और चर्खा चलाने वाले गांधीवादियों को गिरफ्तार कर लिया जाए। क्या इससे भी बढ़कर बुरे दिन, काले दिन और दुर्भाग्य के दिन भारत के लिए कुछ और हो सकते हैं?

अतः इस तानाशाही के खिलाफ कुछ न कुछ करना है

बहुत कुछ करना है, विरोध और प्रतिरोध तक ही नही विद्रोह तक करना है। जब किसी मुल्क म डिक्टेटरी आ जाए तो वहा की जनता का पूरा हक हासिल है कि वह हर किसी तरीके से डिक्टेटरी को मिटाने की कोशिश करे लडाई लडे। सबसे पहले यह जरूरी है कि हर गाव देहात शहर बाजार टोला कस्बा मुहल्ला, मकान म झूठ की क्षय भय की क्षय, तानाशाही की क्षय और सत्य की जय अभय की जय और जनतत्र की जय को कहन वाले असख्य लोग खडे हा तयार हा। श्रीमती इन्दिरा गाधी पूरी कौम को बधिया कर देना चाहती है राष्ट्र को नपुसक बना देना चाहती हैं जबकि महात्मा गाधी सपूण राष्ट का, एक एक व्यक्ति को निभय और नि शक बनाना चाहत थे। इन्दिरा राष्ट्रघाती हैं। परशु-राम मात्र मातृहता थे इदिरा राष्ट हन्ता, जनतत्र हन्ता और सत्य हन्ता हैं। अत अभय गुण, निभय गुण आज सबस ज्यादा जरूरी है।

सम्पूण मध्य देश (हिन्दी क्षेत्र)

सघषकर्ताओ के वही तीनो वग सम्पूण मध्य देश अर्थात हिन्दी क्षत्र म सक्रिय थे। बिहार और उत्तर प्रदेश के अलावा मध्य प्रदश राजस्थान हरियाणा दिल्ली और हिमाचल प्रदेश मे प्रतिपक्ष के सभी दलो क पुराने-नय लोग और उनस भी ज्यादा तादाद मे निदलीय युवा छात्रो की सघष चेतना इस काल की गौरव गाथा है।

मध्य प्रदश म जन सघष के पीछे कई शक्तिया आ मिली थी जस समाजवादी दल के खेतिहर मजदूर सघ की शक्ति जिसके नेता थे पुरषोत्तम कौशिक। छत्तीसगढ के सातों जिलो मे यह शक्ति सरकार की लेवी के विरोध म और किसान मजदूर की समस्याओ क लिए सघपरत थी। दूसरी शक्ति थी समूच प्रदेश मे प्रतिपक्ष को शक्ति जिसके प्रति निधि स्वर थे लाडली मोहन निगम, रमाशकर। तीसरी शक्ति युवा छात्र की थी जिसके प्रतिनिधि थ शरद यादव विद्याभूषण ठाकुर अश्विनी दुबे प्रकाश शुक्ला और रघु ठाकुर। चौथी शक्ति थी जनसघ की जिसके प्रतिनिधि थ बजलाल वर्मा और हुकुमचन्द कछवाहा।

सघष शक्ति की ठीक यही स्थिति राजस्थान, हरियाणा, पजाब और

हिमाचल क्षेत्रों में रही। भौतिक बौद्धिक और नतिक इन तीनों स्तरो पर लडा गया यह सघप स्वात`योत्तर भारत की महान उपलब्धि है।

न जान कब से जो सोया था जो भयभीत और आतकित था जो सघप स भागकर नियति और भाग्य फल के लोक म चला गया था जो राज्यबल के सामने आत्मबल का निबल मान चुका था, वह इस अपूव लोक-सघप म जगा।

रात बिल्कुल अधेरी और घनघोर थी पर जब इस जन मानस ने अगडाई ली तो वह रात देखत देखते ही बीत गई।

रात बीती

१८ जनवरी १९७७ को श्रीमती गांधी ने लोकसभा के चुनाव की घोषणा की और विपक्षी दल के नेता जेलो से रिहा होने लगे।

दर असल वह चुनाव नही, जनता के भाग्य का फैसला था। आपात स्थिति मे *उस भय और दमन के बाद अचानक वह चुनाव।* एक ओर साधन सम्पन्न, अतुल बलशाली कांग्रेस, दूसरी ओर साधनहीन शक्तिहीन, घायल टूटे फूट विपक्षी दल। पर इस सचाई के भीतर जो एक अदृश्य सत्य पनपा था १९ महीनो के कारावास मे—एकता का सत्य और उस सत्य को संगठनात्मक स्वरूप दिया था जे० पी० ने बबई के राजा बाबू के घर रहकर इंडियन एक्सप्रेस के गेस्ट हाउस मे जीकर इसका पता इन्दिरा सत्ता को उतना नही था। सत्ता को इस सचाई का भी तनिक अनुमान नही था कि इस बीच भारतीय जन मानस मे कितना क्या कुछ बदल गया है। सारी सचाई, सारे सूत्र, सारी लोक शक्ति जैसे जे० पी० के हाथ मे थी।

चुनाव घोषित होते ही सब कुछ सक्रिय होने लगा। सारे प्रतिपक्ष और उनके नेताओ की आँखें केवल जयप्रकाश पर टिक गई। पटना से उन्हे दिल्ली बुलाने के लिए लोग दौडने लगे। फोन तार लोग सब।

चुनाव की घोषणा पर सबसे महत्त्वपूर्ण प्रतिक्रिया अगले दिन आई। १९ जनवरी को लोकनायक जयप्रकाश ने चुनाव की घोषणा का स्वागत करते हुए आशा की कि नई स्थिति मे विभिन्न विरोधी दल अपनी एक सगठित पार्टी बनाकर चुनाव लडेंगे। उन्होने कहा—अगर विरोधी दल अपने को विलीन कर एक दल बनाते हैं तो मैं उस दल का साथ दूगा अन्यथा मैं चुनाव प्रचार से अलग रहूगा।

जे० पी० के इस दो टूक बयान और इसमे छिपे एक श्रेष्ठ नैतिक दबाव से जैसे सब कुछ बिखरा हुआ एक हो गया। २३ जनवरी को

जनता पार्टी के निर्माण की घोषणा हो गई।

जे० पी० के परमप्रिय चन्द्रशेखर दिल्ली से पटना गए और जे० पी० को अपने साथ २५ जनवरी को दिल्ली ले आए। उस शाम गांधी शांति प्रतिष्ठान में जे० पी० को देखने और मिलने जनता पार्टी के समस्त नेता आए। जे० पी० बहुत कमजोर थे पर बहुत ही आश्वस्त थे। जनता पार्टी के वही तो जनक थे। २६ की सुबह जे० पी० फिर पटना चले गए। उस दिन बुधवार उनके डायलासिस का दिन था।

फिर आए ५ फरवरी को जे० पी० दिल्ली। ६ फरवरी को रामलीला ग्राउंड में जनता पार्टी की पहली जनसभा के मंच पर उनके दर्शनों के लिए जैसे सारी दिल्ली उमड़ पड़ी थी। वह सभा अभूतपूर्व थी। करीब दस लाख लोगों का समागम था। दुनिया भर के इतिहास में किसी राजनीतिक सभा में इतना बड़ा जन समूह आया हो ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। जे० पी० ने भरे कंठ में कहा—२५ जून १९७५ को इसी समय यहीं से मैंने आपको कुछ कहा था। आज करीब बीस महीने बाद फिर इस दशा में आपके सामने आया हूं। जनता निर्भय होकर अपने मतदान के अधिकार का इस्तेमाल करे। यह अभूतपूर्व चुनाव किसी पार्टी के भाग्य का फैसला नहीं करने जा रहा है बल्कि प्रजातंत्र और तानाशाही के बीच जनता के भाग्य का फैसला है।

१४ मार्च को जे० पी० ने सच्चे लोकतंत्र के उदय को सामने रख एक महत्त्वपूर्ण बयान दिया—'चुनाव की तिथि जैसे जैसे निकट आती जा रही है चुनाव सभाओं और प्रचार अभियानों में अशांति की खबरें सुनता हूं। दक्षिण कलकत्ता संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से जनता पार्टी के उम्मीदवार प्रोफेसर दिलीप चक्रवर्ती पर हुए घातक हमले की खबर आप लोगों ने भी अखबारों में पढ़ी होगी। मैं स्वयं तो इतना स्वस्थ नहीं हूं कि देश के कोने-कोने में घूमकर इन सबकी तहकीकात कर सकूं। देश के सामाजिक जीवन में घुमड़ने वाली अशांति की आशंका को शांत करने के लिए एक शांति सैनिक की भूमिका में मैं जीवन भर घूमता ही रहा हूं। आज भी स्वास्थ्य की लाचारी न होती तो मैं जनता के बीच होता।

पिछले १९ महीनों में जन भावना को जिस क्रूरता

वह यत्र-तत्र फूट पडती है तो इसे अस्वाभाविक नहीं कहा जा सकता है। फिर भी रेडियो अखबारो म अशांति की ऐसी खबरें पढकर मैं चिंतित हुआ हू। मुझे नहीं मालूम यह सब कौन लोग कर रहे हैं और किसके इशारे पर ? आज के माहौल म हर दल एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप करता ही है। इसलिए मैं आम नागरिको से चाहे व किसी दल के समथक हो और अपने युवको स गभीरतापूवक कुछ बातें कहना चाहता हू।

यह चुनाव कितन नाजुक समय पर हो रहा है और कितना बडा निणय करन हम जा रहे हैं यह मैं बार बार समझाता रहा हू। इस बार हमारी छोटी-सी चूक भी वर्षों क लिए देश का अधकार के गत म धकेल देगी। इसकी गभीरता हम समझनी चाहिए और उसीके अनुरूप बरतना चाहिए। दुनिया को यह देखन का मौका दीजिए कि अपने भाग्य के निणय क वक्त हम भारतवासी कितना सजीदा और दायित्वपूण यवहार करत है। जनता पार्टी के सभी समथको कायकर्ताओ को मेरा निर्देश है कि काग्रेस के प्रति आपका आक्रोश कोरी नारेबाजी म जन शिक्षण के ठोस काम म प्रकट होना चाहिए। कोरी नारेबाजी और प्रचार स जनता को गुमराह नहीं किया जा सकता है। सामान्य नागरिको की विशिष्ट प्रतिभा पर भरोसा रखिए और उनके बीच घूमकर अपनी बातें शालीनतापूवक समझाइए अपन कायक्रम बतलाए। काग्रेस और दूसरे विरोधी पक्षो की सभाओ में जाकर जो अपनी भावनाओ क आवेग रोक न सकत हो वे कृपा कर उनकी सभाओ तथा दूसरे कायक्रमो म जाए ही नहीं। शाति मय प्रतिकार का यह भी एक तरीका है।

हिंसा या हुल्लडबाजी की छोटी स छोटी वारदात हमारा पक्ष कमजोर करेगी लोकतत्र का पक्ष कमजोर करेगी। सबको अपनी बात कहने अपना कायक्रम समझान का अधिकार लोकतत्र की आत्मा है। काग्रस ने उसी आत्मा को अपनी मनमानी म कुचल ने की कोशिश की जिसका फल वे आज भोग रहे हैं। हम इसके प्रति सचेत रहना है और छोटी से छोटी जगहो पर भी विरोध पक्ष को अपनी बात कहने का पूरा अधिकार देना है। मन का आक्रोश दबा लीजिए, उनकी गलत बयानी

सुन लीजिए और वोट गिराते वक्त अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कीजिए। आपका गिराया एक एक वोट दर असल आपकी प्रतिक्रिया का ही द्योतक होता है।

अब तो चुनाव के बाद ही आप सबसे मिलना और कहना हो सकेगा। मैं विश्वास करता हूं कि सच्चे लोकतंत्र के प्रति अपनी वफादारी का प्रमाण देने में हम कच्चे साबित नहीं होंगे।'

कलकत्ता, दिल्ली, पंजाब, राजस्थान, गुजरात का चुनाव दौरा अपने उस घायल शरीर से करते हुए और उतनी अस्वस्थता में इतनी विशाल सभाओं में बोलते हुए जे० पी० अन्तत: बंबई पहुंचकर पूर्णत: अस्वस्थ हो गए। उनकी बीमारी के समाचार से सारा देश थरथरा गया। बंबई के जसलोक अस्पताल में उनका आपरेशन हुआ। जसलोक में पड़े जे० पी० ने ९ मार्च को बिहार के मतदाताओं के बहाने संपूर्ण देश के भाई बहनों से अपील की— मित्रो, मुझे बड़ा दुःख है कि ठीक समय पर मैं बीमार हो गया और इस समय बंबई के जसलोक अस्पताल में पड़ा हूं। आशा है इस बेबसी के लिए मुझे आप क्षमा करेंगे और रुग्ण शय्या से लिखे हुए इस संदेश को स्वीकार करेंगे।

यह मैं कई बार कह चुका हूं कि लोक सभा के लिए आने वाले चुनाव देश के भाग्य के लिए निर्णायक होने वाले हैं। चुनाव लोकशाही एवं तानाशाही के बीच है। इलाहाबाद हाई कोर्ट के फैसले के बाद इन्दिराजी ने जो अपना रूप प्रकट किया, तानाशाह बनीं और सैकड़ों हजार निरपराध लोगों को कैद में डाल दिया जिनमें से अब भी कुछ लोग जेलों में ही हैं इमरजेंसी की घोषणा की जो अब भी चालू है, प्रेस पर ताला लगा दिया—यह सबको स्मरण होगा। इसलिए मेरी आपसे सानुरोध अपील है कि फिर से इन्दिराजी का शासन न आने दीजिए। अपना वोट जनता पार्टी को दीजिए और लोकशाही को विजयी बनाइए।'

पूरी आपात स्थिति के दौरान लोकनायक जयप्रकाश के विरुद्ध एक तरफा धुआंधार प्रचार हुआ, पर आपात स्थिति में ढील आते ही यह स्पष्ट हो गया कि इस सारे प्रचार से लोकनायक की प्रतिमा और अपकर प्रकाशमान हुई है। वह देश की नैतिक चेतना के सर्वमान्य

वह यत्र-तत्र फूट पडती है तो इसे अस्वाभाविक नहीं कहा जा सकता है। फिर भी रेडियो अखबारो म अशांति की ऐसी खबरें पढकर मैं चिंतित हुआ हू । मुझ नही मालूम यह सब कौन लोग कर रह हैं और किसके इशारे पर ? आज के माहौल म हर दल एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप करता ही है। इसलिए मैं आम नागरिकों से चाह व किसी दल क समथक हो और अपने युवकों स गभीरतापूवक कुछ बातें कहना चाहता हू ।

यह चुनाव कितन नाजुक समय पर हो रहा है और कितना बडा निणय करन हम जा रह है यह मैं बार बार समझाता रहा हू । इस बार हमारी छोटी-सी चूक भी वर्षों क लिए दश को अधकार के गत म धकेल दगी । इसकी गभीरता हम समझनी चाहिए और उसीके अनुरूप बरतना चाहिए । दुनिया को यह देखन का मौका दीजिए कि अपने भाग्य के निणय के वक्त हम भारतवासी कितना सजीदा और दायित्वपूण यवहार करत है । जनता पार्टी के सभी समथकों कायकर्ताओं को मरा निर्देश है कि काग्रस के प्रति आपका आक्रोश कोरी नारेबाजी म जन शिक्षण के ठोस काम म प्रकट होना चाहिए। कोरी नारेबाजी और प्रचार स जनता को गुमराह नही किया जा सकता है। सामान्य नागरिको की विशिष्ट प्रतिभा पर भरोसा रखिए और उनके बीच घूमकर अपनी बातें शालीनतापूवक समझाइए अपने कायक्रम बतलाए । काग्रेस और दूसरे विरोधी पक्षों की सभाओं में जाकर जो अपनी भावनाओं के आवेग रोक न सकते हो व कृपा कर उनकी सभाओं तथा दूसरे कायक्रमों म जाए ही नही । शाति मय प्रतिकार का यह भी एक तरीका है ।

हिंसा या हुल्लडबाजी की छोटी से छोटी वारदात हमारा पक्ष कमजोर करेगी लोकतत्र का पक्ष कमजोर करेगी । सबको अपनी बात कहन अपना कायक्रम समझाने का अधिकार लोकतत्र की आत्मा है। काग्रस न उसी आत्मा को अपनी मनमानी म कुचल ने की कोशिश की जिसका फल वे आज भोग रहे है । हमे इसके प्रति सचेत रहना है और छोटी स छोटी जगह पर भी विरोध पक्ष को अपनी बात कहन का पूरा अधिकार दना है । मन का आक्रोश दबा लीजिए, उनकी गलत बयानी

सुन लीजिए और वोट गिराते वक्त अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कीजिए। आपका गिराया एक एक वोट दर असल आपकी प्रतिक्रिया का ही द्योतक तो है।

"अब तो चुनाव के बाद ही आप सबसे मिलना और कहना हो सकेगा। मैं विश्वास करता हूं कि सच्चे लोकतंत्र के प्रति अपनी वफादारी का प्रमाण देने में हम कच्चे साबित नहीं होंगे।"

कलकत्ता दिल्ली पंजाब, राजस्थान, गुजरात का चुनाव दौरा अपने उस घायल शरीर से करते हुए और उतनी अस्वस्थता में इतनी विशाल सभाओं में बोलते हुए जे० पी० अंतत बंबई पहुंचकर पूर्णत अस्वस्थ हो गए। उनकी बीमारी के समाचार से सारा देश थरथरा गया। बंबई के जसलोक अस्पताल में उनका आपरेशन हुआ। जसलोक में पड़े जे० पी० ने ३ मार्च को बिहार के मतदाताओं के बहाने संपूर्ण देश के भाई बहनों से अपील की— *मित्रो मुझे बड़ा दुख है कि ठीक समय पर मैं बीमार* हो गया और इस समय बंबई के जसलोक अस्पताल में पड़ा हूं। आशा है इस बदनसीबी के लिए मुझे आप क्षमा करेंगे और रुग्ण शय्या से लिखे हुए इस संदेश को स्वीकार करेंगे।

यह मैं कई बार कह चुका हूं कि लोक सभा के लिए आने वाले चुनाव देश के भाग्य के लिए निर्णायक होने वाले हैं। चुनाव लोकशाही एवं तानाशाही के बीच है। इलाहाबाद हाईकोर्ट के फैसले के बाद इन्दिराजी ने जो अपना रूप प्रकट किया तानाशाह बनीं और सवा लाख निरपराध लोगों को कैद में डाल दिया, जिनमें से अब भी कुछ लोग जेलों में ही हैं, इमरजेंसी की घोषणा की जो अब भी चालू है प्रेस पर ताला लगा दिया—यह सबको स्मरण होगा। इसलिए मेरी आपसे सानुरोध अपील है कि फिर से इंदिराजी का शासन में न आने दीजिए। अपना वोट जनता पार्टी को दीजिए और लोकशाही को विजयी बनाइए।

पूरी आपात स्थिति के दौरान लोकनायक जयप्रकाश के विरुद्ध एक तरफा धुआंधार प्रचार हुआ, पर आपात स्थिति में ढील आते ही यह स्पष्ट हो गया कि इस सारे प्रचार से लोकनायक की प्रतिमा और उभरकर प्रकाशमान हुई है। यह देश की नैतिक चेतना के

आज महात्मा गांधी के समान सम्मानित युगपुरुष के रूप म देश की राजनीति पर छाए रहे हैं। जनता पार्टी के जिस अकेले नारे को लोग सबस अधिक उमग और नतिक पूण उत्साह स उत्तर दत थ वह था—अधकार म एक प्रकाश जयप्रकाश ! जयप्रकाश !!

सचमुच अधकार क खिलाफ प्रकाश की जीत हुई। समूच उत्तर भारत मे चमत्कार हुआ। उत्तर प्रदेश बिहार मध्यप्रदेश पजाब और राजस्थान म प्रकाश की प्रचड आधी के आगे जाति धम, सम्प्रदाय दल, असत्य कुशक्ति क किल ढह गए।

चुनाव नतीजो के बाद जयप्रकाश न गांधी के अत्योदय के आदश की याद दिलाई। इसी माग पर चलने के लक्ष्य स लोकनायक न २४ माच १९७७ की सुबह जनता पार्टी काग्रेस फार डमोक्रसी और अकाली दल के नवनिर्वाचित ससद सदस्यो स महात्मा गांधी की समाधि (राजघाट दिल्ली) पर यह सकल्प लिया कि वे गांधीजी द्वारा शुरू किए गए काम को पूरा करेंगे।

जे० पी० क सपनो का भारत उस दिन उग रहा था लोक मानस के क्षितिज पर जहा स लोकनायक की प्रत्यक सास म यह सुनाई पड रहा था—मेर सपनो का भारत एक ऐसा समुदाय है जिसम हरेक व्यक्ति हरेक साधन निबल की सवा के लिए समर्पित है—अत्योदय तथा निबल और असहाय की बहतरी का समर्पित समुदाय।

वह ऐसा समुदाय है जिसम लोगो की मानवता की कद्र है—वह समुदाय जिसम हरेक व्यक्ति का अपनी अतरात्मा के अनुसार काय करने का अधिकार मान्य है और सब उसका सम्मान करत हैं।

वह एसा समुदाय है जिसमे अलग अलग विचारो पर शातिपूण ढग स तक वितक होता है। जिसम मतभेद सभ्य तरीक स तय किए जात है।

वह ऐसा समुदाय है जिसम सबके पास काम है—ऐसा काम जिसम उन्हे सतोष भी होता है और सुदर जीवन-यापन भी। वह ऐसा समुदाय है जिसम हरेक का अपनी निजी रचनात्मक क्षमता को विकसित करन की गुजाइश है जिसमे हरक दस्तकार को, फक्टरी या फाम जहा भी वह काम करता है उसके स्वामित्व और प्रबध म भागीदारी और दखल है।

वह ऐसा समुदाय है जिसमे सबको बराबर के अवसर प्राप्त हैं—वह समुदाय जिसमे शक्तिशाली बहुसख्यक स्वय ही निबल वग अल्पसंख्यकों की बाधाओ को समझते हैं और उनको तरजीही सुविधाए देने के लिए कोई कोर-कसर नही रखते, जिससे उनकी एतिहासिक बाधाए दूर हो।

वह एसा समुदाय है जिसमे हरेक साधन जनता की आवश्यकताओ की पूर्ति म लगा है—उन्ह पर्याप्त भोजन कपडा मकान और पीने का पानी मुहैया करने म।

मेरे सपनो का भारत एसा समुदाय है जिसमे हरेक नागरिक समुदाय के काय-व्यापारो म हिस्सा लेता है जिसमे हरेक नागरिक अपने निजी स्वार्थों से पर मामलो का समझता है और उनम हिस्सा लेता है। वह ऐसा समुदाय है जिसमे नागरिक—खास तौर से निबल—सुधार लागू करने और शासको पर निगाह रखने क लिए सगठित और जागरूक हैं।

वह एसा समुदाय है जिसम अधिकारी और निर्वाचित प्रतिनिधि जनता के सेवक हैं, जिसम जनता को उनके पथभ्रष्ट होने पर, उन्हें दडित करने का अधिकार और अवसर है जिसम सत्ता को सुविधा नही माना जाता, बल्कि जनता द्वारा सौंपा गया भरोसा माना जाता है।

सक्षेप म मेरे मन मे एक स्वतत्र प्रगतिशील और गाधीवादी भारत की तसवीर है।

चुनाव खत्म हो जाने पर, मैं स्वय ही सारे वायदो का पूरा करवाने क लिए, हर स्तर पर, जनता समितियो को गठित करन क लिए अभियान शुरु करूगा।

इसे भूलना नही

गाधी के सामने बहुत-स लोगों ने कई बार कम और सेवा की शपथ ली है। गाधी को वचन देन का मतलब है—त्याग और तपस्या। केवल सत्य नहीं उतनी ही अहिसा। केवल अहिंसा नहीं उतना

पर गाधी का यह सत्य अपना था। व्यक्ति, हर

सत्य का रक्षक प्रतीत नहीं हो

वतमान समय की ही पहचान और समय के सत्य का परिचय कराते हुए चुने सांसदों के समक्ष जयप्रकाश ने कहा—'सत्ता की कुर्सी बहुत खतरनाक कुर्सी होती है।

"पिछली हुकूमत के खिलाफ सबसे बडा चाज भ्रष्टाचार का था, भ्रष्टाचार शासन से राजनीति से दूर हो इसके लिए कुछ निश्चित सुझाव रखे गए थे, किन्तु प्रधान मंत्री ने उनके साथियों ने उसके ऊपर ध्यान नहीं दिया। मैं समझता हूं कि आगे जो जनता पार्टी की सरकार होगी उसका पहला काम होगा कि राजनीति से, शासन से जो भ्रष्टाचार है उसे दूर करे।

जनता ने आपको सेवा के लिए देश की सेवा के लिए भेजा है। सत्ता की कुर्सी बहुत खतरनाक कुर्सी होती है, इसलिए आवश्यक है कि सत्ता के ऊपर अंकुश रखने वाला एक संस्थान हो जिसके पास आम नागरिक, राजनीतिक पार्टी एवं जनता भी जा सके और उसके जो सुझाव होंगे, उसे सरकार मान्य करे। यही 'सेंट्रल इशू (मुख्य मुद्दा) था। आपकी जीत इसी पृष्ठभूमि में हुई है इसको भूलना नहीं है।

"संपूर्ण क्रांति की बात कई नेताओं ने की है। देश की जनता ने इसको स्वीकार किया है कि आमूल परिवर्तन आवश्यक है और तभी हमारे सपनों का समाज बनेगा। यह काम निर्ममता से करना है। जो बुरा है उसको हटाना होगा और जो अच्छा है उसे ही रखना होगा। यह बुनियादी परिवर्तन होगा। हर दिशा में यह काम करना है।

' यह संपूर्ण क्रांति का श्रीगणेश हुआ है। आपको इसकी मशाल लेकर चलना है। केवल टिपकारी करना नहीं है बल्कि बुनियादी परिवर्तन करना है।'

किसी भी ज्योतिषी ने, विद्वान ने, राजनेता ने यह नहीं सोचा था कि बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे विराट हिन्दी राज्यों में कांग्रेस को एक सीट भी न मिल सकेगी। कांग्रेसी राज के खिलाफ यह किसी क्रोध की अभिव्यक्ति थी या उसकी कोई ऐसी चेतना-शक्ति थी या उसका कोई विवेकपूर्ण संकल्प था, यह बुद्धि और तर्क से नहीं जाना जा सकता। यह समझा जा सकता है, भारत के किसी सहज साधारण व्यक्ति के जीवन

द्वारा उसकी समूची भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में। भारत की जनता नेताओं से बहुत आगे है,' चुनाव परिणाम पर राजनारायण की यह बात इस प्रसंग में याद रखने लायक है।

यह भी याद रखना होगा कि संपूर्ण हिन्दी क्षेत्र, पंजाब और दिल्ली में विपक्षी दल के ही सारे शक्तिशाली व्यक्ति सत्ताधारी हुए हैं, नतीजा यह होगा कि इस देश को लेकर विपक्ष की ओर से आवाज उठाने वाला अब कौन होगा लोकसभा में ?

यह भी याद रखना होगा कि कांग्रेस दल गत तीस वर्षों से सत्ता की शक्ति से चलता रहा है। कांग्रेस अपने नैतिक और राजनीतिक शक्ति के आधार पर स्वतंत्र प्रतिपक्ष की भूमिका क्या अदा कर सकेगी ? चुनाव में हर मतदाता ने जनता पार्टी या उसकी सहयोगी पार्टी को यही सोचकर मत दिया कि हम एक मजबूत स्वतंत्र विरोधी दल का निर्माण कर रहे हैं। पर उल्टे क्या यह नहीं हुआ कि इस प्रकार विरोधी दल की भूमिका ही समाप्त होने को है ?

इसे भी नहीं भूलना है कि भारत की जनता जैसी भी हो जनतंत्र में आस्था रखती है। उसे उसका ही जनतंत्र मिले, पश्चिम का नहीं। पर अपना, इस मिट्टी से उपजा हुआ अपना भारतीय जनतंत्र अभी कहां है ?

इस माटी में संकल्प और आस्था की कमी नहीं है। जे० पी० ने इस माटी को हल से जोतकर तैयार किया है। अब हलधर किसान को देखना है, वह कैसा बीज डालता है इस खेत में ?

इतना तो स्पष्ट हो गया है कि राजमहलों से निकलकर राजनीति और सत्ता की लड़ाई अब सड़कों पर आ गई है। जनता देख रही है भूली भाला से तभी तो कहा था—जाओ जस व्यक्ति को—हे ! बंद करो यह नाटक, सीधे से जाकर कुर्सी संभालो हां नहीं तो !

श्री जगजीवन राम और हेमवती नंदन बहुगुणा को डांटा था है, खबरदार, झगड़ा मत करो।'

—तुम्हें पता नहीं जनतांत्रिक मूल्यों की यहां किस तरह हत्या की गई है ?

—पता भी है क्या है जनतंत्र ?

—क्या ?

—हम देख रहे हैं चुपचाप काम करो अपना।

—अपना ?

—हा, जो हमने काम दिया है तुम्हें। मुह क्या देख रहे हो ? ता कान खोलकर सुन लो और गाठ बाध लो, फिर नही कहने आऊगा।

" इस बात की समावना भी रहेगी जब जनशक्ति और राज्यशक्ति का परस्पर विरोध हो और मुरार जी भाई को उसका सामना करना पडे। ऐसी कोई समावना ता नही दीखती है, पर ऐसा हो तो मोरार जी को स्वीकार करना होगा कि जो शाति की शक्ति है, वह जनता की शक्ति है। विरोध की स्थिति म मेरी अपेक्षा है कि मोरार जी भाई विनम्र सेवक की तरह पश आए इन्दिराजी की तरह का व्यवहार न हो। इन्दिरा जी न जनता माच को ठुकरा दिया, जो पीपुल्स चाटर बनाया गया था और स्पीकर एव राज्यसभा के सभापति को जिस पश किया गया था, सत्ता ने उसकी तरफ कोई ध्यान नही दिया। उन्होने सोचा कि यह उनको गद्दी से उतारने की साजिश है। उनको गद्दी से उतारन की बात नही थी बल्कि बात तो इतनी ही थी कि जो गद्दी पर बठे हैं वो जनता की बात सुनें। नौजवान लाग गाते थे—'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है'—इसका मानी यह नही था कि जनता कुर्सियो पर कब्जा करना चाहती है। सिफ यही मानी था कि शासन को जनता का सम्मान करना चाहिए दूसरा मानी था कि भारत की जनता जाग्रत है सगठित है। (तालियो की करतल ध्वनि)।

" जनता और शासन की पाटनरशिप है। आगे जो काम करने हैं व जन शक्ति एव राज शक्ति दोनो को मिलकर करने हैं। इस जनशक्ति मे युवा शक्ति भी है जिस सही रास्ते ले चलना है। मैं आशा करता हू कि नये प्रधान मत्री इसे ध्यान मे रखेंगे।'

मोरार जी भाई की तरफ मुडकर जयप्रकाश जी ने जसे ही यह वाक्य कहा, उन्होने जवाब दिया कृपया आप निश्चित रह। हम ऐसा ही करेंग।' तालियो स सेंट्रल हाल गूज उठा और भावावेश से रुधे स्वर मे जयप्रकाश जी ने आगे कहा

" मैं इस आश्वासन की यहा उम्मीद नही करता था। मैंने मोरार जी भाई से इस बारे म बाद म बात करने की सोची थी इस सम्मानीय सभा के समक्ष उनके इस आश्वासन के बाद मुझे और बहुत कहना नही है।

" मैं आपसे कुछ वप छोटा ही हू और अब ज्यादा दिन जीने वाला भी नही हू। आपसे पहले ही जाऊगा। लेकिन मुझे खुशी है कि मैं इतना बडा आश्वासन पाकर जा रहा हू।

(आसू बह निकले और उपस्थित समुदाय मे भी अनेक आखो से आसू बहने लगे।)

" भारत का भविष्य उज्ज्वल है और उसके लिए हम सबको कधे से कधा मिलाकर काम करना है।"

□□□

मुद्रक मॉडर्न प्रिन्टर्स दिल्ली ११००१२